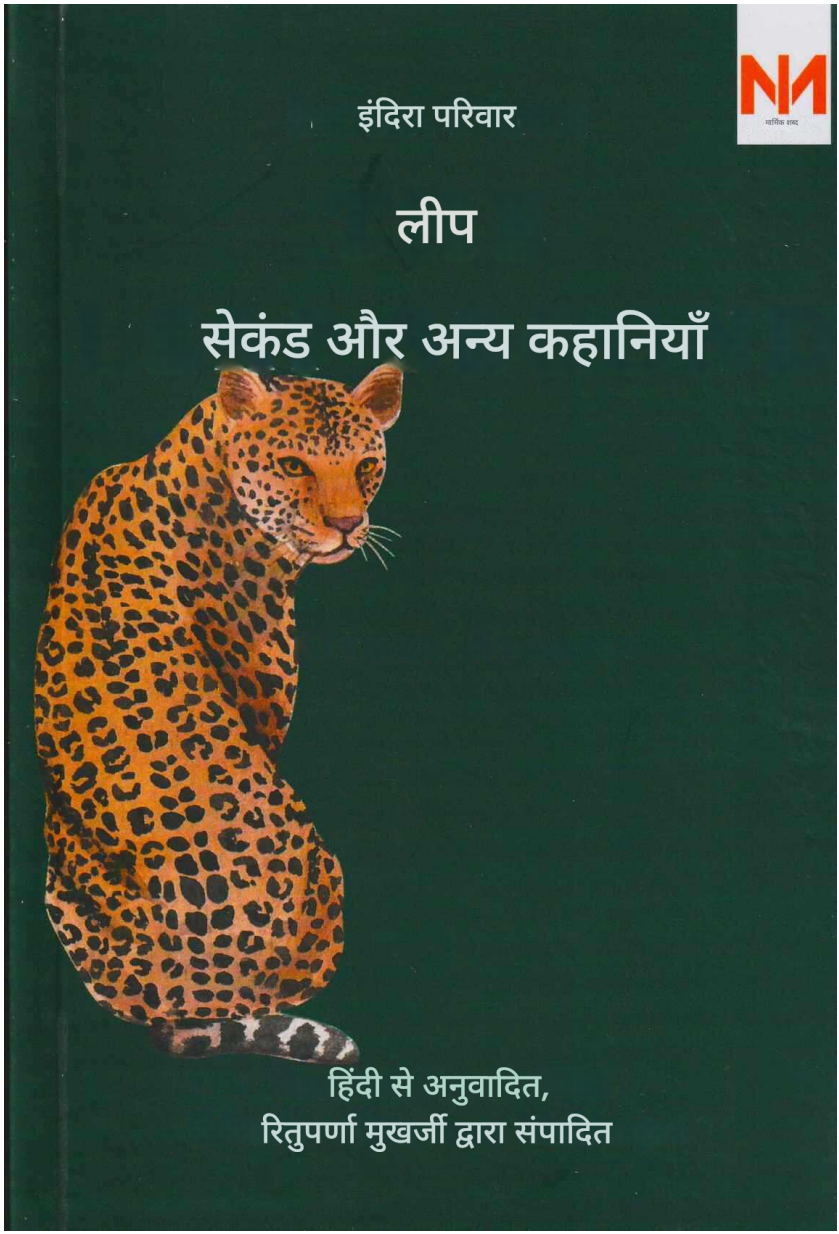

विषयसूची

1. एक छोटी तितली आती है
2. पुल
3. बोतलबंद पानी
4. बकरी
5. गुड़ के नगेट्स
6. लीप सेकंड
7. पापा जल रहे हैं
8. दाहिनी आँख
9. नायक
10. नई कॉलोनी

iii. जीवनी

ii. कॉपीराइट

एक छोटी तितली आती है

गर्मी की एक सुहावनी शाम में, हलचल भरे महानगर का बाज़ार जीवंत ऊर्जा से गुलजार था। हवा में तरह-तरह के मसालों की खुशबू, उत्सुक खरीदारों की बातचीत और सड़क किनारे संगीतकारों की मधुर धुनें गूंज रही थीं। भीड़ के बीच, एक पति-पत्नी किसी खास उपहार के लिए उचित कीमत वाली साड़ी की तलाश में निकले। उन्होंने अपना स्कूटर पार्क किया और रंग-बिरंगे कपड़ों से सजी एक आकर्षक दुकान में प्रवेश किया।

जैसे ही वे भव्य शोरूम में आगे बढ़े, उनके चेहरों पर थोड़ी अनिश्चितता झलक उठी। उन्हें लगा कि कहीं वे गलत जगह तो

नहीं आ गए। लेकिन इससे पहले कि वे मुड़ पाते, दुकान के चौकस कर्मचारियों ने उनकी उपस्थिति को भांप लिया और गर्मजोशी से उनका स्वागत किया, "स्वागत है! स्वागत है! आज हम आपको क्या दिखा सकते हैं?" दंपति इस निमंत्रण को अस्वीकार नहीं कर सके, क्योंकि वे ध्यान आकर्षित करने के लिए आभारी और दोषी दोनों महसूस कर रहे थे।

वे आलीशान सोफे जैसे दिखने वाले गद्दीदार स्टूलों पर बैठ गए। युवा पति ने अपनी घिसी-पिटी ऑफिस शर्ट, फीकी पैंट, रेक्सिन बेल्ट और चमड़े की चप्पलों पर एक नज़र डाली। लेकिन उसके पहनावे से भी कहीं ज़्यादा फीका उसकी युवा पत्नी का चेहरा था, जो केवल पच्चीस रुपये के कंगन, एक महंगे दिखने वाली साड़ी जो किसी कट-पीस साड़ी की दुकान से खरीदी गई थी, कार्यस्थल से उपहार में मिली चप्पलें और सोने के बारीक दानों से जड़ा एक नाज़ुक मंगलसूत्र से सजी हुई थी...! उसने बड़ी कुशलता से अपनी साड़ी को एक कंधे से दूसरे कंधे पर डाला और अपने नाज़ुक कंगन और मंगलसूत्र को छुपा लिया जो पहले दिखाई दे रहे थे। हालांकि, उसका पति उस समय उसके द्वारा सजी हर वस्तु के मूल्य के प्रति सचेत हुए बिना नहीं रह सका। एक जानी-पहचानी झुंझलाहट उस पर छा गई, मानो वह किसी व्यस्त चौराहे पर तेज़ रोशनी वाली स्पॉटलाइट के नीचे खड़ा हो।

मैंने तुम्हें कितनी बार याद दिलाया है कि बाहर निकलते समय ठीक से कपड़े पहनो? लगता है कंजूसी तुम्हारे खून में है! कब

तक तुम इतनी कंजूस रहोगी? तुमने वो कंगन क्यों पहने हैं? क्या तुमने वो पाँच सौ रुपये के कंगन सिर्फ अलमारी में रखने के लिए खरीदे थे?

“ये तो शादी और पारिवारिक समारोह जैसे खास मौकों पर पहनने के लिए होते हैं। अगर मैं इन्हें सिर्फ ऐसे ही खास मौकों के लिए बचाकर रखूँगी, तो मुझे नए कौन खरीद कर देगा?” पत्नी पलटकर जवाब देना चाहती थी, लेकिन दुकानदार के पास खड़े होने के कारण वह चुप रही।

“मैं आपको क्या दिखा सकता हूँ, महोदया?” दुकानदार ने पूछा। उस आदमी ने जवाब दिया, "ये साड़ियां उपहार में देने लायक हैं!"

दुकानदार ने एक सहायक को ऊँची शेल्फ से एक बंडल लाने का निर्देश दिया, और पति-पत्नी बेहद महंगी साड़ियों से भरी दुकान को देखने में जुट गए। कांच के शोकेस के सामने, उन्होंने बारीक नक्काशी से सजे लहंगे और खुली साइड वाली साड़ियाँ देखीं, जो एक मोहक आकर्षण बिखेर रही थीं। दोनों ने इन वस्त्रों को अनासक्त भाव से देखा, मानो वे किसी अपरिचित धर्म का सामना कर रहे हों।

“देखिए महोदया। ये है नया फैशन,” दुकानदार ने टिमटिमाती दूधिया रोशनी में पहली साड़ी फैलाते हुए कहा। आसमानी नीले रंग की साड़ी में जड़े हुए चमकदार रत्न मानो सुबह के साफ आसमान में जगमगाते अनगिनत तारों की तरह लग रहे थे।

हालांकि, पति-पत्नी के चेहरे भावहीन थे। दुकानदार ने दूसरी साड़ी भी दिखाई।

“इस खूबसूरत साड़ी को देखिए! यह खास हमारे लिए सूरत से लाई गई है। पूरे बाजार में आपको ऐसी साड़ी कहीं नहीं मिलेगी। हरे रंग की साड़ी पर सुनहरे मोतियों की बारीक कढ़ाई की गई है, मानो कोमल रेत में खिले हुए चमकीले फूल हों।” यह सुनकर पति के सीने में एक अजीब सी सिहरन दौड़ गई, जिससे वह अचानक सीधा हुआ और फिर गिर पड़ा। कीमत जाने बिना ही पति बोला, “हमें कुछ और वाजिब दाम वाली साड़ियाँ दिखाइए।”

“हमारे दाम बाज़ार में सबसे वाजिब हैं, महोदय! आप कहीं भी खोज लें, आपको यह साड़ी चार-पाँच हज़ार से कम में नहीं मिलेगी, लेकिन हम इसे केवल अड़तीस सौ में दे रहे हैं,” दुकानदार ने जवाब दिया।

“नहीं, हमें इससे भी सस्ती चीज़ चाहिए,” पति ने जवाब दिया। कीमत सुनकर उसने साड़ी के किनारे से अपनी उंगलियाँ झट से हटा लीं, मानो उसे डर हो कि कहीं उसके छूने से सुनहरे फूल और सुबह के तारे खराब न हो जाएँ और बहुत बड़ा नुकसान हो जाए। इसी बीच दुकानदार नीचे की शेल्फ से साड़ियों का एक और बंडल ले आया और पत्नी अपनी सीट से उठकर प्रदर्शित साड़ियों के सामने खड़ी हो गई।

उसकी निगाहें हर जटिल साड़ी और लहंगे की सुंदरता को

निहारती रहीं, मानो वह क्षण भर के लिए उनके जादू को कैद करना चाहती हो। बचपन से ही वह इन साड़ियों के आकर्षण से मोहित थी—सुनहरा, लाल, नीला, पीला, गहरा लाल, काला, हर रंग हीरे, मोती, जगमगाते सितारों और रेशमी धागों की बारीक कारीगरी के साथ नाचता और गुंथा हुआ साड़ियां बना रहा था, मानो दिल को छू लेने वाला आकर्षण बिखेर रहा हो। एक पल के लिए उसके चेहरे पर एक उदास मुस्कान आई और फिर गायब हो गई, जैसे ही वह मुड़ने वाली थी। लेकिन उसकी निगाहें डिस्प्ले केस में चमकती आखिरी शानदार साड़ी पर आकर ठहर गईं।

इसी बीच दुकानदार ने उस आदमी के सामने एक और बंडल खोला। “यह बिल्कुल नया कुमकुम प्रिंट है, साहब... क्या आपने वह मशहूर टीवी सीरियल देखा है? उसमें हीरोइन ने यही साड़ी पहनी है, और इसकी कीमत सिर्फ बारह सौ रुपये है।”

“और इस अनोखे पीस को देखिए—मनमोहक मोर के रंग का डिज़ाइन जो आपको कहीं और नहीं मिलेगा, महोदय! इसकी कीमत मात्र अठारह सौ है,” दुकानदार ने एक और आकर्षक विकल्प पेश करते हुए कहा।

“महोदय, इस शिफॉन के कपड़े का कोई मुकाबला नहीं!” दुकानदार ने हैरानी से कहा।

इसी बीच, पति ने जोर देकर कहा, "हमें कम कीमत वाली कोई चीज दिखाओ।"

दूसरी ओर, पत्नी शोरूम में रखी आखिरी पोशाक की खूबसूरती में खोई रही। गुलाबी हरे और गहरे लाल रंग के सुंदर मेल से सजे कपड़े पर बिखरे नाजुक चांदी के सितारे किसी दिव्य कढ़ाई की तरह लग रहे थे। बॉर्डर पर ज़री का काम विष्णु के मायाजाल जैसा मोहक था। महिला पोशाक की सुंदरता में पूरी तरह डूब गई और अपने भावों को रोक नहीं पाई।

“वाह, कितनी खूबसूरत साड़ी है!” उसने कहा।

दुकानदार ने ग्राहक के बजट का पहले ही अंदाजा लगा लिया था और उसने महिला की ओर देखे बिना ही जवाब दिया, "यह साड़ी नहीं है, महोदया। यह लहंगा है।"

“एक लहंगा? कितना आसान! इसकी कीमत कितनी है?” उसने पूछा।

“इसकी कीमत दो हजार है, महोदया,” दुकानदार ने जवाब दिया।

“इस लहंगे की कीमत सिर्फ दो हजार!” खुशी से झूम उठी महिला अपनी खुशी को रोक नहीं पाई। उसकी आंखों, चेहरे और मुस्कान से प्रसन्नता झलक रही थी। दुकानदार ने मौके का फायदा उठाते हुए खरीदारी कर ली।

“कृपया बैठिए, महोदया। हम अभी आपके लिए वैसा ही एक टुकड़ा लाते हैं। बंटी, दाईं ओर रखा पहला बंडल महोदया को दिखाओ,” दुकानदार ने अपने सहायक को निर्देश दिया।

“पहले तो वह साड़ी देख लेते हैं जिसकी वजह से हम यहां आए

हैं!” पति की आवाज में जल्दबाजी और डांट दोनों का भाव था।
"तुम जाकर इसकी जांच कर लो," पत्नी ने जवाब दिया, मानो उसका रूप बदल गया हो।
अब सहायक ने पत्नी को अलंकृत लहंगा दिखाना शुरू किया, जबकि दुकानदार ने पति को साड़ी प्रदर्शित की।
“इसका लुक सरल और सुरुचिपूर्ण दक्षिण भारतीय है, और इसकी कीमत मात्र सात सौ रुपये है,” दुकानदार ने बताया।
उन्होंने आगे कहा, "और यह छपी हुई चुनरिया मात्र छह सौ पचास रुपये में उपलब्ध है।"
“नहीं, हम इससे भी कम कीमत वाली कोई चीज़ ढूंढ रहे हैं... मैंने पहले भी बताया था कि मैं इसे उपहार में देना चाहता हूँ। अगर यह मेरे निजी इस्तेमाल के लिए होता, तो मुझे थोड़ा ज़्यादा खर्च करने में कोई आपत्ति नहीं होती,” पति ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा।
"आप साड़ियों में किस मूल्य सीमा की तलाश कर रहे हैं?" दुकानदार थोड़ी देर रुका, उसका हाथ अभी भी साड़ियों को प्रदर्शित करने की प्रक्रिया में था।
"लगभग तीन या चार सौ?" पति ने हिचकिचाहट में और भी डूबते हुए जवाब दिया।
“हमारे पास बाहर ही रोजमर्रा की पहनने वाली साड़ियों का संग्रह है। आप खुद देख सकते हैं,” दुकानदार ने सुबह के मनमोहक तारों से लेकर दक्षिण के तेजस्वी प्रकाश तक, सब

कुछ भुलाते हुए सुझाव दिया।
जैसे ही दूसरी ग्राहक आई, दुकानदार ने फिर से मनमोहक सपने जैसी खूबसूरत साड़ियाँ दिखाना शुरू कर दिया। “देखिए महोदया, ये तो बिल्कुल नया फैशन है! पूरे बाज़ार में आपको ऐसी साड़ी कहीं नहीं मिलेगी। ये जानबूझकर अनोखी बनाई गई है, इसीलिए सूरत से हमारे पास इसकी सिर्फ़ एक ही प्रति है!”
उसी क्षण, पति ने अपनी पत्नी को धीरे से छुआ, जो मंत्रमुग्ध भाव से लहंगे का बारीकी से निरीक्षण कर रही थी। "राशि, चलो बाहर इन साड़ियों को देखते हैं," उसने फुसफुसाते हुए दुकान के बाहर करीने से बंडलों में रखी सादी और मुलायम साड़ियों की ओर इशारा किया।
“नहीं, पहले इस पर ध्यान देते हैं! कितना खूबसूरत लहंगा है, और वो भी सिर्फ दो हज़ार में! मेरी दोस्त मीनू ने अपनी शादी में बिल्कुल यही लहंगा पहना था, और उसने मुझे बताया था कि उसकी कीमत दस हज़ार थी। उस समय तो वो डिज़ाइनर लहंगा हुआ करता था, लेकिन ढाई साल बाद तो वो बिल्कुल आम हो गया है! सोचो, ये सिर्फ दो हज़ार में मिल रहा है! चलो इसे ले लेते हैं!” पत्नी ने बहुत ही धीमी आवाज़ में कहा, लेकिन उसकी खुशी छलक रही थी।
“हम इसे बाद में खरीद लेंगे! अभी, चलो उपहार के लिए साड़ी चुनते हैं, जिसके लिए हम यहां आए हैं,” पति ने बीच में टोकते हुए कहा।

“लेकिन मेरे पास तो दो हजार रुपये हैं!” पत्नी ने जोर देकर कहा।

“राशि, प्लीज़,” पति ने दुकानदार और सहायकों के सामने यथासंभव शांत दिखने की कोशिश करते हुए विनती की। हालाँकि, पत्नी ने उसकी आवाज़ के पीछे छिपे असली अर्थ को भांप लिया और एक पल के लिए अपने पति के चेहरे पर नज़र डाली। उस क्षण, उसने अपने पति के चेहरे पर उनके पूरे वैवाहिक जीवन की झलक देखी:

शादी से पहले के युवा भोलेपन, सपनों और सुंदरता के दिन।

उनकी शादी के सपनों की प्रतीक्षा और साकार होना।

नए घर बसाने की चुनौतियों का बोझ उन पर बहुत भारी था।

पत्नी को अचानक होश आया: उसके पति की मामूली आमदनी, उनका किराए का फ्लैट, घर खरीदने का उनका सपना और कुछ समय के लिए बच्चे पैदा करने को टालने का कठिन निर्णय। हर एक पैसा मायने रखता था, क्योंकि वे अपनी थोड़ी-सी बचत पर निर्भर थे।

अगले ही पल, पत्नी के चेहरे से पहले वाली खुशी गायब हो गई, मानो कोई तितली फड़फड़ाकर उड़ गई हो, जबकि दुकानदार ने पूछा, "क्या मैं इसे पैक कर दूं?"

“नहीं, रुकिए! क्या इसके लिए और भी रंग उपलब्ध हैं?” लहंगे के प्रति अपनी सच्ची पसंद ज़ाहिर करने वाली उस युवती के लिए अब मना करना मुश्किल हो गया था।

नौकरानी दूसरे रंग का लहंगा लाने के लिए उठी, जबकि पति-पत्नी चुपचाप बाईं ओर प्रदर्शित सस्ती साड़ियों को देखने और छूने लगे।

"यह ठीक लग रही है," दोनों ने एक साथ कहा और एक गुलाबी साड़ी की ओर इशारा किया।

इसी बीच, सहायिका ने लहंगे का दूसरा रंग खोलते हुए कहा, "देखो बहन, ये पीला-लाल रंग का मेल कितना खूबसूरत लगेगा। ये तुम पर बहुत जंचेगा।"

सहायक खड़ा हुआ और उसने लहंगा अपने ऊपर ओढ़ लिया। महिला की आँखों में क्षण भर के लिए चमक आई और फिर वह फीकी पड़ गई।

“छोड़ो इसे। इसके बजाय यह साड़ी पैक कर लो,” उसने फैसला किया।

“अरे! आपको तो लहंगा इतना पसंद आया! इसे ले जाइए, हम आपको छूट देंगे,” दुकानदार ने जोर देकर कहा।

“नहीं, हम इस पर बाद में विचार करेंगे। फिलहाल, बस यही साड़ी...!” पत्नी ने दृढ़ता से कहा।

साड़ी के पैसे चुकाने के बाद, दंपति दुकान से निकल गए। युवती के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी, मानो किसी अंधेरी शाम का साया हो। पति ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा।

“तुम्हें वो लहंगा सच में पसंद आया?” उसने पूछा।

लेकिन ऐसा लगा जैसे पत्नी ने उसकी बात नहीं सुनी। जैसे ही

वे सड़क पार करके एक चाट के ठेले की ओर बढ़े, उसके चेहरे पर खुशी की एक नई छटा छा गई, मानो कोई छोटी सी प्रसन्न तितली हो।

उन्होंने कहा, "मुझे याद नहीं आ रहा कि हमने आखिरी बार चाट कब खाई थी।"

अनुराधा दोसाद द्वारा अनुवादित

पुल

यह पुल दो दुनियाओं को जोड़ता हुआ प्रतीत होता है...

स्कूल से निकलते ही अंधेरा छा गया; निरीक्षण था और सभी ज़रूरी कागज़ात तुरंत भेजने थे। मुझे सप्ताहांत में प्रधानाचार्य की ज़िम्मेदारी लेना पसंद नहीं है, क्योंकि जब भी ऐसा होता है, काम का बोझ बहुत बढ़ जाता है। मैं आमतौर पर शनिवार को शहर के लिए निकल जाता हूँ, और तब तक मेरा मन यहाँ के कामों से ऊब चुका होता है। मुझे घंटों गाड़ी चलानी पड़ेगी। मैं कीचड़ भरी, टूटी-फूटी सड़क पर धीरे-धीरे गाड़ी चलाते हुए अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रहा हूँ। मैंने भील समुदाय का गाँव पीछे छोड़ दिया है; यहाँ मुश्किल से एक-दो लोग और पालतू जानवर या मवेशी दिखाई दे रहे हैं; मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता है। मुझे पहले ही निकल जाना चाहिए था। मैं इस सड़क पर गाड़ी इससे तेज़ नहीं चला सकता। सड़कें तो पक्की हैं, लेकिन उनकी हालत इतनी खराब है कि कोई भी सोच सकता है कि ठेकेदारों के प्रांत में बहुत सारे समर्थक हैं। राजधानी इस

दूरदराज के प्रांत को बहुत सारा पैसा आवंटित करती है, लेकिन पैसा कई बिचौलियों के हाथों में घूमता है, जिससे वे अमीर हो जाते हैं, जबकि आदिवासी अपनी जगह पर ही रहते हैं।

इस साल जब मुझे सरकारी स्कूल में शिक्षक की नौकरी मिल गई तो मेरा परिवार बहुत खुश हुआ। मेरे रिश्तेदार कहने लगे कि पिछले जन्म में मैंने ज़रूर कोई असाधारण काम किया होगा, तभी तो मुझे इस जन्म में सरकारी नौकरी मिली है। मेरी पहली पोस्टिंग शहर से बहुत दूर, आदिवासियों के बीच हुई, लेकिन मेरे रिश्तेदारों ने मुझे हिम्मत रखने को कहा—कुछ दिन वहाँ के माहौल में ढलने के बाद तबादले के लिए आवेदन करने को कहा। मैं स्कूल के एक कमरे में रहता हूँ। मैंने एक पुरानी कार खरीदी है जिससे मैं हर सप्ताहांत पहाड़ियों, नदियों, जंगलों और घाटियों को पार करके शहर में अपने घर जाता हूँ।

मैं धीरे-धीरे पहाड़ी से नीचे उतर रहा हूँ। नदी पर बने पुल तक पहुँचते ही सड़क बेहतर हो जाएगी। और एक बार जंगल और घाटी पार करके राष्ट्रीय राजमार्ग पर पहुँच जाऊँ, तो चिंता की कोई बात नहीं। लेकिन इस पहाड़ी पर मेरा दिल हमेशा तेज़ धड़कता है। मुझे एहसास होता है कि यह कार सेकंड-हैंड है; अगर मैं इसे तेज़ चलाऊँगा तो यह खराब हो सकती है। मुझे गाड़ी चलाना भी ठीक से नहीं आता। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि एक ड्राइवर रख लूँ और रोज़ाना इतनी दूरी तय करूँ। कम से कम रात में, मैं अपनी गर्भवती पत्नी और अपने अजन्मे बच्चे के

साथ अपने घर के आराम में रह पाऊँगा। लेकिन इस पूरे मामले का भारी खर्च मुझे रोक देता है। मेरी पत्नी अब हमारे संयुक्त परिवार से अलग होना चाहती है। वह यहाँ एक फ्लैट खरीदने के लिए एक-एक पैसा बचा रही है और मैं... मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध, खराब ड्राइवर होने के बावजूद, अपनी सेकंड-हैंड कार चला रहा हूँ।

अब मुझे पुल और उसके बगल में खड़ा विशाल बरगद का पेड़ दिखाई दे रहा है। पिछले सोमवार को स्कूल लौटते समय मैंने उसकी एक लंबी जड़ में धागा बांधा था। जब से मेरी पत्नी को इस बरगद के पेड़ के बारे में पता चला है, तब से वह चाहती है कि मैं उसकी एक जड़ में धागा बांधकर अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करूँ। मैं उसकी इच्छा को मना नहीं कर सका, लेकिन मैं व्यक्तिगत रूप से इन सब बातों में विश्वास नहीं करता। यह सब व्यर्थ का अंधविश्वास है! आजकल मैं चुपचाप उसकी हर बात सुनता हूँ और कभी-कभी मान भी लेता हूँ। खासकर इसलिए क्योंकि वह लंबे समय से ऐसा कह रही है और उस दिन एक भयानक दुर्घटना से बाल-बाल बचने के बाद, मैंने न केवल धागा बांधा बल्कि पुल के किनारे बैठकर एक आवेदन भी लिखा। आदरणीय शिक्षा मंत्री जी, कृपया मेरा तबादला मेरे गृह नगर में कर दें या फिर इतनी दूर कर दें कि मैं सप्ताहांत में घर न जा सकूँ। मेरी पत्नी मेरे वर्तमान पद पर मेरे साथ नहीं रहना चाहती और मेरे बच्चे की वजह से वह चार-छह दिन से

ज्यादा दूर नहीं रह सकती। आवेदन लिखते समय मैं भावुक हो गया था। मैं अपनी पत्नी और अपने अजन्मे बच्चे से बहुत प्यार करता हूँ, और वह ज़्यादा कुछ नहीं माँगती! बस इतना कि मेरा तबादला मेरे गृह नगर में हो जाए और मैं अपने परिवार के साथ खुशी से रह सकूँ। जब मैं अंशकालिक शिक्षक के रूप में काम करता था, तब उसने संयुक्त परिवार में कई असुविधाजनक और अपमानजनक दिन बिताए थे। अब मेरा कर्तव्य है कि... मैंने आवेदन पत्र को मसलकर पुल से नदी में फेंक दिया। कागज़ फेंकते समय, मैंने नदी पर एक पल के लिए नज़र डाली और तुरंत मोहित हो गया। यह एक मनमोहक नदी थी—पत्थरों से भरी, जंगली नदी मधुर ध्वनि के साथ बह रही थी, उसका पानी पारदर्शी और चमकीला था। मैंने सोचा कि अमृत कैसा दिखता होगा—शायद ऐसा ही दिखता होगा। मुझे नहीं पता कि मैं उस सुंदरता को कितनी देर तक निहारता रहता, तभी मुझे किसी की आवाज़ सुनाई दी।

“बाबूजी, क्या आप अपनी जिंदगी से हार मानने की योजना बना रहे हैं?”

जब मैंने मुड़कर देखा, तो मुझे एक चरवाहा अपनी भेड़ों के झुंड के साथ दिखाई दिया।

मैं बस बहते पानी को देख रहा हूँ; अपनी जान लेने की कोई योजना नहीं बना रहा हूँ।

“भले ही आप ऐसा करने की योजना न बना रहे हों, फिर भी यह

आपको प्रभावित करेगा, जैसा कि कई लोगों के साथ हो चुका है। मैं आपको सलाह दूंगा कि आप तुरंत वहां से चले जाएं।"
वह वहां ऐसे खड़ा था मानो वह मेरी जान का रक्षक हो।
जल जीवन प्रदान करता है।
मैं पानी की बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि उस जगह की बात कर रहा हूँ जहाँ आप खड़े हैं।
"जगह!" मैं हँस पड़ी; फिर अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर नज़र डाली। मैं जल्दी से चलने लगी। मैं चाहती थी कि कम से कम दूसरे हाफ के शुरू होने से पहले स्कूल पहुँच जाऊँ। मैं इस हफ्ते की प्रभारी शिक्षिका थी। मैं अपनी कार की ओर बढ़ी। तभी पीछे से किसी ने कहा,
"मैं हर साल मुर्गियों की और हर तीसरे साल बकरियों की बलि देता हूँ। नहीं तो मेरी कोई भी भेड़ इस जगह से ज़िंदा नहीं निकल पाएगी।"
मुझे नहीं पता कि वह और क्या कह सकता था, मैं वहां से चला गया। अब मुझे लगता है कि उस जगह के बारे में उसकी बातें काफी दिलचस्प थीं।
और वह जगह मेरे ठीक सामने थी। घने अंधेरे में बहती कलकल ध्वनि जीवनदायी जल की उपस्थिति का संकेत दे रही थी। अगर चांदनी रात होती, तो मैं रुककर नदी की सुंदरता को निहारता। लेकिन रात इतनी अंधेरी थी कि अपने हाथ भी मुश्किल से दिखाई दे रहे थे। मुझे ठीक से याद नहीं कि मेरी पत्नी फोन के

बारे में क्या कह रही थी... क्या वह बंद हो गया है? वह काफी देर से मेरा इंतजार कर रही होगी; मैं सावधानी से अपनी कार आगे बढ़ाता हूँ।

पुल के पास बरगद के पेड़ के बगल में कोई खड़ा है। कौन है? ज़रूर कोई होगा। मुझे गाड़ी रोकना ठीक नहीं लग रहा। मैं आगे बढ़ गई हूँ, लेकिन क्या वह व्यक्ति की परछाई है जो मेरे साथ चल रही है या कोई और है? हो सकता है कोई ज़रूरतमंद हो, हो सकता है कोई लुटेरा हो। लेकिन मेरे पास ऐसा क्या है जो किसी चोर को आकर्षित करे? मेरी पुरानी गाड़ी, मेरी शादी में मिली घड़ी, मेरा मोबाइल जो बार-बार बंद हो जाता है, या मेरे बटुए में रखे दो हज़ार रुपये जो इतनी तेज़ी से गायब हो जाते हैं कि मैं गिन भी नहीं पाती। या वह मेरी जान के पीछे पड़ा है? मैंने सुना है कि शहर के कई लोग इस जगह पर लूटपाट का शिकार हुए हैं। मैं गाड़ी आगे बढ़ाती हूँ और फिर अचानक रोक देती हूँ। आख़िरकार, मेरे अंदर एक शिक्षक है। एक बार शिक्षक, हमेशा शिक्षक। पेशेवरों के लिए यह समझना अक्सर मुश्किल होता है कि कब पेशा ही जीवन पर हावी हो जाता है। मैं बगल वाली सीट पर रखी चीज़ों को गाड़ी के पीछे रख देती हूँ। आज सुबह स्कूल में अचानक हुई जाँच के दौरान, क्लर्क ने जल्दबाज़ी में अधूरी फाइलें मेरी गाड़ी में रख दी थीं। उपस्थिति रजिस्टर और कुछ अन्य दस्तावेज़ भी फाइलों के साथ रखे गए थे। अगर मैं रजिस्टर घर पर भूल जाऊं तो पूरा अगला हफ्ता खराब हो

जाएगा। यह बेवजह की परेशानी है।

मैंने बगल वाली खाली सीट का दरवाजा खोला और उस अनजान व्यक्ति को अंदर आने दिया। जैसे ही वह सीट पर बैठा, मैंने गाड़ी आगे बढ़ा दी। मैंने सामने वाले व्यक्ति के प्रति बेपरवाही का भाव दिखाया, मानो अंधेरे में अजनबियों को लिफ्ट देना मेरे लिए कोई आम बात हो।

"अगर आप मुझे अगली घाटी तक छोड़ दें तो यह मेरी बहुत बड़ी मेहरबानी होगी।"

वह आदमी बोल रहा था और मैंने उसकी आवाज़ से उसे समझने की कोशिश की। वह मेहनती आदमी लग रहा था, एक आदिवासी जो शहर के तौर-तरीकों से वाकिफ था।

"इतने अंधेरे में तुम वहां क्या कर रहे थे?"

मैंने यह सवाल महज़ एक सामान्य बातचीत शुरू करने के लिए पूछा था। इस जंगल के बीच किसी का साथ पाकर मुझे अच्छा लग रहा था। उसने मेरे सवाल का जवाब खुद एक सवाल से दिया, मानो वह मुझे अच्छी तरह जानता हो।

“आज आप देर से आए हैं, गुरुजी?”

“हां, आज... क्या आप मुझे जानते हैं?” —यह कहते हुए मुझे अपने प्रश्न की निरर्थकता पर आश्चर्य होता है; बेशक, इतने छोटे से स्थान में हर कोई स्कूल शिक्षकों को जानता है।

“जुगनू, जिस बच्चे को तुमने कुछ दिन पहले अस्पताल में भर्ती कराने में मदद की थी, मैं उसका पिता हूँ।”

“अच्छा, ठीक है।” उनकी कृतज्ञता स्वीकार करते हुए, मैं उस दिन की घटनाओं के बारे में सोचने लगा। अपनी रोज़ाना की शाम की सैर के दौरान, मैंने देखा कि कुछ आदिवासी एक छोटे लड़के की गर्दन को कीचड़ और गोबर में दबा रहे थे। वह मेरा छात्र था। पास जाकर मुझे पता चला कि लड़के को बिजली का झटका लगा था और भोले-भाले, अनपढ़ स्थानीय लोग उसका सिर ज़मीन पर रखकर उसे स्थिर रखने की कोशिश कर रहे थे, ताकि इलाज के लिए कोई वैद्य आ जाए।

“इस तरह से उसकी मौत हो जाएगी। उसे तुरंत कीचड़ से बाहर निकालो। मैं अपनी गाड़ी ला रहा हूँ। जल्दी करो।”

मैंने उस समूह को ऐसे डांटा जैसे वे सब मेरे छात्र हों। उन्होंने जल्दी से बच्चे को मेरी कार की पिछली सीट पर बिठा दिया और एक बूढ़ी आदिवासी महिला उसके बगल में बैठ गई।

क्या उसके साथ कोई और नहीं है?

“Just his grandmother, sir—Bansakhiya Bau.”

"ठीक है।"

मैं दादी और उनके पोते को अस्पताल ले गया, जहाँ सौभाग्य से बच्चे के लिए एक नर्स मौजूद थी; वरना इन सरकारी इमारतों में अधिकारी कार से पहिए की तरह गायब हो जाते हैं। लौटने से पहले मैंने बूढ़ी दादी, बंसखिया को दो सौ रुपये दिए। स्कूल पहुँचकर मैंने चौकीदार से अपनी कार धोने को कहा जो कीचड़ और गोबर से भरी हुई थी। उन्हें लगा कि यह मामला इतना

महत्वपूर्ण नहीं है कि वे दूसरों को सूचित करें। मैं सोचता रहा कि इस जगह और यहाँ के लोगों को शिक्षकों की कितनी सख्त ज़रूरत है। और मैं इस मामले को भूल गया था, लेकिन आज, जब लड़के के पिता मेरे ठीक बगल में बैठे हैं, तो मैं पूछता हूँ,
“उस समय आप कहाँ थे?”
"मैं वहां था।"
मैंने मन ही मन सोचा कि शायद वह किसी मदद के लिए गया होगा और जब तक मैंने दादी और उनके पोते की मदद के लिए हाथ बढ़ाया, तब तक उसने बिना किसी झिझक के मुझसे संपर्क किया। जो भी हो, मैंने पूछा,
“बच्चा अब कैसा है?”
“तुमने उसे बचा लिया।” वह हाथ जोड़कर कहता है।
मैं चुपचाप गाड़ी चलाता रहता हूँ। हमेशा की तरह तनाव में हूँ। घर पहुँचते ही मेरी पत्नी मेरे तबादले का वही मुद्दा उठा देगी।
“आपका तबादला हो जाएगा, मास्टरजी।” मेरे बगल में बैठे व्यक्ति ने कहा।
"क्या गांव में किसी ने मुझे बताया है कि मैं तबादले के लिए कोशिश कर रहा हूं?"
मुझे खुद पर गुस्सा भी आ रहा है और मन भी दुखी है। मैं अक्सर स्कूल के बाद आग के पास बैठे बूढ़े चौकीदार से कहानियां सुनता हूँ और अपने बारे में भी बातें करता हूँ। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि वह बूढ़ा चौकीदार कितना चुगलखोर

हो सकता है।
"यहां आने वाला हर कोई तबादला चाहता है।"
"हाँ।"
आपका तबादला भी हो जाएगा।
"हां, ऐसा कभी न कभी जरूर होगा।"
मुझे पूरा विश्वास है कि आज घर पहुंचते ही आपको वह पत्र आपकी मेज पर मिल जाएगा।
मुझे उसकी बातों पर हंसी आ गई; यह साधारण आदिवासी मुझे सिर्फ इसलिए इतनी शुभकामनाएं दे रहा है क्योंकि मैंने उसके बच्चे की मदद की थी।
"अगर ऐसा ही हुआ जैसा आप कह रहे हैं, तो मैं अपनी तनख्वाह का तीन गुना दूंगा..."
ये शब्द मेरे मुँह से निकलते ही मैं रुक गया; एक शिक्षक इस तरह कैसे बोल सकता है! केवल भगवान ही समझ सकते हैं कि किन परिस्थितियों में मैंने अपने बहनोई के दोस्त, जो एक बिचौलिए थे, को रिश्वत दी थी।
"लेकिन मास्टरजी..." वह मुझसे कहता है।
“अगर सभी गुरुजी तबादले के कारण इस स्थान को छोड़कर चले जाएं, तो हमारे बच्चों को कौन पढ़ाएगा?”
मैं इस सवाल का जवाब कैसे दूँ; ऐसा लगता है जैसे किसी ने मेरी अंतरात्मा की आवाज़ में बोल दिया हो। मैं लगातार गाड़ी चलाता रहता हूँ, मेरी नज़रें जंगल की सड़कों पर टिकी रहती हैं।

जुगनुओं की रोशनी अंधेरे के छोटे-छोटे टुकड़ों में फैलती है; मुझे पास में जानवरों की आवाज़ें सुनाई देती हैं। हवा में जड़ों और जड़ी-बूटियों की मदहोश कर देने वाली खुशबू फैली है जो मुर्दों को भी ज़िंदा कर सकती है। मेरी जटिल ज़िंदगी मुझे इस प्राचीन सुंदरता का अनुभव करने के लिए कितनी दूर तक बाहर जाने देती है! फिर भी, आख़िरकार मैं भी इस सब का एक हिस्सा हूँ।

"बाहर देखो।"

ऐसा प्रतीत होता है कि कार के सामने कोई मृत वस्तु पड़ी है।

नहीं, गाड़ी मत रोको।

वह इतनी ठंडी आवाज में यह बात कहता है कि मैं गाड़ी रोकने ही वाली होती हूँ, फिर भी नहीं रोकती; मैं अचानक घबरा जाती हूँ।

“क्या यह कोई दुर्घटना हो सकती है? वह शायद जीवित हो। क्या हमें रुक नहीं जाना चाहिए?” मुझे नहीं पता कि मैं इस अजनबी से ये सब क्यों पूछ रहा हूँ।

“वो कुछ भी नहीं था। गाड़ी चलाते रहो।”

"तो क्या वह कोई जानवर था?"

“यह एक भ्रम था।”

मैं एकदम शांत हो जाता हूँ।

जब हम घाटी के प्रवेश द्वार पर पहुँचे, तो उन्होंने कहा,

"कृपया यहा रुकें।"

"इस अंधेरे में तुम यहाँ से कहाँ जाओगे?"

मैंने बूढ़े चौकीदार को इस विशेष एकांत घाटी के बारे में कई पुरानी किंवदंतियों के बारे में बात करते सुना है, ऐसी कहानियां जिन्हें मैंने अक्सर स्थानीय लोककथाएं कहकर खारिज कर दिया है।

मैं खुद को पूछने से रोक नहीं पाई। वह चारों ओर देख रहा था और चिंता से भरी आवाज़ में बोला, मानो उसे मेरी परवाह हो:

“तुरंत निकल जाओ। सड़क पर बिल्कुल सीधे जाओ। रुकना मत।”

मैं राजमार्ग पर आगे बढ़ता हूँ। इतने अंधेरे में वह कहाँ जाएगा?

एक शनिवार को मेरे सहकर्मी आनंदनाथ मेरे साथ थे और वे डरावनी कहानियों का ज़िक्र करते रहे। पुल के पास एक ठेले पर चाय पीने के लिए रुकने पर उन्होंने बताया कि भूत अक्सर जंगल तक पूरे इलाके में घूमते रहते हैं और कहीं आस-पास ही भूतों का एक छिपा हुआ गाँव है। मैंने राजमार्ग से दूर जाने वाले एक कच्चे रास्ते की ओर इशारा किया। ज़ाहिर है, घने जंगल में कुछ जीव-जंतु तो रहते ही होंगे। भूतों को रास्तों की क्या ज़रूरत होगी? लेकिन आनंदनाथ अपनी बात पर इतने अड़े रहे कि मैंने बीच में ही हार मान ली। उन्होंने कहा कि वहाँ सिर्फ़ कच्चा रास्ता दिखाई देता है, न कोई गाँव, न कोई ग्रामीण, यहाँ तक कि जो चरवाहे रास्ता भटक जाते हैं, वे भी कभी उस जगह से वापस नहीं आते।

इन सब बातों के बारे में सोचकर मैं तनावग्रस्त हो गया हूँ। मैं

बहुत सावधानी से गाड़ी चलाता हूँ। अपने शहर की जगमगाती रोशनी देखकर मुझे राहत मिलती है और घर पहुँचते-पहुँचते मेरी सारी चिंता दूर हो जाती है।

“ये पत्र आपके लिए आए हैं। इन्हें देख लीजिए। मैं खाने की थालियाँ लगा रहा हूँ।”

मैं चिट्ठियों को देख रहा था और तभी मेरी नज़र एक सरकारी लिफाफे पर पड़ी, जिसे देखकर मैं एक-दो पल के लिए दंग रह गया। मेरा अनुमान बिल्कुल सही निकला—यह मेरे तबादले का आदेश पत्र था। मैं सचमुच हैरान था; कोई इतना सटीक अनुमान कैसे लगा सकता है?

मैं किसी तरह खुद को संभाल लेता हूँ। क्या मैं अपनी पत्नी को बताऊँ? मुझे जुगनू के पिता के शब्द याद आते हैं।

“अगर सभी शिक्षक चले जाएं, तो हमारे बच्चों को कौन पढ़ाएगा?”

मुझे खुश होना चाहिए, फिर भी मेरा दिल इतना भारी क्यों महसूस हो रहा है? मैं अपना ट्रांसफर रद्द करने के बारे में क्यों सोच रही हूँ?

“क्या आप अभी भी इसी हालत में बैठे हैं? कृपया अपना चेहरा और हाथ धो लें।”

मेरी पत्नी पानी का गिलास लेकर मेरे सामने खड़ी है, लेकिन मुझे उसकी मौजूदगी में असहज महसूस हो रहा है।

मुझे अपनी कार से सामान लाना चाहिए।

फाइलों पर नज़र डालते हुए मैंने लैपटॉप का बैग पिछली सीट से उठाया। मैंने हाजिरी रजिस्टर लिया और अंदर आ गई। मुझे नहीं पता कि किस बात ने मुझे अपने छात्र के पिता का नाम खोजने के लिए प्रेरित किया। उस बच्चे का नाम क्या था जो उन्होंने बताया था—जुगनू?

मैं पन्ने पलटता हूँ। मैं तीसरी कक्षा के विद्यार्थियों की सूची पर आता हूँ जहाँ मुझे जुगनू परधी का नाम दिखाई देता है। इस नाम के तीन विद्यार्थी हैं; पहले के पिता स्वर्गीय पर्वत परधी हैं, दूसरे का नाम चीता परधी है और तीसरे के पिता का नाम स्वर्गीय मेघराज परधी है।

अब मुझे आश्चर्य हो रहा है कि क्या वह चीता परधी ही था जिससे मैं आज मिला था; वह इतने अंधेरे में पुल के पास वाली घाटी में क्या कर रहा था?

ऋतुपर्णा मुखर्जी द्वारा अनुवादित

बोतलबंद जल

किसी कार्य को पूरा करने से मिलने वाली संतुष्टि उतनी ही स्फूर्तिदायक हो सकती है जितनी किसी गहरी इच्छा को पूरा करने से।

नहीं, मैं कोई माहिर चोर नहीं हूँ! न ही मैं पैसों का भूखा हूँ और न ही चोरी की आदत वाला कोई अमीर आदमी। मैं इंजीनियरिंग का छात्र हूँ, अपने पिता का "अच्छा बच्चा", जिन्होंने मेरी कॉलेज की फीस भरने के लिए बैंक से कर्ज लिया था। एक निम्न-

मध्यमवर्गीय परिवार में पला-बढ़ा होने के कारण, मुझे शरारत करने का मौका नहीं मिला, इसलिए मुझे सदाचारी बनना पड़ा! हा हा! और मैं सदाचारी हूँ— मेहनती, समझदार और शिक्षित!
सतपुड़ा के विशाल पार्किंग स्थल में घूमते हुए। अगर भोपाल के वल्लभ भवन को मध्य प्रदेश का प्रशासनिक केंद्र माना जाता है, तो सतपुड़ा भवन प्रशासन के रंगों से सराबोर जीवनधारा है। मेरे एक मित्र को मजबूरी में यहाँ आना पड़ा, और मैं एक आमंत्रित अतिथि के रूप में नहीं, बल्कि एक मददगार साथी के रूप में उसके साथ गया। सच कहूँ तो, मेरा मित्र मेरी मोटरसाइकिल उधार लेने आया था, और मेरे माता-पिता द्वारा जमा की गई मेरी जीवन भर की बचत इस पुरानी बाइक को खरीदने में लगी थी। मैं अपनी इस अनमोल वस्तु को इतनी आसानी से कैसे छोड़ सकता था? लेकिन अगर मैंने 'ना' कह दिया होता, तो शायद मैं एक पुरानी दोस्ती तोड़ देता। इसलिए, मुझे अनिच्छा से सहमत होना पड़ा और अब मैं पार्किंग स्थल में उल्लू की तरह आँखें फाड़कर इंतज़ार कर रहा हूँ, इधर-उधर देखते हुए समय बिता रहा हूँ।
और मैं यहाँ हूँ। वाहनों की लंबी कतारें हैं, मानो मोम की पेंसिल से खींची गई चटख और रंगीन रेखाएँ हों! लड़कियों के स्कूटर उनके पसंदीदा लाल, गुलाबी और नारंगी रंगों में; युवाओं के लिए स्टाइलिश, काली साइकिलें; कक्षा IV के साधारण बच्चों के लिए चमकीली साइकिलें; क्लर्कों के लिए खस्ताहाल स्कूटर;

जूनियर अधिकारियों के लिए खिलौने जैसी दिखने वाली छोटी कारें; वरिष्ठ अधिकारियों के लिए पीले रंग के मुकुट वाली लंबी कारें; प्रभावशाली आगंतुकों के लिए मजबूत जीपें... हर वाहन एक संगीत की तरह है जो उसके मालिक के जीवन की कहानी बयां करता है!

यह जगह किसी पार्किंग स्थल से कम और किसी सरकारी अभयारण्य से अधिक मिलती-जुलती है। ऊँचे-ऊँचे पुराने पेड़ों के नीचे चौड़ी छतें हैं जहाँ कई लोग, जिनमें अधिकतर कर्मचारी दोपहर के भोजन के बाद अपने आधिकारिक अवकाश पर होते हैं, ताश खेलते हैं। लोगों का आना-जाना लगा रहता है, हर चेहरा एक अनोखी कहानी कहता है। पतले-दुबले युवा पेड़ हल्की हवा में भी शान से झूमते हैं, मानो अपनी जवानी का जश्न मना रहे हों। सचमुच, युवा होना ही अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। चौड़े रास्ते जीवंत, नाजुक फूलों और सजावटी पौधों की कतारों से सजे हैं। खिले हुए फूलों से लदी लताएँ रेलिंगों पर लटकती हैं, सतपुड़ा के वातावरण को एक सुगंधित आलिंगन में लपेट लेती हैं, जो किसी खूबसूरत कामकाजी महिला की मुस्कान की तरह कोमल है।

जैसे ही मैंने मोटरसाइकिल खड़ी की, मेरी नज़र ज़मीन पर फैली धूल की पतली परत पर पड़ी सुनहरी चमकती हुई दिखाई दी, जो दोपहर की तेज़ धूप से जगमगा रही थी। मैं उस धूल पर बेतरतीब ढंग से चलने लगा, मानो वह पिसे हुए सोने जैसी हो। मेरे मन में

कोई खास विचार नहीं था। मैं बेफिक्र होकर इधर-उधर घूमता रहा, अपने आस-पास के नज़ारों को निहारता रहा: एक छोटा पक्षी पीपल की डाल पर बैठा था, कलियाँ आधी खिली हुई थीं और पास ही एक जिज्ञासु काली मधुमक्खी मंडरा रही थी, एक अकेली तितली अपनी सुंदर उड़ान में मग्न थी, एक चिंतित लेकिन आशावान किसान दृढ़ भाव से अंदर आ रहा था, एक थका हुआ सुरक्षा गार्ड और एक शर्मीली लड़की अपने मोबाइल फोन पर बात कर रही थी। ओह, कितना सुखद पल! भले ही मेरे दोस्त दो घंटे बाद ही आएं, मैं संतुष्ट हूँ। इंतज़ार मुझे कभी ऊबता नहीं; मैं कभी सच में अकेला नहीं होता। मैं साइमन डी बोवॉयर की इस बात को दिल से मानता हूँ कि अपने असली स्वरूप का जश्न मनाना ही सच्ची खुशी है!

अब, इस खुशी के पल में, भले ही कोई संगीत न हो, फिर भी मैं अपना पसंदीदा गाना गुनगुना रहा हूँ...

कहीं एक लड़की थी, बेहद खूबसूरत लेकिन सांवली...

रुको! नहीं, मेरा ध्यान एक शानदार कार पर टिक गया है, जो इतने ताज़े भूरे रंग में चमक रही है कि ऐसा लगता है मानो उसकी पहली सर्विस भी अभी तक नहीं हुई हो। यह बिल्कुल नई लग्ज़री गाड़ी टिमटिमाती धूप में ऐसे दमक रही है मानो किसी शादी के रिसेप्शन में भूरे रंग का लहंगा पहने कोई संभ्रांत दुल्हन हो, जिसके हीरे जड़े गहने बीच-बीच में जगमगा रहे हों। इसकी खूबसूरती से आकर्षित होकर मैं कार के पास जाता हूँ। लेकिन

मेरी नज़र पारदर्शी शीशे के पीछे की आलीशान सीटों पर नहीं पड़ती; बल्कि उन पर रखी ब्रांडेड मिनरल वाटर की दो सीलबंद बोतलों पर टिक जाती है।

इस अनमोल पानी को देखकर यादें उमड़ पड़ती हैं। हमारे कस्बे में, जहाँ नगर निगम अक्सर गर्मी आते ही पानी पहुँचाने में लापरवाही बरतता है, पानी का टैंकर आते ही अफरा-तफरी मच जाती है। पानी के लिए बेताब लोग कपड़े धोने या नहाने का काम छोड़कर हर एक बूँद को इकट्ठा करने के लिए हाथ-पैर मारते फिरते हैं।

इस अफरा-तफरी के बीच, मैंने एक परेशान करने वाली घटना देखी। पानी बांटते समय, पानी आपूर्तिकर्ता ने स्थिति का फायदा उठाते हुए एक युवती के साथ अनुचित व्यवहार किया और उसे गलत तरीके से छुआ।

उस रात, जब मैं एक दोस्त के घर से लौट रहा था, तो मैंने एक ऐसा दृश्य देखा जिसने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। मैंने देखा कि लोग एक समृद्ध बस्ती के प्रवेश द्वार पर रखे पीने के पानी के टैंक से पानी चुरा रहे थे। उनमें पुरुष, महिलाएं और बच्चे डर से कांप रहे थे, गंदी प्लास्टिक की बोतलों और टूटे बर्तनों में पानी भर रहे थे। ये खानाबदोश मजदूर थे जो पन्नी के टुकड़ों और जर्जर ढांचों से बने अस्थायी आश्रयों में रह रहे थे, उनके जीवन का मूल्य उनके खस्ताहाल घरों की कीमत से कहीं कम था। बस्ती का रक्षक गालियां और अपशब्द चिल्ला रहा था, तभी

पांच या छह साल का एक छोटा बच्चा, अपने दुबले-पतले शरीर पर सिर्फ अंडरवियर पहने, भागते हुए वयस्कों से पीछे रह गया। बच्चा लड़खड़ाया और उसके मुंह से खून बहने लगा, लेकिन वह पानी के बर्तन से चिपका रहा, उसे छोड़ने को तैयार नहीं था। रक्षक लगातार उसका पीछा करता रहा, उसे गालियां देता रहा और लाठी से पीटता रहा। खून से लथपथ और डरा हुआ बच्चा भागता रहा, आलीशान कॉलोनी के गेट से सड़क पार करके दूसरी तरफ कूड़े के ढेर तक पहुँच गया। उस क्षण मैंने न केवल प्यासे और जीवनरक्षक पानी के बीच की दर्दनाक खाई को देखा, बल्कि विशेषाधिकार और पीड़ा के बीच के स्पष्ट अंतर को भी महसूस किया।

एक अन्य घटना में, दूषित पानी पीने से पूरा गाँव बीमार पड़ गया। कई लोगों की जान चली गई और अन्य गंभीर हालत में हैं। गाँव ने खराब हैंडपंपों के बारे में कई शिकायतें की थीं, और एकमात्र कुएँ की कभी आधिकारिक सफाई नहीं की गई थी। राजधानी के अंतर्गत आने वाले इस गाँव में पीने के पानी की उचित व्यवस्था का अभाव विनाशकारी साबित हुआ। इस त्रासदी के पीछे क्या कारण थे? लापरवाही, अक्षमता और उदासीनता!

मेरी आँखों के सामने, आलीशान कार में रखी चमकदार मिनरल वाटर की बोतलें दिखाई देती हैं। अवांछित स्पर्श और निजता के अतिक्रमण को सहने की मजबूरी, अशुद्ध पानी पीने की कड़वी सच्चाई के साथ-साथ चलती है। यह अमीरों और गरीबों के बीच

की गहरी खाई की एक दर्दनाक याद दिलाता है। और वहाँ, कार मालिक के पास दो बोतलें बेकार पड़ी हैं, जिनका कोई उपयोग नहीं हुआ।

मेरे भीतर क्रोध का उबाल आ रहा है, और मेरा मन कर रहा है कि मैं पूरी ताकत से कार की खिड़की तोड़ दूं। लेकिन निम्न-मध्यम वर्गीय परवरिश के कारण, मुझे विद्रोह करने की स्वतंत्रता नहीं है। इसलिए, मेरा जोरदार मुक्का एक झिझक भरे स्पर्श में बदल जाता है, जब मैं कार के दरवाजे को हल्के से छूता हूं।

लेकिन, मुझे आश्चर्य हुआ कि कार का दरवाजा खुला हुआ था। गलती से खुल जाने पर, मैंने झट से दरवाजा बंद किया और तेजी से पीछे हट गया। मेरे माथे पर पसीने की बूँदें आ गईं। अगर किसी ने मुझे देख लिया होता तो क्या होता? हो सकता है उन्होंने मेरी मंशा गलत समझ ली हो और सोचा हो कि मैं कार से कुछ चुराने की कोशिश कर रहा था!

चलते-चलते मैं बार-बार पीछे मुड़कर देखने से खुद को रोक नहीं पा रही थी। एक आदमी के पास दो बोतलें थीं, यानी ज़रूरत से दुगनी मात्रा में पानी। अगर मैं सिर्फ़ एक बोतल ले लूँ तो क्या होगा? इस ख्याल मात्र से ही मेरी धड़कन तेज़ हो गई और साँसें फूलने लगीं। मेरी हथेलियाँ पसीने से भीग गईं और मेरे दिल की धड़कन की आवाज़ से मेरी दुनिया गूंजने लगी।

काला... काला...

नहीं, वे...! कितना बेकार विचार है! मैं अपनी बाइक पर लौटता

हूँ, मेरी बेचैनी हर पल बढ़ती जा रही है। मेरी नसों में खून का प्रवाह तेज़ हो जाता है। अपने लक्ष्यहीनता में खोया हुआ, मैं खुद को एक बार फिर कार की ओर खिंचा हुआ पाता हूँ।

नहीं!!

अचानक, कोई मेरे अंतर्मन के विचारों में खलल डालता है, जबकि मैंने अभी तक कोई स्पष्ट इरादा भी नहीं बनाया है। यह कितना अद्भुत है कि आत्मा हमें इतने सूक्ष्म स्तर पर समझ सकती है, ठीक वैसे ही जैसे एक माँ अपने बच्चे के चेहरे को देखकर ही उसकी परेशानी को भांप लेती है। क्या माँ हमारी आत्मा है, या शायद हमारी आत्मा माँ की आत्मा का एक अंश है! ... मेरा अंतरात्मा मुझे धिक्कारता है, और मैं याद करने की कोशिश करता हूँ कि क्या मैंने अपने जीवन के पिछले इक्कीस वर्षों में कभी कुछ चुराया है। कोई पिछली चोरी? नहीं, कोई वास्तविक या काल्पनिक याद नहीं है। शायद मैंने कभी चोरी नहीं की, लेकिन मैंने निश्चित रूप से कुछ बार झूठ बोला है, और हर बार वे झूठ बेशर्म अपराधों में बदल गए।

एक बार जब मुझे अपनी माँ से नियमित भत्ते के अलावा कुछ और पैसे लेने की इच्छा हुई, तो मैंने कॉलेज की फीस के लिए एक नए फंड की झूठी कहानी बनाई, जिसे मैं अपने दोस्तों के साथ खर्च करने का इरादा रखता था। बाद में मुझे पता चला कि मेरी माँ ने वह पैसा काफी समय से बचाकर रखा था ताकि आने वाली सर्दियों में मेरे लिए एक नया स्वेटर खरीद सकें।

एक बार मैंने अपने दोस्त को साइकिल उधार नहीं देना चाहा, इसलिए मैंने यांत्रिक खराबी या रिश्तेदारों से मिलने जाने का बहाना बना लिया। आखिरकार, उसे किसी तरह सच्चाई पता चल गई, और वर्षों की मेहनत से बनी हमारी दोस्ती पल भर में चूर-चूर हो गई।

मेरे स्कूल के दिनों की एक घटना है जब मेरे पिता को मेरी स्कूल से गैरहाज़िरी का पता चला। मैंने बगल में प्याज़ रखकर बुखार का बहाना बनाया और एक-दो दिन बिस्तर पर पड़ा रहा। लेकिन जब मेरे पिता ने अपनी आस्तीन ऊपर करके अपनी निराशा व्यक्त की, तो मुझे इतनी शर्म आई कि मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया। उस झूठ को बीते कई साल हो गए हैं, और अब मैं चोरी करने के बारे में सोच रहा हूँ?

मुझे लगता है!

नहीं!

चलिए विचार करते हैं!

नहीं!

आइए विचार करें!

मैं दुविधा में हूँ, नैतिकता बनाम अनैतिकता, पाप बनाम पुण्य, अच्छा बनाम बुरा जैसे वाद-विवादों में बहुत अधिक उलझना नहीं चाहता। जीवन का मेरा अपना ही फंदा है, और अंततः मैं वही करता हूँ जो मेरे भीतर से गूंजता है, उन सभी चीजों से बचता हूँ जो मेरे भीतर की वर्जनाओं को जगाती हैं। मैं एक सरल जीवन

जीने में विश्वास रखता हूँ, यह जानते हुए कि बेईमानी अंततः जटिलताओं को जन्म देती है। इन खूबसूरत अनुभवों ने मुझे इतना तो सिखा ही दिया है।

...लेकिन चोरी करने की ये इच्छा! शायद जीवन सभी दर्शनों से परे है! अपने भीतर के डर के बावजूद, मैं कार के पास ही रहता हूँ, क्योंकि सारा साहस अंततः भय के सबसे गहरे रूप से ही उत्पन्न होता है। मैं अपने आस-पास का जायजा लेता हूँ, सावधानी से देखता हूँ कि कहीं कोई मुझे देख तो नहीं रहा है।

दो-तीन कर्मचारी खाली लंच बॉक्स लिए मुस्कुराते हुए मेरे पास से गुज़रते हैं। मेरी नज़र उन पर पड़ती है, तभी एक गार्ड आराम से बीड़ी पीते हुए दूसरे गार्ड की ओर बढ़ता है। एक परेशान आदमी स्कूटर चलाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन स्कूटर स्टार्ट नहीं हो रहा। ऐसा लगता है मानो मेरे आस-पास के लोग आते-जाते अपने ही विचारों में खोए हुए हैं, मानो किसी खालीपन को निहार रहे हों। वह परेशान आदमी अपने परिवेश से कटा हुआ सा लगता है, मानो कोई ध्यानमग्न योगी हो।

मेरे भीतर मौजूद अदृश्य शक्ति के अलावा कोई मुझ पर ध्यान नहीं देता। मेरी आंतरिक चेतना और मेरी इच्छाओं के बीच संघर्ष के कारण भावनाओं का बवंडर सा मच जाता है। किसी के द्वारा देखे जाने का डर मुझे यह विश्वास दिलाता है कि अगला डर बस आगे ही मेरा इंतजार कर रहा है। अगर कोई मुझे चोरी करते हुए पकड़ ले तो? अगर कार का मालिक अचानक प्रकट हो जाए

और मुझे रंगे हाथों पकड़ ले तो?
यह सोचकर ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। भीतर से एक आवाज़ चीखती है, जो मेरे डर को झुठलाती है और तथाकथित अभिजात वर्ग का उपहास करती है।
उस पल, उत्साह मुझमें उमड़ पड़ा, जिससे मेरी सोचने-समझने की शक्ति कमज़ोर पड़ गई। मैंने आवेग में आकर दरवाज़ा खोला, एक बोतल उठाई और झट से बंद कर दिया। यह सब करने में पाँच से आठ सेकंड से ज़्यादा समय नहीं लगा, इस दौरान मेरा दिल मानो धड़कना बंद हो गया, मेरी साँसें रुक गईं और आने वाले खतरे का एड्रेनालाईन मेरी नसों में दौड़ने लगा। मैंने अभी-अभी अपनी पहली चोरी की थी, और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी जान निकल जाएगी। चोरी की बोतल को कसकर पकड़े हुए, मैं लड़खड़ाते कदमों से तेज़ी से वहाँ से चला गया, मानो मैं बच गया हूँ। मेरा दिमाग सुन्न था, घटनाओं को समझने की कोशिश कर रहा था। मुझे आँखें बंद करने का मन कर रहा था, अंधेरे में सुकून ढूँढ़ने का मन कर रहा था।
कुछ क्षणों के अजीब खालीपन के बाद, मुझे होश आता है। अचानक, अपराधबोध का बोझ मुझ पर आ पड़ता है, जिससे मेरा सिर शर्म से झुक जाता है, ठीक पापा के "अच्छे बच्चे" की तरह। मेरी धमनियों में खून दौड़ रहा है, जिसमें जीवन और मृत्यु का मिश्रण है। मेरे अंदर कुछ टूटा हुआ सा लगता है, शायद मेरी परवरिश का कोई हिस्सा या कोई अदृश्य पवित्र बंधन।

अपराधबोध अकेला नहीं है; डर भी उसके साथ है, जो अपना रंग बदल रहा है। मुझे ऐसा लगता है जैसे पूरी दुनिया मेरे हाथ में रखी मिनरल की बोतल को घृणा भरी निगाहों से देख रही है। क्या सुरक्षा गार्ड धुएं के बीच मुझ पर हंस रहे हैं? क्या प्लेटफॉर्म पर ताश खेलते हुए कर्मचारी मेरे बारे में कानाफूसी कर रहे हैं? वह आदमी अपने मोबाइल फोन पर किसका नंबर डायल कर रहा है? क्या उसने मेरी चोरी देखी है? और उस दोस्त का क्या, जिसे मैंने भीड़ में देखा?

जैसे ही मैं अपने दोस्त को देखता हूँ, मेरे शरीर में सिहरन दौड़ जाती है। वो जल्द ही वापस आ रहा है, और वो ज़रूर सब कुछ जान लेगा! चाहे मैं कितना भी ज़ोर देकर कहूँ कि मैंने बोतल खरीद ली है, वो एक नज़र में ही मेरे झूठे ढर्रे को धो डालेगा। मेरे पास कहने के लिए कोई झूठ नहीं बचेगा। या शायद वो मुझे पहली नज़र में ही पहचान लेगा। फिर मेरे सबसे करीबी दोस्तों को पता चलेगा, उसके बाद मेरे कॉलेज के दोस्तों को, मेरे माता-पिता को, मेरे रिश्तेदारों को, और आखिर में मेरी प्रेमिका को, जो मुझे राम की तरह पूजती है।

दोपहर की ठंडी धूप में भी, मेरे माथे पर पसीने की बूँदें उठ रही हैं। चोरी का रोमांच अब मृत्यु के समान अपराधबोध में बदल गया है। मेरा दोस्त आ रहा है, और मैं बेचैन हूँ। जो अंतर्मन की आवाज़ें पागलपन में खो गई थीं, वे अब फिर लौट आई हैं, पहले की तरह तीखी, जैसे कोई चुभने वाला हथियार हो।

“बोतल वापस रखो! चलो, अभी करो!”
मैं आज्ञा मानने की विवशता से जूझता हूं, व्यसन की दयनीयता और विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के अत्यधिक भोग-विलास को कोसता हूं।
“नहीं! मैं बोतल वापस नहीं करूँगी!” मैंने दृढ़ निश्चय किया, जबकि मेरी दोस्त मेरे करीब आती जा रही थी।
और अब?
मेरे मन के धुंधलेपन में, जब मैं कैंपस से बाहर निकलता हूँ, तो मेरे आस-पास का वातावरण जीवंत संवेदनाओं से भर उठता है। लोग, फूल, तितलियाँ, लताएँ और पेड़, सभी एक ऐसी मोहकता बिखेरते प्रतीत होते हैं जो मुझे बचपन की प्यारी कहानियों की याद दिलाती है। मुझे एहसास होता है कि सुंदरता कोई बाहरी गुण नहीं, बल्कि मन की एक अवस्था है।
तभी, मेरे सामने एक भिखारी प्रकट होता है, जिससे मेरे विचारों का धुंधलापन दूर हो जाता है। मैं उस अधेड़ उम्र के व्यक्ति को ध्यान से देखता हूँ, जो इस बात पर विचार कर रहा है कि भारत ने अपने नागरिकों को क्या दिया है, और बदले में उसका पूरा जीवन छीन लिया है: फटे-पुराने कपड़े, फटे और खून से सने जूते, बिखरे बाल, गंदा चेहरा, बिखरी दाढ़ी, भूखी आँखें और कमजोर शरीर। जीवन भर के संघर्ष के बाद चालीस की उम्र में पचास के समान दिखने वाला वह भिखारी मुझसे विनती भरी आँखों से गुहार लगाता है। उसकी इस अपमानजनक स्थिति को

देखकर मेरा हृदय व्याकुल हो उठता है।
मुझे यह एहसास हुआ कि इस व्यक्ति ने संभवतः अपने पूरे जीवन में खराब गुणवत्ता का पानी पिया है। दया से भरकर, मैंने तुरंत उसे चुराई हुई बोतल सौंप दी, मेरे चेहरे पर दृढ़ और निर्दयता का भाव था।
“तुरंत इस जगह को छोड़ दो!” मैंने आदेश दिया।
मूक भिखारी अपने स्वार्थ के अलावा कुछ नहीं समझता, और वह तुरंत भाग जाता है। और इस क्षण, मुझे राहत का अहसास होता है, मानो मैंने भय, संदेह और भ्रम का वह बोझ उतार दिया हो जो मुझे घेरे हुए था।
मुझे यह भूलने दो कि मैंने कभी चोरी की थी।
अनुराधा दोसाद द्वारा अनुवादित
बकरी
बल्मी पहाड़ी पर पहुँचकर अनीता अपनी बकरी को चरागाह में छोड़कर पत्थरों के ढेर के बीच एक बड़ी चट्टान के पास बैठ जाती है। पिछली रात ओलावृष्टि हुई थी और सुबह से ही तेज़ ठंडी हवाएँ चल रही हैं। लेकिन अनीता को गर्म शॉल का सहारा कहाँ मिलेगा? वह रात को दो चादरों के नीचे सोती है और सुबह ठंड से बचने के लिए उन्हें ओढ़ लेती है। उसने चादर के नीचे दो फटी हुई कमीज़ें ओढ़ी हुई हैं। ये कमीज़ें उसके पड़ोस में रहने वाले किसान भाइयों की हैं। उसकी गरीब माँ अपनी विधवा और अनाथ बेटी की इतनी ही मदद कर सकती है।

वह चारों ओर देखती है। सब कुछ गीला है—पत्तियाँ, झाड़ियाँ, डालियाँ और घास। वह आग नहीं जला पाएगी। वह दूर चमकते लाल, बल्ब जैसे सूरज को देखती है, मानो उसे निहारने मात्र से ही उसकी ठंडी और नम मांसपेशियों को थोड़ी सी गर्मी मिल जाएगी।

वह स्कूल यूनिफॉर्म पहने, उगते सूरज की दिशा में चल रही अपनी सात वर्षीय बेटी को पुकारती है—

'क्या तुमने फ्लैटब्रेड अपने डिब्बे में रखी थीं?'

'अम्मा, यह डिब्बा नहीं है, यह टिफिन है।'

'अरे हाँ, वही। रास्ते में भगवान मदिया से प्रार्थना करना न भूलें।'

उसकी बेटी आगे बढ़ जाती है। अनीता अपने चेहरे पर हमेशा की तरह चिंता लिए पत्थरों की ओर लौटती है। लड़कियों के लिए यह समय सुरक्षित नहीं है—वह डर के मारे आगे खाली सड़क को देखते हुए सोचती है। लेकिन दुनिया हमेशा से लड़कियों के लिए बुरी रही है! यह सोचते हुए वह मन ही मन कहती है—

'अम्मा ने मुझे कभी भी पहाड़ियों की तलहटी में बसे गांव के स्कूल में जाने की अनुमति नहीं दी। अगर मुझे कुछ शिक्षा मिली होती, तो मैं कम से कम एक किराने की दुकान खोल सकता था या घर-घर जाकर कुछ बेच सकता था। हर तरह के काम के लिए कुछ न कुछ शिक्षा आवश्यक होती है और शिक्षा केवल स्कूल से ही मिलती है।'

तुम अकेले में क्या बुदबुदा रहे हो?

जमुनिया अपनी तीन बकरियों को अनीता की बकरियों के पास छोड़कर, अपने दोनों हाथों को मलती है और अनीता के बगल में बैठ जाती है।

“आज बहुत ठंड है”—वह अपने फटे हुए शॉल से अपना आधा चेहरा ढक लेती है।

‘दिन थोड़ा और आगे बढ़े, हवाएं शांत हो जाएंगी और हम आग जला पाएंगे’ — अनीता कुछ टहनियां और शाखाएं इकट्ठा करती है और उन्हें पत्थर पर रख देती है।

और अगर हवाएं नहीं भी रुकती हैं, तो भी हमें किसी न किसी तरह दिन गुजारना ही होगा!

चट्टानों पर बैठी जमुनिया बकरियों को निहार रही है। अनीता की बकरी थोड़ी बेहतर नस्ल की है और अपने तीन मेमनों के साथ चर रही है। वह गर्भवती है।

क्या तुम्हारी बकरी पूर्णिमा तक बच्चा दे देगी?

'उम्मीद है। भगवान मदिया उसकी रक्षा करें।'

अनिता पहाड़ी पर बसे गांव के पास जंगल में बनी ईंटों की छोटी सी ढेरी, मड़िया को अपना रक्षक मानती है। वह मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करती है— ‘हे प्रभु! जीवन के इस अनमोल खजाने की रक्षा कीजिए—मेरी स्कूल जाने वाली बेटी और सामने चर रही मेरी प्यारी बकरी की।’

'पूरे गांव में सिर्फ आपके पास ही इतनी अच्छी नस्ल की बकरी है।'

'भाभी, मैंने चांदी का हार बेचकर ही उसे हासिल किया है। वह मेरा आखिरी गहना था।'

जब तुम अपना चांदी बेच दो, तो चिंता मत करो, तुम्हारे अच्छे दिन जल्द ही आएंगे। मेरी बात याद रखना—एक साल के भीतर तुम्हारी मां और बेटी के पास पहनने के लिए बेहतर कपड़े होंगे और तुम्हारे घर में गेहूं और दालें होंगी।

जमुनिया भाभी कितनी अच्छी बातें कहती हैं! इसीलिए अनीता हमेशा उनसे सब कुछ साझा करती है।

'मैं ईद के दिन भोपाल के बाजार में उसके द्वारा पैदा किए गए मेमनों को बेच दूंगी। फिर एक बकरा रख लूंगी। बस यही उम्मीद करती हूं कि मां-बेटी के लिए यह साल किसी तरह बीत जाए।'

तुम्हारे भाइयों ने तुम्हारे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है। दोनों मिलकर तुम्हारी पुश्तैनी ज़मीन के दस बीघा के मालिक हैं। लेकिन उन्होंने अपनी विधवा बहन तुम्हें एक बीघा ज़मीन तक नहीं दी! और तुम्हारी माँ! वह तो अपनी ही बेटी की दुश्मन है!

नहीं भाभी, कम से कम अम्मा की वजह से मैं उनके घर के बगल में एक अस्थायी झोपड़ी तो बना पाई हूँ। वो कभी-कभी मेरी ननदों से छुपकर मुट्ठी भर अनाज या चीनी ले आती हैं। मैं उनसे ऐसा न करने के लिए कहती हूँ।

भला बेचारी बूढ़ी विधवा क्या कर सकती है? वह खुद अपनी दोनों बहुओं के प्रभुत्व में भोजन की कमी से पीड़ित है। एक स्त्री का महत्व तो उसके पति की उपस्थिति में ही होता है।

अनीता अपने पति को याद करती हैं। उनके ससुराल वाले बहुत बड़े थे और खेती से परिवार का पेट भरना मुश्किल था। इसलिए उनके पति पत्थर तोड़ने का काम करने लगे। तीन-चार साल तक लगातार पत्थर तोड़ने के काम से उनके फेफड़े खराब हो गए थे, उनमें पत्थर के टुकड़े भर गए थे। पति के इलाज के लिए उन्हें ससुराल वालों से न तो कोई मदद मिली और न ही आर्थिक सहायता। उन्होंने तीन महीने सरकारी अस्पताल में अपने बीमार पति की देखभाल में बिताए। वहाँ का जीवन नरक समान था, खासकर अपनी छोटी बेटी के साथ। अस्पताल में उनके पति के लिए बिस्तर नहीं मिला। उन्होंने अपने पति को जनरल वार्ड में एक कोने में चादर बिछाकर लिटाया। कभी-कभार डॉक्टर आते थे। कभी-कभार दवाइयाँ मिल जाती थीं, तो कभी मना कर दिया जाता था। नर्सों की डांट और बुरे इरादों वाले सफाईकर्मियों के बीच उन्होंने बड़ी मुश्किल से वहाँ गुजारा किया ताकि उनके पति का गुजारा चल सके। लेकिन हे भगवान! उनकी मृत्यु उनके जीवन की सबसे दुर्भाग्यपूर्ण याद बन गई। जिला अस्पताल ने उनके पति के शव को घर ले जाने के लिए एम्बुलेंस तक नहीं दी। अनीता ने अपने पति के शव को अकेले ही अपने कंधों पर उठाया और अपनी बेटी का हाथ कसकर पकड़े हुए पंद्रह किलोमीटर पैदल चलकर अपने पति के घर तक गई। पति की मृत्यु के तेरहवें दिन उसे उस घर से निकाल दिया गया। एक विधवा की बेटी का उनकी संपत्ति में क्या स्थान होता है?

अब सूरज पहले से ज्यादा चमक रहा है। जमुनिया और अनीता ने टहनियाँ और सूखे पत्ते इकट्ठा करके आग जलाई है।

‘आपकी बेटी यहाँ आते ही स्कूल जाने लगी है। आपने अपना कॉटेज भी बनवा लिया है। क्या आप सब कुछ अच्छे से संभाल पा रहे हैं?’

मेरे पास तांबे का एक भारी पानी का पात्र और पायल की एक जोड़ी थी। मेरे पास पीतल की एक थाली भी थी। मैंने ये सब परसों बेच दिए और गांव के बाजार से राशन खरीदा। हमारे पास कुछ दिनों का भोजन है। मुझे उम्मीद है कि तब तक मुझे मजदूरी का कुछ भुगतान मिल जाएगा।

‘किस प्रकार का श्रम कार्य?’

'भाभी, आप मज़ाक क्यों कर रही हैं? हम दोनों ने पंचायत की जल निकासी व्यवस्था पर साथ काम किया था। क्या आपको आपका भुगतान मिल गया? जब मैं कल गई थी तो सरपंच ने मुझे बताया कि सरकार के पास फिलहाल पैसे नहीं हैं और मुझे तीन दिन बाद आने को कहा, जब सरकार उन्हें कुछ पैसे भेज देगी।'

‘तुम शायद अँधेरे में ही बकरियाँ चराने आए थे। सुबह होते ही गाँव में सबको इस बात का पता चल गया। क्या तुम्हें पता नहीं कि क्या हुआ है?’

'क्या?'

सरपंच और उनके सचिव दोनों फरार हो गए हैं।

'क्या?'

“हां, उन्होंने गांव के हर कच्चे और पक्के घर में शौचालय बनवाने के लिए सरकार से पैसे लिए और उन्हें अपने पास रख लिया। हमने सुना था कि पुलिस आज उन्हें गिरफ्तार करने वाली थी, इसीलिए वे अंधेरा रहते ही भाग गए।”

‘अब हमारे भुगतान का क्या होगा?’—अनीता की आँखों में आंसू भर आए।

जमुनिया सोचती है कि वह अनीता से पैसे के बारे में भूल जाने के लिए कहे, लेकिन वह यह बात कह नहीं पाती।

आग में सेंकते हुए अनीता एक कपड़ा खोलती है। वह पिछली रात की बासी रोटी अपने साथ लाई थी और दो अपनी बेटी के लिए रख ली थीं—एक वह सुबह खाएगी और दूसरी स्कूल ले जाएगी।

आग की गर्मी में बैठी अनीता चुपचाप अपनी रोटी खा रही थी। जमुनिया ने अपने लंच बॉक्स से प्याज का एक टुकड़ा और थोड़ा सा अचार अनीता को दिया। अनीता ने उसे भी चुपचाप खा लिया।

‘प्यारी अनीता, क्या तुम थोड़ी देर के लिए बकरियों का ध्यान रखोगी? मैं कुछ काम निपटाकर थोड़ी देर में वापस आ जाऊंगी।’

जमुनिया चली जाती है। अनीता जानती है कि वह दोपहर बाद तक नहीं लौटेगी। लोग प्याज के एक टुकड़े और थोड़े से अचार की भी कीमत समझते हैं!

बकरियां चर रही हैं। आसपास कोई नहीं है। अनीता पास के पीपल के पेड़ पर चढ़ जाती है और पत्तियां इकट्ठा करने लगती है। उसे कोई देख न ले। औरतें पेड़ पर क्यों नहीं चढ़ सकतीं? कम से कम उसके जैसी औरतों को तो इन पाबंदियों से आज़ाद होना चाहिए, क्योंकि रात में उनकी बकरियों को भूख लगती है। अनीता जल्दी-जल्दी पत्तियां इकट्ठा करती है और उन्हें नीचे बिछी चादर पर फेंकने लगती है। वह रात के लिए अपनी बकरियों का चारा इकट्ठा करेगी और किसी चरवाहे के आने से पहले उन्हें चादर में बांधकर रखेगी। जैसे ही उसके पास कुछ पैसे आएंगे, वह एक हंसिया खरीदेगी ताकि उसे पीपल के पेड़ पर न चढ़ना पड़े। वह बबूल और बेर की झाड़ियों से डालियां काटकर घर ला सकेगी।

अनीता पीपल के पत्तों और हंसिया के ख्यालों में खोई हुई है और उसे इस बात का एहसास नहीं है कि जब कोई शिकारी आसपास होता है तो वातावरण क्या चेतावनी देता है।

अचानक उसके चारों ओर बकरियों के मिमियाने की आवाज़ गूंजने लगती है। वह अपनी बकरी की चीख उन आवाज़ों के बीच नहीं सुन पाती। जब वह पेड़ से नीचे देखती है, तो उसे एक तेंदुआ उसकी बकरी की गर्दन पकड़े हुए दिखाई देता है।

अनीता पलक झपकते ही पेड़ से नीचे कूद गई— 'ओह माय गॉड!'

वह तेंदुए को कमर से पकड़कर पूरी ताकत से एक तरफ फेंक

देती है। वह पत्थरों पर गिर जाता है।

अनीता ने अपनी बकरी को गले लगाया। नहीं! घाव गहरे नहीं हैं। वह ठीक हो जाएगी!

जब वह घावों का मुआयना कर रही थी, तभी तेंदुआ आया और अपने पंजों से उसकी बकरी के पिछले हिस्से को पकड़ लिया। उसके पंजे बकरी के गर्भवती पेट में धंस गए और बकरी ने मरणासन्न आवाज में चीख मारी।

'अरे जानवर!' अनीता ने एक हाथ से तेंदुए की गर्दन पकड़ ली और दूसरे हाथ से उसे धक्का देकर दूर कर दिया। भागने की कोशिश में बकरी फिसलकर गिर गई। अनीता ने उसे बचाते हुए तेंदुए के सामने खड़ी हो गई; उसकी जान और उसकी सारी जमा पूंजी दांव पर लगी थी।

भूखा तेंदुआ उन पर फिर झपटता है, लेकिन अब उसका शिकार बकरी नहीं बल्कि उसका मालिक है।

गिरने के झटके से अनीता गिर पड़ी। तेंदुए ने उसकी कमीज़ का कॉलर पकड़ लिया। कमीज़ की दो परतों के कारण उसके पंजे और दांत ठीक से उसकी त्वचा तक नहीं पहुंच पाए, इसलिए अनीता ने फिर से पूरी ताकत से उसे धक्का देकर हटा दिया। तेंदुए ने कमीज़ के टुकड़े अपने मुंह में दबा लिए थे। अब उसके शिकार की गर्दन पूरी तरह खुल चुकी थी, ताकि वह अपने दांत गड़ा सके। अनीता ने जानवर पर एक पत्थर फेंका जो उसके जबड़े पर लगा, लेकिन तेंदुआ न तो हिला और न ही उसने

अपनी नज़रें उससे हटाईं।

तेंदुआ आखिरी हमले में अनीता पर झपटता है। जानवर अपनी पूरी ताकत से उसके गले में अपने पंजे और दांत गड़ाने की कोशिश करता है, लेकिन अनीता अपनी पूरी ताकत से उसे लात-घूंसे मारती है। ...और कुछ दूरी पर, स्कूल में, उसकी बेटी पढ़ रही है—वही बेटी जिसका इस दुनिया में अनीता के अलावा कोई नहीं है।

दो...चार...सात... आठवें मुक्के से तेंदुआ एक तरफ गिर पड़ा। उसके चेहरे से खून बह रहा था। और शिकारी के होश में आने से पहले ही शिकार ने खुद को संभाल लिया। अनीता ने एक जलती हुई शाखा उठाई जिसका इस्तेमाल उसने कुछ देर पहले आग जलाने के लिए किया था।

दूसरे चरवाहे उसकी ओर दौड़ रहे हैं।

घायल बकरी लड़खड़ाती है और फिर सीधी खड़ी होने में कामयाब हो जाती है।

खून से लथपथ तेंदुआ जंगल की ओर भागता है, और अनीता जलती हुई शाखा को हाथ में लहराते हुए उसके पीछे दौड़ती है।

ऋतुपर्णा मुखर्जी द्वारा अनुवादित

गुड़ के टुकड़े

खपरैल गांव की चिलचिलाती धूप में दस वर्षीय पायल अपनी सहेलियों के साथ खुशी-खुशी रस्सी कूद रही है, जहां लाल मिट्टी से धूल के छोटे-छोटे बवंडर उठते हैं। ऐसा लगता है मानो धूल

भी इन नन्ही बच्चियों को खेलते देख मंत्रमुग्ध हो गई हो और दर्शक बनकर खड़ी हो।

“सत्तावनवाँ, अट्ठानवेवाँ, निन्यानवे...”

रस्सी घुमाती लड़कियों के बीच, पायल दोनों पैरों से जमीन पर कूदती है या हवा में ऊंची उड़ान भरती है!

“तुम शरारती पायल! मुझे पता था कि तुम यहीं मिलोगी!”

जैसे ही माँ रुक्मिणी ने पायल की चोटी पकड़ी, उसकी सहेलियाँ इधर-उधर बिखर गईं। रूबी, साधना, आरती—उन सबको घर लौटकर काम शुरू करना होगा, वरना उनका भी वही हाल होगा।

पांच थप्पड़ मारने के बाद भी रुक्मिणी का गुस्सा शांत नहीं हो रहा है—आखिर उसके क्रोध का निशाना कौन है?

वह पायल को आंगन में रखे गोबर के ढेर की ओर धकेलती है। पायल किसी तरह गंदगी में मुंह के बल गिरने से बच जाती है।

“अगर तुमने आंगन में गोबर फैलाए बिना घर से भागने की कोशिश की, तो आज या तो तुम्हारी बारी होगी या मेरी!”

आंसू पोंछते और बालों में हाथ फेरते हुए पायल आंगन को ढकने के लिए गोबर में भूसा मिलाने लगती है। इसी बीच, रुक्मिणी अपने दस महीने के बेटे लल्ला को गोद में उठा लेती है, जो पालने में लगातार रो रहा है, और उसे प्यार से सहलाते हुए गले लगा लेती है। उसके स्तन सूखे हैं, उनमें लल्ला को जिस पौष्टिक दूध की ज़रूरत है, वह नहीं है।

लल्ला, अपने नए निकले दांतों के साथ, ज़ोर-शोर से दूध पीता

है, जिससे रुक्मिणी को बहुत दर्द होता है। वह अनिच्छा से उसे खुद से अलग करती है।

“मेरे प्यारे बच्चे! मैं तुम्हें क्या खिलाऊं?”

रुक्मिणी अपने बेटे के लगातार रोने से व्याकुल हो जाती है। वह ऊपर एक कोने में छिपाकर रखा हुआ दूध सावधानी से निकालती है। दूध में गुड़ घोलकर वह एक कटोरी भरती है और चम्मच से लल्ला को पिलाने लगती है। बच्चा उत्सुकता से दूध पीता है, और राहत महसूस करते हुए माँ आखिरकार उससे अपनी नज़रें हटा पाती है।

"माँ?"

अलमारी के दरवाजे से झांकते हुए साढ़े चार साल की दीपा डरी हुई आवाज़ में पुकारती है। उसने अपनी बड़ी बहन पायल से सीखा है कि अम्मा से बात करते समय उनसे सुरक्षित दूरी बनाए रखनी चाहिए, क्योंकि वह जानती है कि दूर रहकर वह अपनी माँ की मार से बच सकती है। हालाँकि अम्मा की पीली उंगलियाँ अपने हाथ में आने वाले किसी को भी मार सकती हैं, दीपा ने यह भी सीख लिया है कि दस-बीस कदम दौड़ने के बाद अम्मा हाँफने लगती हैं, जिससे उसे भागने का मौका मिल जाता है। जीवन के बारे में उसकी यही छोटी सी समझ है!

"क्या बात क्या बात?"

“मम्मी, मुझे भूख लगी है!”

लेकिन तुमने तो अभी एक घंटे पहले ही रोटी खाई थी!

दीपा एक दोषी अपराधी की तरह चुप रहती है, लेकिन उसकी आँखों में उसकी भूख झलकती है। उसकी इस विनती भरी नज़र से रुक्मिणी चिढ़ जाती है।

बस करो! खाना खत्म करो!

दीपा दौड़कर चौक पर पहुँचती है और धोती से ढकी बाँस की टोकरी से एक रोटी उठा लेती है। वह बैठ जाती है और भूख से मोटी रोटी चट कर जाती है, बीच-बीच में अम्मा के चेहरे की ओर देखती रहती है, उनकी प्रतिक्रिया से डरती है। वह इस जगह से भाग भी नहीं सकती। गले में अटकी हुई गाँठ हो या माँ की थकी हुई आँखों का असर, रोटी खाते हुए दीपा की आँखों में चुपचाप आँसू भर आते हैं। साढ़े चार साल की दीपा अपनी माँ के माथे की झुर्री जैसी लगती है।

"जाओ, पानी पी लो और थाली में रखी रोटी को करी के साथ खा लो।"

माँ के शब्दों में कोमलता तो थी, लेकिन हमेशा एक दूरी का भाव बना रहा। दीपा पास की धारा में पानी पीने दौड़ी। बिखरे बालों, गंदी पोशाक और धूल से सने हाथों-पैरों के साथ दीपा हाथों को जोड़कर पानी पी रही थी। पायल अभी भी आंगन में गोबर फैला रही थी। रुक्मिणी ने अपनी दोनों बेटियों को देखकर राहत की सांस ली। कम से कम वह अपनी बड़ी बेटी संध्या का मामला तो सुलझा पाई, जिसकी शादी चार महीने पहले एक सामुदायिक समारोह में हुई थी। संध्या, जिसकी वास्तविक उम्र साढ़े पंद्रह

वर्ष थी, सरकारी दस्तावेजों में अठारह वर्ष बताई गई थी, उसकी शादी बिना किसी परेशानी के सुचारू रूप से संपन्न हो गई। लल्ला के पिता ने पूरी शादी पर एक पैसा भी खर्च नहीं किया, फिर भी उन्हें अपनी बेटी की शादी के लिए नई धोती खरीदने का ख्याल भी नहीं आया। उन कंजूस माता-पिता ने तो नवविवाहित जोड़े को रीति-रिवाज के तौर पर कपड़े देने की भी परवाह नहीं की। रुक्मिणी अपराधबोध से ग्रस्त होकर चुप रही। कन्यादान के दौरान, उसने एक सौ पचास रुपये की साड़ी पहनी थी, जो उसने चुपके से फेरीवाले से बचाई थी, जबकि लल्ला के पिता ने सफेद कुर्ता-पायजामा पहना था। रुक्मिणी को सरकार और धनी परिवारों से संध्या को दान में मिली सभी चीजें अच्छी तरह याद हैं—एक सिलाई मशीन, एक पलंग, एक अलमारी, एक इस्त्री, साड़ियाँ, चांदी की पायलें, एक प्रेशर कुकर, रसोई के बर्तन और वह गैस स्टोव! गैस स्टोव को याद करके रुक्मिणी का दिल कड़वाहट से भर जाता है। जब विदाई का समय आया, तो उसने गैस स्टोव उठाया और उसे घर जा रही ट्रैक्टर ट्रॉली पर रख दिया। लेकिन, साढ़े पंद्रह साल की दुल्हन संध्या ने अपना घूंघट उठाया और सबके सामने उसे रोक दिया।

“अरे अम्मा! हमारा गैस स्टोव वापस कर दो।”

संध्या की इस धृष्टता को देखकर ससुराल के बड़े-बुजुर्ग गर्व से फूले नहीं समा रहे थे, उन्हें विश्वास था कि दुल्हन अपने नए परिवार के प्रति वफादार रहेगी। रुक्मिणी की सारी उम्मीदें

चकनाचूर हो गईं। उसकी कृतघ्न बेटी अपनी बेचारी माँ को गैस स्टोव जैसा उपहार भी नहीं दे सकी। क्या उसे इसी दिन के लिए पाला-पोसा गया था? वह अब कभी अपनी माँ के घर की दहलीज पर कदम नहीं रखेगी! रुक्मिणी कसम खाती है कि वह किसी भी अवसर पर कोई बंडल या चिथड़े नहीं भेजेगी, तभी माता-पिता का असली महत्व समझ में आएगा! ईश्वर करे वह हमेशा अपने ससुराल में गुलाम बनकर ही रहे!

इस घर में ऐसी कोई चीज नहीं है जो इतनी कीमती हो कि उसे बेटी के साथ उसके ससुराल भेजा जा सके!

थकी-हारी रुक्मिणी अपनी बड़ी बेटी को याद करती है, जो घर के सारे काम संभालती थी। लेकिन यादों के साथ-साथ गुस्सा भी उमड़ता है। और जब वह अपने सामने बैठी इन दोनों लड़कियों को देखती है, तो उसका गुस्सा और भी भड़क उठता है। अपनी बेटियों से नज़रें हटाकर वह लल्ला की ओर देखती है, जिसने इतना दूध पी लिया है कि अब उसे थूक रहा है। दीपा के जन्म के बाद, रुक्मिणी को तीन और बार गर्भधारण करना पड़ा, और हर बार गर्भपात कराने के लिए उसे अपने कीमती गहने बेचने पड़े। इन सब बातों ने गाँव वालों की नज़रों में उसकी इज़्ज़त को धूमिल कर दिया है, जो बेशर्मी से उन पाँच अजन्मी बच्चियों के बारे में बातें करते हैं, जिन्होंने उसके घर की चारदीवारी के भीतर अपनी जान गंवाई। उनके लिए तो इस घर का पानी पीना भी गुनाह है!

"माँ?"
अब पायल उसी दूरी बनाए रखते हुए दरवाजे से झाँकती है, जरूरत पड़ने पर भागने के लिए तैयार।
क्या आंगन ढका हुआ है?
"स्कूल जाने का समय हो गया है, मैं वापस जाकर कोट पहन लूंगा।"
“यह खेलने-कूदने और शरारत करने का समय नहीं है। आज स्कूल मत जाओ, पहले पूरे आंगन को घास से ढक दो, फिर पानी ले आना।” रुक्मिणी की आवाज़ में अधिकार का भाव था। उसने आंगन में घास का एक गट्ठा फेंका, बूढ़ी गाय को शेड के नीचे बांध दिया, और अंत में, घर का मालिक चबूतरे पर आराम करने के लिए बैठ गया।
घर के मुखिया लौट आए हैं। रुक्मिणी प्रसन्न मन से कमरे के द्वार पर बैठी हैं और लल्ला को गोद में लिए हुए हैं। उनके पति सुबह-सुबह गाय लेकर निकले थे और अब दोनों लौट आए हैं। गाय ने खूब घास चर ली है, जिससे उसके अगले भोजन के लिए पर्याप्त चारा मिल गया है। रुक्मिणी को पुत्र को जन्म देने की अपनी क्षमता पर गर्व महसूस हो रहा है। लल्ला के आने के बाद से, कभी अय्याश और नशे में डूबे रहने वाले पति की आंखें खुल गई हैं। पिछले दस वर्षों में उन्होंने जुए और नशे में अपनी सारी संपत्ति लुटा दी थी, बीस बीघा जमीन बेचने के बाद उनके पास केवल सात बीघा जमीन ही बची थी।

“आज पानी क्यों नहीं ला रही हो? क्या तुमने पैरों में मेहंदी लगाई है?” रामप्रकाश बीड़ी जलाते हुए कहता है। रुक्मिणी चुप रहना ही समझदारी समझती है, क्योंकि उसे पता है कि कोई भी तीखी प्रतिक्रिया थप्पड़ों की बौछार ही करवाएगी।

“इस बीड़ी का स्वाद फीका है। चिलम लाओ और इसे भर दो,” रामप्रकाश ने आदेश दिया। रुक्मिणी ने झटपट पाइप भरकर उसे दे दिया।

“मुझे खेत पर जाना है। लल्ला की देखभाल कौन करेगा?” रुक्मिणी सवाल करती है।

“अपने बेटे को यहाँ चबूतरे पर रख दो। पहले पानी ले आओ, फिर खेत में जाओ। हमारे बेटे की चिंता मत करो,” रामप्रकाश उसे दिलासा देता है।

“तुम्हें बेवजह परेशानी होगी। ये लड़की रोज़ स्कूल जाने की ज़िद क्यों करती है? वहाँ वो घर के कामों से बचने और लड़कों के साथ हंगामा करने के अलावा और क्या करेगी?” रुक्मिणी ने अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की।

“वो वहाँ क्या करेगी? तुम अनपढ़ मूर्ख! तुम्हें कैसे पता कि रोज़ स्कूल जाना ज़रूरी है? टीचर हाज़िरी लेती है, और अनुपस्थित रहने पर उसे सज़ा मिलेगी। अब जाओ और पानी ले आओ!” रामप्रकाश ने पलटकर जवाब दिया। रामप्रकाश को कभी स्कूल जाने का सौभाग्य नहीं मिला था, लेकिन वो शिक्षा के फ़ायदे जानता है—स्कूल में खाना मिलता है, साल में एक बार

यूनिफ़ॉर्म मिलती है, किताबें मिलती हैं, और सालाना वज़ीफ़ा भी मिलता है! इस साल उसने अपनी बेटी के दो हज़ार रुपये के वज़ीफ़े से अपने लिए दो नए कुर्ता-पायजामा, एक छलनी, तौलिया और प्लास्टिक के जूते खरीदे। तब से, ये दुष्ट औरत उनकी बेटी के स्कूल जाने के खिलाफ़ हो गई है।

जब रुक्मिणी घड़ा लेकर पानी लाने जाती है, तो रामप्रकाश उससे कहता है, "अगर हमारी बेटी को अगले साल छात्रवृत्ति मिल जाती है, तो तुम अपने लिए एक जोड़ी धोती खरीद सकती हो।"

“हूँ! अपनी तनख्वाह से घिसी-पिटी धोतियाँ! आपकी बड़ी बेटी ने हमें कितनी खुशियाँ दी थीं, और यह तो और भी ज्यादा महत्वाकांक्षी है,” रुक्मिणी बड़बड़ाती है, उसका दुबला-पतला शरीर दो बड़े घड़े उठाए हुए है जिन्हें कई बार भरना पड़ता है।

“दीपा, अपने भाई को अपने साथ ले जाओ,” वह निर्देश देती है और अपनी सबसे छोटी बेटी को लल्ला की देखभाल करने के लिए कहती है।

रामप्रकाश चिलम से कश खींचते हुए गहरी, उबड़-खाबड़ सांस लेता है और धुएं का एक बादल छोड़ता है। अपनी ताकत जुटाकर वह आंगन की ओर कदम बढ़ाता है।

इसी बीच पायल जल्दी से नहाती है और स्कूल यूनिफॉर्म पहन लेती है। वह बड़ी कुशलता से अपने बालों की दो सुंदर चोटियाँ बनाती है और फिर किताबों से भरा थैला हाथ में लिए बाहर

निकलती है। कच्ची सड़क पर चलते हुए वह किसी चिड़िया की तरह फुर्ती और शान से आगे बढ़ती है, मानो आसमान में ऊँचा उड़ने की चाह रखती हो। स्कूल के प्रति पायल का प्यार इतना गहरा है कि स्कूल से दूर रहने पर भी उसके मन में स्कूल का ही ख्याल रहता है। हर दिन स्कूल के गेट खुलते ही पायल वहाँ ज़रूर जाती है, चाहे इसके लिए उसे घर पर डांट ही क्यों न खानी पड़े।

वह व्यक्तिगत स्वच्छता के महत्व को समझती है और अपनी सेहत का बहुत ध्यान रखती है। नाखून काटना जरूरी है, इसलिए पायल हमेशा अपने बैग में पन्नी में लिपटा हुआ आधा ब्लेड रखती है, न सिर्फ अपने लिए बल्कि दीपा के लिए भी। दिन में दो बार दांत साफ करना पायल के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना खाना खाना। चाहे बारिश हो या धूप, वह साल के 365 दिन, हर दिन नियमित रूप से नहाती है, चाहे आसमान से ओले ही क्यों न बरसें। साफ कपड़े पहनना उसके लिए अनिवार्य है, और पायल अपने कपड़े धोने के लिए पास के जंगल से जंगली जड़ें इकट्ठा करती है।

स्कूल में पायल जो कुछ भी सुनती और सीखती है, वह उसकी आत्मा में गहराई से गूंजता है और उसके मार्गदर्शक सिद्धांत बन जाते हैं।

पेड़ों की छांव में कक्षाएं शुरू होती हैं। गांव के प्राथमिक विद्यालय के तीन कमरों में से दो सरपंच के कब्जे में हैं, जबकि तीसरा

कमरा भूसे से भरा है और उसमें मवेशी रखे जाते हैं। बचा हुआ एकमात्र कमरा विद्यालय का है, जिसका उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जैसे प्रधानाध्यापक का कार्यालय, स्टेशनरी का भंडार, दोपहर के भोजन की रसोई और वह स्थान जहां 15 अगस्त और 26 जनवरी जैसे महत्वपूर्ण दिनों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। कक्षाएं पेड़ों की छांव में चलती हैं, जहां कुत्ते और आवारा मवेशी खुलेआम घूमते हैं। कक्षा के समय के अलावा, छात्रों को मैदान से गोबर इकट्ठा करते और अपने थैलों के साथ अलग-अलग चादरें ले जाते हुए देखा जा सकता है।

पायल पंक्ति के अंत में एक छिपी हुई जगह पर पहुँच जाती है और पेड़ के नीचे कक्षा में बैठ जाती है। शिक्षक ब्लैकबोर्ड पर प्रश्न लिखते समय उसकी उपस्थिति को देख लेते हैं, लेकिन उसे डांटकर दंडित नहीं करते। यह शिक्षक एक निराश शिक्षाकर्मी हैं जो प्रतिदिन शहर से गाँव तक बस और साइकिल से यात्रा करते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त होने के बावजूद, उन्हें केवल एक असुरक्षित और कम वेतन वाली नौकरी ही मिल पाई है, जबकि ऐसी नौकरियों के लिए भी प्रतिस्पर्धा बहुत कड़ी है, हजारों उम्मीदवार इसके लिए होड़ करते हैं। शिक्षक कभी भी एक दिन भी पढ़ाना नहीं छोड़ते।

प्रश्न अब ब्लैकबोर्ड पर लिखा हुआ है, बच्चे लगन से अपनी नोटबुक में उसे हल करने में जुट गए हैं। लेकिन पायल पीछे क्या कर रही है? शिक्षक की अपने छात्रों के प्रति झुंझलाहट झलकने

लगी है। वह देर से आई थी और अब धूल में खेल रही है। पूरी कक्षा समस्या हल करने में मग्न है। शिक्षक चुपचाप हाथ में एक हरी बर्च की टहनी लिए हुए पास आता है।

“तुम क्या कर रहे हो?” उसने कड़े स्वर में पूछा।

कागज, कलम या पेंसिल न होने के कारण पायल अपना कच्चा काम धूल भरी ज़मीन पर डंडे से लिखती है। शिक्षिका उसकी स्थिति से भलीभांति परिचित हैं, क्योंकि उन्होंने उसे अवकाश के दौरान स्कूल परिसर से कागज़ के टुकड़े इकट्ठा करते देखा है। वह अक्सर दूसरे बच्चों द्वारा फेंकी गई टूटी हुई स्लेट पेंसिलें भी उठा लेती है। पायल हमेशा अपने कच्चे काम के लिए स्लेट का ही इस्तेमाल करती है। आज तो लगता है कि उसके पास स्लेट भी नहीं है।

पायल चुपचाप खड़ी है, उसकी निगाहें सर पर टिकी हैं जो हाथ में छड़ी लिए आगे देख रहे हैं। पूरी कक्षा की निगाहें उसकी ओर मुड़ गई हैं, और वह सबकी जिज्ञासु निगाहों को महसूस कर सकती है। अपने परिवार की गरीबी से वाकिफ पायल अपना सिर झुकाए बैठी है, मानो सबका ध्यान अपनी ओर खींचना चाहती हो।

“जी हां, उत्तर सही है,” सर ने धूल भरे ब्लैकबोर्ड पर हल किए गए प्रश्न के आगे हरे रंग की चाक से सही का निशान लगाते हुए कहा। उनके ये शब्द सुनकर पायल को गहरी राहत मिली।

“शाबाश! ये रहा तुम्हारा इनाम!” सर ने अपनी जेब में हाथ डाला

और दो पेन निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिए।
अंतिम परीक्षाएं नजदीक हैं और पायल अपनी पढ़ाई में पूरी तरह से जुट गई है। यहां तक कि जब वह पढ़ नहीं रही होती, तब भी उसका मन किताबों की दुनिया में डूबा रहता है। घर के काम अक्सर उसकी वजह से प्रभावित होते हैं और उसे अपनी मां अम्मा से मौखिक और शारीरिक दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। फिर भी, पायल का पढ़ाई पर ध्यान अडिग रहता है। उसके चारों ओर छाए अंधकार में, सीखने की उसकी लगन से प्रकाश की एक किरण फूटती है। अंधकार प्रकाश के चारों ओर केंद्रित होता है, और प्रकाश अंधकार को दूर करने पर ध्यान केंद्रित करता है। पायल की पढ़ाई के प्रति लगन ही उसकी मार्गदर्शक शक्ति बन जाती है।
आंगन में लालटेनें चारों ओर रोशनी बिखेर रही हैं। खाना जल्दी से खत्म करके पायल लालटेन के पास अपनी जगह पर लौट आती है और अपनी किताबें और नोटबुक फिर से खोल लेती है। अम्मा, छत पर बने अधूरे कमरे में सोने जाने से पहले, उसे टोकती हैं और पूछती हैं, "पायल, क्या तुमने बर्तन धोकर रख दिए हैं?"
“कल परीक्षा है,” पायल ने बिना सिर उठाए, अपनी किताब पर नजरें गड़ाए जवाब दिया।
पायल की गंभीरता और दृढ़ भाव से रुक्मिणी परेशान हो जाती है, लेकिन देर रात होने के कारण वह किसी तरह अपने गले में

उमड़ते खून को पी जाती है। कमरे में जाने से पहले वह पायल को जल्दी आने के लिए कहती है। उसे यह सुनिश्चित करना है कि उसकी सबसे छोटी बेटी लल्ला सो रही हो। रुक्मिणी को डर है कि अगर इस समय पायल की पिटाई हुई तो उसका पति क्रोधित हो जाएगा और शोर सुनकर पड़ोसी कल उसकी निंदा करेंगे।

दांत पीसते हुए रुक्मिणी राख और रस्सी वाले पोछे से बर्तन साफ करने बैठ जाती है। "इतनी पढ़ाई के बाद तो तुम्हें संग्राहक बन जाना चाहिए!" वह कड़वाहट से बुदबुदाती है।

“देखोगी अम्मा। मैं कलेक्टर बनूंगी,” पायल ने दृढ़ निश्चय के साथ जवाब दिया।

क्रोधित होकर रुक्मिणी ने तीखे स्वर में कहा, “अरे, कितनी धृष्ट लड़की! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे बहस करने की! ऐसा व्यवहार किसी लड़की को शोभा नहीं देता। मेरी बात याद रखना; अगर ये झूठी साबित हुई तो तुम्हारा पति तुम्हें जूतों से पीटेगा!”

“लेकिन अम्मा, आप अपने पति को अमीर क्यों मानती हैं? क्या पशुओं के मालिक को ‘अमीर’ नहीं कहा जाता?” पायल के सवाल से रुक्मिणी अवाक रह गईं, उन्हें कोई जवाब नहीं सूझा। वह बर्तन धोकर ऊपर कमरे में जाना चाहती थीं, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उनके पति सो न गए हों।

“मां?” छोटी दीपा हर रात की तरह सीढ़ियां चढ़ते समय अपनी मां की धोती से लिपट जाती है।

“अम्मा, क्या मैं आपके साथ सो सकती हूँ? बस आज रात के लिए, अम्मा!” दीपा की आवाज़ और उसकी आँखों में दिख रही विनती ने रुक्मिणी का ध्यान खींचा। ऊपर से उसके पति की खाँसी की आवाज़ उसकी बेचैनी को दर्शाती है। यह आखिरी चेतावनी है। रुक्मिणी अपनी धोती का किनारा कसकर पकड़ लेती है, बेबसी का एहसास करते हुए, और सीढ़ियाँ चढ़ जाती है।

“बहन, चलो कमरे में चलते हैं। मुझे अकेले रहने से डर लगता है,” दीपा फुसफुसाती है।

“तुम अपना तकिया ले आओ और यहीं सो जाओ,” वह उस जगह की ओर इशारा करते हुए कहती है। उसकी नज़रें किताब से हट ही नहीं रही हैं।

दीपा आज्ञाकारी भाव से अपना कुशन और तकिया घसीटते हुए आंगन में ले जाती है।

"बहन!"

“अब क्या है?”

मुझे नींद नहीं आ रही है।

"अच्छा, तो फिर पढ़ना शुरू करो।"

एक शिक्षिका की भूमिका निभाते हुए, दस वर्षीय बहन अपनी साढ़े चार वर्षीय बहन को स्लेट पर अक्षर लिखने का काम सौंपती है। कुछ देर लिखने और रंग भरने के बाद, दीपा अपनी बहन की गोद में सिर रखकर सो जाती है। दीपा के लिए उसकी

बहन सिर्फ बहन ही नहीं, बल्कि माँ जैसी है।
शायद आधी रात बीत चुकी है। आसमान का असीम अंधेरा उन पर नज़र रखे हुए है। गांव के आंगन में हल्की रोशनी फैली हुई है।
पढ़ने में मग्न एक लड़की टिमटिमाते दीपक जैसी आभा बिखेर रही है।
लल्ला की मालिश करने के बाद, रुक्मिणी अब उसके लिए दूध तैयार करने गई है। स्कूल के बाद पायल को आंगन में आते देख वह तुरंत कमरे से उसे आवाज़ देती है।
“जाओ, गाय को चारा खिलाओ और उसे पानी के लिए हैंडपंप तक ले जाओ, याद रखना,” वह निर्देश देती है।
"माँ!"
आज पायल आंगन में चुपचाप खड़ी है और कमरे के दरवाजे से झाँक रही है। अपने भीतर व्याप्त भय को पार करते हुए, वह हिम्मत जुटाती है और सीधे अम्मा के पास जाती है।
"यह क्या है?"
“मुझे तुरंत ही ट्यूशन पढ़ाने की नौकरी मिल गई! स्कूल के बाद, मुझे सरपंच के पोते को उनके घर के पीछे एक घंटे पढ़ाना पड़ता है!”
“क्या? तुमने यह कैसे किया...?”
"मैंने पांचवीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।"
रुक्मिणी के हाथ में गुड़ का एक टुकड़ा है और वह सोच रही है

कि क्या वह इसे अपनी बेटी को दे।

अनुराधा दोसाद द्वारा अनुवादित

लीप सेकंड

स्कुच। "मृत्यु के निर्दयी जबड़े एक और जीवन को निगल जाते हैं, इस बार यह युवा और आशावान जीवन है।"

इंजीनियर गुलल, एक सॉफ्टवेयर कंपनी के अपने नवस्थापित कार्यालय में एक महत्वपूर्ण सरकारी परियोजना के लिए सुबह तीन बजे तक काम कर रहे थे। उन्होंने इस परियोजना के लिए इतनी सावधानीपूर्वक तैयारी की थी कि उन्हें पूरा विश्वास था कि कंपनी इसे अवश्य हासिल कर लेगी।

"इस प्रोजेक्ट के बाद कंपनी का नाम खूब चमकेगा। मैं इतनी मेहनत करूंगा कि लोग हमारे काम की सराहना करेंगे; वे काम करवाने के लिए हमारी कंपनी से संपर्क करेंगे... अगले तीन सालों में मैं बैंक का लोन चुका दूंगा—यह तो मुझे करना ही है! मैं कर्मचारियों की संख्या बढ़ाऊंगा, शहर के प्रमुख स्थानों पर कारोबार का विस्तार करूंगा... नहीं, ये सब इंतजार कर सकता है; पहले मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि बिनी के पास उसकी पढ़ाई, फिर उसकी शादी और उससे पहले पापा की सर्जरी के लिए पर्याप्त धन हो—इस पर तुरंत ध्यान देने की जरूरत है... यह प्रोजेक्ट मेरे लिए सब कुछ है। मुझे यह प्रोजेक्ट हर हाल में हासिल करना है!"

इन सब बातों के बारे में सोचते हुए, उसने दिन के लिए, बल्कि

रात के लिए निकलने से पहले दफ्तर पर एक नज़र डाली। क्या कर्मचारियों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे कंप्यूटर बंद थे? क्या शौचालय की लाइट बंद थी? क्या कोई नल खुला रह गया था? कंपनी सिर्फ दो कमरों से चलती थी। छह कर्मचारियों के लिए छह कंप्यूटर। एक कोने में, प्लाईवुड के आधे तख्ते से बना उसका निजी कमरा था, जिसमें एक मेज, कुछ कुर्सियाँ और एक कंप्यूटर था। एक दीवार पर अब्दुल कलाम की एक फ्रेम वाली तस्वीर लगी थी। तस्वीर के कोने में, उसकी लिखावट में एक चिपकाई हुई पर्ची थी जिस पर लिखा था,
अब्दुल कलाम सर कहते हैं, "अपने दिल में एक बड़ा सपना संजो कर रखो।"
घर जाने से पहले, उसने ऑफिस के रोज़ाना के नियम के तौर पर इस तस्वीर और उस पंक्ति पर कुछ पल बिताए। वैसे भी, अगर कभी उसकी नज़र उस पर पड़ भी जाए, तो वह कम से कम एक पल के लिए उसे देखेगा। ऑफिस में मज़ाक चलता था, "बॉस के रूटीन का एक लीप सेकंड!" एक सेकंड: ज़िंदगी का एक पल, फिर भी उससे परे। वह मन ही मन मुस्कुराया और सोचा, "यह लीप सेकंड मुझे ज़िंदगी में सनसनी बना देगा; तुम देखोगे!"
पच्चीस वर्षीय गुलल, मानो पृथ्वी से पच्चीस छलांग सेकंड दूर हो!
अरे नहीं! खिड़की थोड़ी खुली हुई है!

एक शरारती बच्चे की तरह, हवा का एक झोंका चंचलता से कमरे में दाखिल हुआ और एक-दो कंप्यूटर स्क्रीन ऐसे चमक उठीं जैसे कोई शरारती बच्चा नन्हे दांतों जैसी बूंदों से भीग रहा हो। जैसे ही वह खिड़की बंद करने के लिए आगे बढ़ा, एक और नम हवा के झोंके ने उसके बालों को बिखेर दिया और उसके चेहरे पर छींटे मार दिए। बाहर की रात घूंघट में लिपटी अप्सरा की तरह सुंदर थी। जब उसकी सारी जिम्मेदारियां पूरी हो जाएंगी, तब उसकी शादी होगी; फिर ऐसी ही हल्की बारिश वाली रातें होंगी, और ऐसी ही किसी रात कोई उसके मोबाइल पर बार-बार कॉल करेगा। घर पर कोई बेसब्री से उसका इंतजार कर रहा होगा। हर घंटे एक कॉल! हर कॉल, डांट-फटकार, अनुरोध और मीठी-मीठी शिकायतों का मिश्रण! ... वह जरूर इंतजार कर रही होगी, खुले बालों में गुलाबी रिबन बांधे। उसके शरीर में मीठी सी नींद आने लगी, तभी उस सुंदर इंजीनियर ने खिड़की बंद करने के लिए अपना हाथ बाहर बढ़ाया।

स्कुच। "अदम्य जबड़े एक और जीवन पर अपनी पकड़ मजबूत कर लेते हैं, इस बार यह युवा और आशाजनक है।"

उंगलियों में किसी नुकीली चीज चुभ गई। क्या किसी ततैया ने डंक मारा था? नहीं, यह तो बिजली के तार के डंक जैसा था!

पलक झपकते ही उसने अपना हाथ अंदर खींच लिया, और एक सांप, जिसके नुकीले दांत उसकी उंगलियों में बुरी तरह गड़े हुए थे, कमरे के अंदर उड़कर आ गया! क्या यह रसेल वाइपर था?

उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसकी आँखों में एक पल के लिए उदासी छा गई। “नहीं, गुलल!” – शरीर की रक्षा प्रणाली ने प्रतिक्रिया दी। उसने मुट्ठी से साँप का सिर दबाया। दूसरे हाथ से उसने मेज पर रखा सीडी बॉक्स उलट दिया, जिससे डिस्क बिखर गईं...

बस एक पल लगा। सारी सीडी मेज पर बिखर गईं, और सांप डिस्क की जगह रखे प्लास्टिक के डिब्बे में फँस गया। उसने दराज से फाइल बांधने वाला धागा निकालकर अपनी घायल उंगली को कसकर बांध लिया। जहर को फैलने से तुरंत रोकना होगा! कागज काटने वाले चाकू से उसने त्वचा की वह परत छील दी जहाँ सांप के दांत घुसे थे। उसकी आँखों में आँसू भर आए, उसके मुँह से चीखें निकल गईं; यह एक असंभव काम था —अपनी ही त्वचा को छीलना, अपने ही मांस को चीरना, अपना ही खून बहाना। फिर भी, जब किसी की जान खतरे में हो, तो इंसान क्या नहीं करेगा?

कंप्यूटर चालू करने और इंटरनेट पेज खोलने में उसे सामान्य समय से कुछ सेकंड कम लगे। उसने येलो पेज सर्च किया, फिर एंटी-वेनम और भोपाल के उन अस्पतालों के नाम खोजे जहाँ इलाज उपलब्ध था। सबसे पहला नाम पास के सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल का आया।

“बिल्कुल नहीं!” – उस भीषण पीड़ा के बीच भी, उसने मन ही मन कहा।

पेट दर्द जैसी छोटी-मोटी समस्याओं के लिए तो ठीक था, लेकिन अगर किसी की जान खतरे में हो, तो भारत में गरीब और बेसहारा लोगों के अलावा कौन सरकारी अस्पतालों में जाना चाहेगा?

अगला नाम नर्मदा अस्पताल था - जो हबीबगंज रेलवे स्टेशन के पास स्थित था।

हबीबगंज रेलवे स्टेशन?

लालघाटी से हबीबगंज रेलवे स्टेशन की दूरी कितनी थी? शायद पंद्रह किलोमीटर या बीस किलोमीटर? ...और कितना समय बचा था?

वह चारों मंजिलों की सीढ़ियाँ तेजी से नीचे उतरा। एक पल रुककर उसने मदद के लिए चारों ओर नज़र घुमाई—लालघाटी चौराहे की सड़कें सुनसान, शांत और खाली थीं।

कोई नहीं? —उसके साथ कोई नहीं था—सोशल मीडिया पर सैकड़ों वर्चुअल दोस्तों और कॉलेज-स्कूल के दर्जनों पुराने दोस्तों के बीच—कोई नहीं! फिर, रिश्तेदार, परिचित, प्रियजन, सहकर्मी और वह परिवार था जो उसकी जिंदगी था... और फिर भी, इन पलों में, जब मौत उसके करीब थी, कोई उसके साथ नहीं था... कोई मदद नहीं।

गुलल, तुमने सूझबूझ दिखाई!

उनकी सेकंड-हैंड कार आखिरी बार एक बार में कब स्टार्ट हुई थी?

टिक टिक टिक टिक—उसे ठंडे पसीने आने लगे।
टिक टिक—उसकी आँखों में आंसू आ गए।
टिक टिक टिक ग्र्र — एक धुंधली सी उम्मीद।
टिक टिक ग्र्र, इंजन से एक अच्छी सी गूंज निकली —ओह, यह चालू हो गया!
उसने सीडी बॉक्स को डैशबोर्ड पर रखा और कार पूरी रफ्तार से सड़क पर दौड़ पड़ी।
रात के काले बुर्के में लिपटी लालघाटी ने एक युवक को अंधेरे में गायब होते हुए देखा।
आकाश से लगातार पानी टपकता रहा— टप! टप!
क्या वह वापस आएगा?
'यह तो रसेल वाइपर है!'
मुझे बिनी के साथ देखा गया एक टीवी शो याद है। रसेल वाइपर दुनिया के सबसे घातक सांपों में से एक है! इसका जहर जान लेने में सिर्फ एक घंटा लेता है। सबसे पहले, न्यूरोटॉक्सिन खून को दूषित कर देते हैं, फिर सांस लेने में कठिनाई होती है, शायद रक्तस्राव हो या हो सकता है कि दिल पूरी तरह से काम करना बंद कर दे!
जीवन और मृत्यु के बीच फैसला करने के लिए सिर्फ एक घंटा!
उसने अपने मोबाइल फोन की घड़ी देखी; समय सीमा से पंद्रह मिनट बीत चुके थे! मौत बस पैंतालीस कदम दूर थी। कार की रफ्तार बढ़ गई, और साथ ही पानी का बहाव भी तेज हो गया।

पानी पोंछने वाला विंडस्क्रीन वाइपर अचानक अटक गया। किसी दुर्घटना के डर से उसने डैशबोर्ड में हाथ डाला और कुछ सिगरेटें निकालीं—जो उसने ऐसी स्थिति के लिए ही रखी थीं—और दो-तीन सिगरेटों को मसलकर उनका तंबाकू बाहर से विंडस्क्रीन पर बिखेर दिया। अब विंडस्क्रीन फिर से चलने लायक हो गई थी।

जब उसका दिमाग गति, समय और सड़क के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कर रहा था, तभी उसके दिमाग से तीन एक जैसी आकृतियाँ निकलीं और कार में बैठ गईं। दो पीछे और एक उसके बगल में आगे। जैसे-जैसे वह उनकी बातें सुन रहा था, एक-एक करके सभी यात्री साँप से बात करने लगे। ड्राइवर के बगल में बैठा यात्री रसेल वाइपर से बोलने लगा— "जानते हो मैंने तुम्हें कैसे पहचाना? मैंने बिनी के साथ एक टीवी शो देखा था, खास तौर पर साँपों पर। हालाँकि मैं खुद कभी टीवी नहीं देखता। पापा तो हमेशा चैनल बदलते रहते हैं, कभी समाचार, कभी प्रवचन। लेकिन कभी-कभी बिनी उनसे रिमोट छीनकर जानवरों से जुड़ा कोई चैनल लगा लेती है। वह कहती है, 'मैं हर समय इंसानों को देखकर थक जाती हूँ।' मुझे उसकी इस अनोखी मनोरंजन की पसंद पर सबसे ज़्यादा हंसी आती थी। 'बिनी, तुम्हें डॉक्टर नहीं, पशु चिकित्सक बनना चाहिए—पशु विशेषज्ञ! हा हा!'"

वक्ता ज़ोर से हंस पड़ा। उसकी आँखों में आंसू आ गए। दीवार पर अपना सिर पटकते हुए गुस्से से भरे उस साँप को संबोधित

करते हुए, जो डिब्बे में बंद था, उसने उदास स्वर में कहा, “बिनी मेरी छोटी बहन है। वह मुझसे चार साल छोटी है। वह शिक्षा ऋण लेकर एमबीबीएस कर रही है। मैंने उससे कहा है कि ऋण की चिंता न करे। बस मन लगाकर पढ़ाई करे और खुश रहे। मैं, बड़ा भाई, उसकी हर चिंता का ख्याल रखूंगा। बस मुझे अपनी कंपनी को बाजार में मजबूती से स्थापित करने दो और फिर एमबीबीएस के बाद, उसे एमडी करना है और फिर किसी साथी डॉक्टर से शादी करनी है। आखिर वह मेरी इकलौती बहन है। मैं उसकी शादी बड़े धूमधाम से मनाऊंगा, पूरी दुनिया देखेगी... तुमने सब बर्बाद कर दिया, दोस्त!” उसकी आवाज भर्रा गई और वह बगल के शीशे से बाहर देखने लगा। डिब्बे के अंदर का साँप एक बार फिर हमला करने के लिए कुंडली मारकर खड़ा हो गया।

वह रॉयल मार्केट—इमामी गेट, कमला पक्ष रोड और अब पॉलिटेक्निक चौराहा पार कर चुका था; और जीवन के कितने अनमोल पल बीत गए थे? फिर उसने घड़ी की ओर देखा—

सिर्फ बारह मिनट!

“हिम्मत रखो, गुलल!”

उसने मन ही मन सोचा, "अगर वह समय पर अस्पताल नहीं पहुंच पाया, तो कल अखबार में एक तस्वीर छपेगी - 'कार की ड्राइवर सीट पर एक युवक मृत पाया गया, जिसका शरीर नीला पड़ गया था'।"

ठंडा नीला खून? नहीं! नसों में अभी भी गर्म लाल खून बाकी है। अगर वह कर सकता, तो कार को उड़ा देता।

अब दाहिनी पिछली सीट पर बैठा एक और गुलाल, सांप से बातचीत करने लगा।

“आप मेरे पिता को नहीं जानते। अगर जानते तो मुझे बख्श देते... दस साल पहले उनकी बाईपास सर्जरी हुई थी। अब उन्हें वही तकलीफ हो रही है। डॉक्टरों ने उनकी नसों में रुकावट बताई है; उन्हें एक और ऑपरेशन की ज़रूरत है। ऑपरेशन से उनकी उम्र में आठ से दस साल और जुड़ सकते हैं। लेकिन मेरे पिता ऑपरेशन करवाने से इनकार कर रहे हैं। उनका कहना है कि हमारे पास जो कुछ भी थोड़ा-बहुत है, हमारा घर और ज़मीन, वह हम भाई-बहनों के लिए है, उनके लिए नहीं... उनका ऑपरेशन इसी साल होना ज़रूरी है। मैं सोच रही थी कि अगर मुझे यह प्रोजेक्ट मिल जाए तो अगले महीने मैं पिताजी को दिल्ली ले जाऊंगी; लेकिन अगर आज मेरी मौत हो जाए तो ऑपरेशन का सवाल ही नहीं उठेगा; मेरी मौत की खबर सुनते ही उनकी भी मौत हो जाएगी!”

यह कहते ही वक्ता चुप हो गया और बाहर देखने लगा, वहीं गुलल ने स्टीयरिंग व्हील को कसकर पकड़ लिया।

कार न्यू मार्केट से तेज़ी से गुज़री और झट से लिंक रोड नंबर 1 पर चढ़ गई, लेकिन वहाँ से उसकी रफ़्तार धीमी होती चली गई। थकान उसके शरीर में घर कर रही थी। उसका सिर भारी हो

गया। 'समय? समय ही जीवन है, और जीवन अभी भी मेरे हाथों में है... क्या समय भी? केवल आठ मिनट बचे हैं।'

“गुलाल! अरे, गुलल! सो मत जाना!! अभी मीलों का सफर तय करना है...”

आधी चेतना और आधे उन्माद की स्थिति में गाड़ी चलाते हुए, गुलल को कुछ दिखाई दे रहा था—सड़क के दृश्य कुछ धुंधली छवियों के साथ मिश्रित थे:

स्कूल के दोस्तों के प्यारे चेहरे, मेहनत, लगन और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से भरे मासूम दिन, कॉलेज की खूबसूरत सहपाठियाँ, वो लड़की जो हमेशा अपने खुले बालों के जूड़े में गुलाबी रिबन बाँधती थी। वही लड़की जिसे किसी और ने अपना बना लिया था। कैंपस सिलेक्शन के बाद उसने क्या कहा था, “क्या हम फिर कभी नहीं मिलेंगे गुलल?”...

“स्कुछ”—उसने अपना हाथ खींचा, और रेंगता हुआ सांप अंदर उड़कर आ गया।

अब चौथे गुलाल ने अपने मन की बात सांप से साझा की।

“मैं आपको अपने बचपन की एक घटना सुनाता हूँ; कौन जाने ये मेरे आखिरी पल हों! इस अंतिम क्षण में, मैं अपनी माँ को याद करना चाहता हूँ। यह तब की बात है जब मैं लगभग पाँच साल का था। हम कॉलोनी की सड़क पर क्रिकेट खेल रहे थे। मैं गेंद लेने दौड़ा, तभी अचानक एक तेज़ रफ़्तार मोटरसाइकिल ने मुझे टक्कर मार दी। मेरे शरीर के एक हिस्से पर चोट लग गई। पड़ोस

की आंटी ने मुझे प्राथमिक उपचार दिया, पट्टी बाँधी और घर ले गईं। लेकिन घर पहुँचकर मैंने क्या देखा? मेरी माँ बाड़ के पास बेहोश पड़ी थीं और छोटी बिनी उनके बगल में रो रही थी। पड़ोस के किसी बच्चे ने उनसे झूठ बोला था कि गुलल का एक्सीडेंट हो गया है और...”

उनका गला भर आया। बोलते-बोलते उनकी आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने कहा, “मेरी माँ को अस्पताल ले जाना पड़ा। वो इतनी सदमे में थीं कि लगभग कोमा में चली गई थीं। उन्हें ठीक होने में पूरा एक महीना लग गया। उस समय मैं सिर्फ पाँच साल का था, और अब मैं पच्चीस साल का आदमी हूँ। सोचो उनका दिल कितना टूट गया होगा। मेरी माँ बहुत भावुक हैं, दोस्त, वो...!”

भावहीन होकर चुप हो जाने के बाद, अंतिम वक्ता भी बाहर के सन्नाटे में देखने लगा। गुलल को अपने सीने में दर्द महसूस होने लगा।

“सुनो, तुम सब...” — उसने अपने तीनों जुड़वां बच्चों के चेहरे देखने की कोशिश की।

कौन?

कहाँ?

कार में केवल दो ही सच थे - गुलल जो गाड़ी चला रहा था और वह सांप जिसने डिब्बे के अंदर अपना जहरीला फन फैला रखा था।

एमपी नगर चौराहे से उसने अभी-अभी दाहिना मोड़ लिया ही था कि... तभी गाड़ी अचानक रुक गई!

क्र्र्र्र
क्र्र्र्र
क्र्र्र्र
क्रर्रर्र

नहीं, अब ज़्यादा समय नहीं बचा था! शायद सिर्फ़ बीस मिनट ही बचे थे। मौत बस एक फ़रलैंड पीछे थी, मानो उसकी गर्दन पर साँसें फूंक रही हो।

उसने डिब्बा उठाया और सड़क पर दौड़ पड़ा।

तेज़ बारिश ने दुनिया पर एक गीला पर्दा डाल दिया था जिससे कुछ भी साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था। शायद वह सुबह अखबार बांटने वाली जीप थी—एक धीमी गति से चलने वाली, सामान लादने वाली ऑटो रिक्शा। अगर वह थोड़ा तेज़ दौड़ता, तो शायद उसे पकड़ लेता।

वह फुटबोर्ड पर चढ़ गया और पिछले दरवाजे से लटक गया। उसका हाथ धीरे-धीरे फिसल रहा था।

उसे अपने सीने में जकड़न महसूस होने लगी, मानो कोई अदृश्य अजगर उसके चारों ओर लिपटकर उसकी सांसें रोक रहा हो... अजगर नहीं, बल्कि रसेल का विषैला साँप!

वह लगातार अपनी कामुक इच्छाओं को हवा देता रहता था:

“बस थोड़ा इंतजार करो, अस्पताल नजदीक ही है!”

और सचमुच, अस्पताल बस आने ही वाला था। बाईं ओर हबीबगंज रेलवे स्टेशन था, और दाईं ओर जगमगाता नर्मदा अस्पताल।

अरे नहीं! अखबार वाली जीप रेलवे स्टेशन की ओर मुड़ गई! वह धीमी गति से चल रहे वाहन को छोड़कर अस्पताल की ओर जाने वाली सड़क पर दौड़ पड़ा।

कार में छूटे मोबाइल फोन की घड़ी खालीपन की ओर बढ़ते समय का संकेत दे रही थी। कौन जानता था कि जीवन के हाथों में कितना समय बचा है? समय का एकमात्र मापक उसकी कमजोर साँसें थीं... साँसें जो तेज़, छोटी और छोटी होती जा रही थीं! मृत्यु, जो उसके पीछे थी, किसी भी समय गुलल को अपनी गिरफ्त में ले सकती थी... माँ का गुलल... पिता का गुलल... बड़ा भाई गुलल, नन्ही बिनी के लिए पिता समान गुलल...

“चिंता मत करो, छोटी बहन। बस पढ़ाई करो और खुश रहो। मैं तुम्हारी सारी चिंताओं का ख्याल रखने के लिए यहाँ हूँ!”

उसके कदम लड़खड़ाने लगे। सांस लेना दर्दनाक हो गया और उसका शरीर नीला पड़ने लगा।

उसे दाईं ओर मुड़ना पड़ा—अस्पताल सामने था! मुड़ने से पहले ही उसकी ताकत जवाब दे गई। वह गिर पड़ा। सांपों से भरा डिब्बा सड़क पर फिसल गया।

वह जमीन पर बेजान पड़ा था। उसके पीछे, गहरे नीले रंग की

सड़क से कुछ चेहरों ने उसे पुकारा:
खुले बालों में गुलाबी रिबन बांधे एक लड़की उदास खड़ी थी।
“क्या हम फिर कभी नहीं मिलेंगे, गुलल?”
पिताजी दर्द से बेबस होकर छटपटा रहे थे, अपना सीना पकड़े हुए थे।
“बेटा!”
उसकी बहन बुरी तरह रो रही थी।
"भाई!"
और उनकी मां, जो उन्हें सबसे ज्यादा प्यार करती थीं,
“मेरा बच्चा!”
एक छलांग का क्षण: जीवन का एक पल, जीवन से परे... फिर, अपनी आँखें खोलकर और अपनी पूरी ताकत समेटकर, उसने खुद को संभाला।
मैं अभी मर नहीं सकता! मुझे बहुत सारी जिम्मेदारियां निभानी हैं!
वह लड़खड़ाते हुए उठा। उसने सांपों से भरा डिब्बा उठाया और फिर भागा, शायद इस बार उसके संक्रमित फेफड़ों में सांस भी नहीं बची थी। वह फिर गिर पड़ा। उसकी आखिरी सांस निकल गई और उसका शरीर नीला पड़ गया।
वह अस्पताल की सीढ़ियों पर गिर पड़ा।
जब उसे होश आया, तो उसके माता-पिता और बहन उसके चारों ओर थे। ऐसा लग रहा था मानो पिछले कुछ दिनों से रोते हुए उन

तीनों चिंतित चेहरों को अब मुस्कुराने का एक कारण मिल गया हो। उसकी कलाई में एक सुई लगी थी, जिससे सलाइन का इंजेक्शन लगाया जा रहा था। जूनियर डॉक्टर उसका रक्तचाप जांच रहे थे।

“अब सब ठीक है। मैं नर्स को ड्रिप हटाने के लिए भेज दूंगी। अब आप पूरी तरह स्वस्थ हैं।”

“रसेल के विषैले सांप के बारे में क्या...?”

“हमने आपके दोस्त को वनविहार राष्ट्रीय उद्यान भेज दिया है। आप उसके बारे में चिंता न करें।”

डॉक्टर ने आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी और कमरे से बाहर चले गए।

प्रितेश चक्रवर्ती द्वारा अनुवादित

पापा जल रहे हैं

"आपने मुझे अभी तक लंच बॉक्स नहीं दिया है, मैं अब जा रहा हूँ," वंश ने गैलरी में अपने जूतों के फीते बांधते हुए कहा।

“बस हो ही गया! आज स्कूल बस देर से आई। मैं बच्चों को अकेला कैसे छोड़ सकती थी? ये लो तुम्हारा टिफिन।”

लंच बॉक्स लेकर आगे बढ़ते हुए पति के कदम अचानक रुक गए।

“यह साड़ी!”

उनकी पत्नी, जो अभी-अभी नहाकर आई थीं, ने तारों के पैटर्न वाली भूरे रंग की सीक्वेंस वाली साड़ी पहनी हुई थी।

“मैंने कल अपनी साड़ियाँ धूप में सुखाई थीं, आज मैंने पहनने के लिए एक निकाली। मेरी शादी की साड़ियाँ तो सालों से ठीक से पहनी ही नहीं हैं। आप क्या सोच रही हैं? क्या अब आपको ऑफिस जाने में देर नहीं हो रही?”

उसके पति ने कुछ नहीं कहा। उसने अपना बैग उठाया और जाते समय पीछे मुड़कर नहीं देखा।

वह प्रशंसा के कुछ शब्द सुनने की उम्मीद कर रही थी और सोच रही थी कि उसका पति इन दिनों इतना अनमना व्यवहार क्यों कर रहा है:

“क्या आजकल उनके पास काम का बोझ बढ़ गया है? शायद उन्हें अपने भारी भरकम गृह ऋण की चिंता सता रही है। कल उनकी मां का फोन आया था। उनसे बात करते ही उनकी मां की बातें उनके दिमाग में गूंज उठती हैं! ‘आपने अपनी जीवन भर की बचत गुजरात में घर खरीदने में क्यों बर्बाद कर दी? आपकी दो बेटियां हैं, कोई बेटा नहीं जो आपके साथ रहे। अच्छा होता अगर आप अपने भतीजे की पढ़ाई में निवेश करते। आखिर सेवानिवृत्ति के बाद आपको यहीं तो लौटना है!’ हां, शायद इसीलिए ऐसा लगता है कि वह दूर-दूर रहते हैं या हमें छोड़कर जाने वाले हैं, जबकि हम साथ रहते हैं।”

उसने अपने विचारों को झटक दिया और घर के कामों में जुट गई। उसका दिन बाकी दिनों की तरह ही व्यस्त और संतुष्टि भरा बीत रहा था। उसकी दोनों बेटियाँ स्कूल से लौट आईं।

"मम्मा, मुझे खांडवी खानी है," साढ़े तीन साल के मनु ने चहकते हुए कहा।
"क्या मुझे दुकान से दही मिलेगा?" पांच साल की तनु ने बड़ों की तरह पूछा।
“अपनी वर्दी बदल लो, मैं जाकर लाती हूँ।”—अपने बच्चों की रक्षा करना ही इस माँ के जीवन का एकमात्र उद्देश्य था।
अपना पर्स लेकर वह दही खरीदने चली गई।
दुकान पर उसकी मुलाकात अपनी पड़ोसी कोकिला से हुई, जो हमेशा की तरह बातचीत करने के लिए आगे आई;
“आज आपने बहुत सुंदर साड़ी पहनी है। लगता है ये आपकी शादी के गहनों में से एक है। वैसे भी ये साड़ियां ज्यादा काम की नहीं होतीं। आपने इन्हें उतारकर अच्छा किया। मुझे भी ऐसा ही करना चाहिए...”
इसे तो हर बात जानने की इच्छा होती है, दूसरों से जुड़ी हर बात! सरगम ने अपनी निजता का ख्याल रखते हुए कुछ नहीं कहा। दही लेकर वह घर की ओर चल पड़ी।
मध्य प्रदेश के छोटे से कस्बे में अपने ससुराल में, वह महीनों तक सूरज की एक किरण देखने के लिए तरसती रहती थी। उसे दिन भर कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी और फिर भी दो बेटियों को जन्म देने के कारण अपनी सास और बड़ी ननद की ताने भरी निगाहों को सहना पड़ता था। इसके अलावा, उसकी ननद अपने बेटे को उससे इस तरह बचाती थी कि उसे इन सब बातों से डर

और अनिश्चितता महसूस होती थी। इसीलिए, पिछले साल जब उसके पति ने गुजरात में उनके लिए एक स्थायी घर बनाने के लिए गृह ऋण लेने की इच्छा व्यक्त की, तो उसे लगा मानो उसकी सारी प्रार्थनाएँ पूरी हो गई हों। गुजरात में बसने के बाद, उसे छोटे-छोटे काम करने पड़ते थे, जैसे दही लाना। साथ ही, वह स्कूल में शिक्षक के पद के लिए बायोडाटा तैयार करने और किसी तरह अपने पति को नौकरी करने की अनुमति देने के लिए मनाने का भी साहस रखती थी! घर के कामों में मग्न सरगम अपनी बेटियों को खाना परोसती थी। उसकी छोटी बेटी खाने में नखरे करती थी, लेकिन बहुत फुर्तीली थी! उसने अपनी बच्ची को अपने हाथों से खिलाना शुरू कर दिया।

अपनी बेटियों के साथ टेलीविजन पर कार्टून देखते हुए सरगम जोर से हंस पड़ी, उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि आगे चलकर उस पर क्या मुसीबत आने वाली है। तभी उसका मोबाइल बज उठा।

“नहीं!” अपने पति के हादसे के बारे में सुनकर वह मानो स्तब्ध रह गई। सदमे और आघात से व्याकुल होकर वह कुछ क्षणों तक खड़ी रही।

“मम्मा! मम्मा!” जब उसकी बेटियों ने उसे हिलाकर जगाया तो वह होश में आई।

“तुम दोनों घर के अंदर ही रहो। अगर किसी चीज की जरूरत हो तो आनंदीबेन आंटी के घर चले जाना, ठीक है? तनु, तुम मुझे

फोन कर पाओगी ना?”
“जी हां, मम्मी।”
उसने अपना पर्स और स्कूटर की चाबियां उठाईं। उसकी दोनों बेटियां उसके चिंतित चेहरे को देख रही थीं।
“मम्मी, आप कहाँ जा रही हैं?”
“वे तुम्हारे पापा को अस्पताल ले जा रहे हैं। तुम दोनों बहनें दरवाजा बंद कर लो और अंदर ही रहो।”
जाने से पहले, उसने अपनी पड़ोसी आनंदीबेन से अपनी बेटियों पर नजर रखने का अनुरोध किया।
जब वह अस्पताल पहुंची, तो उसने पाया कि उसके पति को आईसीयू में भर्ती कराया गया है। कार्यालय जाते समय उनका एक्सीडेंट हो गया था। उनकी जान बचाने के लिए तुरंत ऑपरेशन करना जरूरी था। काउंटर पर मौजूद लोगों ने उनसे कागजात पर हस्ताक्षर करने को कहा और उन्हें भुगतान की जाने वाली राशि के बारे में बताया। अस्पताल के लोग जब उन्हें ऑपरेशन की प्रक्रिया के बारे में बता रहे थे, तो उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।
उसने पहले अपने पति के दफ्तर में फोन किया और फिर अपने ससुराल वालों को। जब उसकी ननद को पता चला कि उसे अपने पति के ऑपरेशन के लिए तुरंत तीन लाख पचहत्तर हजार रुपये की जरूरत है, तो उसने फोन काट दिया।
उसके पति के सहकर्मी एक घंटे में पहुँच गए। वे अपने साथ

पचहत्तर हजार रुपये लाए थे—पचास हजार कंपनी से और पच्चीस हजार उन्होंने आपस में जमा किए थे।
लेकिन बाकी के तीन लाख रुपये कहां से आएंगे? वो भी तुरंत?
उनके पति की सारी बचत पिछले साल लिए गए डुप्लेक्स में लगी हुई थी। उस भारी-भरकम कर्ज को जल्द चुकाने की उम्मीद में उन्होंने घर में कोई भी कीमती सामान नहीं रखा था।
गहने? जी हाँ, उसके पास गहने थे! और वे तो ऐसे समय में ही काम आते।
वह दौड़कर घर चली गई।
दोपहर के समय शांति थी।
वह अभी दरवाजे तक पहुंची ही थी कि उसे अपनी बेटियों के रोने की आवाज सुनाई दी।
“मम्मी, बिजली नहीं है और आपने हमें दरवाजे न खोलने के लिए कहा था, इसलिए मनु रोने लगी।”
“तो फिर तुम उसके साथ रोने क्यों लगीं? तुम अपनी बहन के साथ पास ही स्थित आनंदीबेन के घर जा सकती थीं।”
"हम गए थे लेकिन उसके दरवाजे पर ताला लगा हुआ था और जब मैं वापस आकर दरवाजे पर कुंडी लगाई तो वह रोने लगी।"
"ठीक है।"
उसने खिड़की से बाहर अपने पड़ोसी के घर की ओर देखा, जो बंद था। हालाँकि उसने आनंदीबेन को सारी स्थिति बता दी थी और उनसे मदद की गुहार भी लगाई थी, जिनसे उसका अच्छा

रिश्ता था और जो अक्सर उसके घर से कुछ न कुछ उधार देती थीं... क्या इस अनजान शहर में कोई ऐसा नहीं था जिसे वह अपना कह सके?

"तुम दोनों मेरे साथ अस्पताल चलो।"

वह अपने कमरे में गहने समेट रही थी तभी उसने अपने दरवाजे पर दस्तक सुनी। बाहर उसकी पड़ोसी कोकिला खड़ी थी, जो दो घर छोड़कर रहती थी।

"कोकिलाबेन, कृपया बाद में आइएगा, मुझे अभी एक आपातकालीन काम है।"

“मैं यही पूछने आया हूँ। क्या आपको कोई परेशानी है? मेरे बेटे, बिट्टू ने सड़क के उस पार से आपकी बेटियों के रोने की आवाज सुनी।”

“नहीं, बस...” वह सोच रही थी कि उसे कहना चाहिए या इसे ऐसे ही छोड़ देना चाहिए।

“अगर आपको कोई भी परेशानी हो, तो बेझिझक बताएं, हम आपकी मदद के लिए यहां हैं!”

“कोकिलाबेन, क्या आप किसी सुनार का नाम बता सकती हैं? जब से हम यहां आए हैं, हमें किसी सुनार के पास जाने का मौका नहीं मिला है।”

कोकिला ने स्वेच्छा से उसकी मदद की। उसने अपनी बड़ी बेटी को सरगम की दो बेटियों की देखभाल के लिए भेजा और खुद एक भरोसेमंद सुनार की दुकान पर उसके साथ गई। सरगम की

बातें सुनकर सुनार ने कहा,
"बहन, अपनी चीजें यहां उधार दे दो और जब तुम्हारे पति पूरी तरह से ठीक हो जाएं, तो अपने गहने वापस ले लो।"
“नहीं, भाई साहब, जब वह ठीक हो जाएंगे, तो वह मेरे लिए नए गहने जरूर बनाएंगे।”
उसने अपने गहने बेचकर तीन लाख सत्ताईस हजार रुपये कमाए। वह वापस लौट आई।
सरगम अपनी बेटियों को साथ लेकर सभी दरवाजे और खिड़कियाँ बंद करते हुए घर से बाहर निकलीं। तभी उन्हें लगा मानो घर की आत्मा ने उनसे फुसफुसाकर कहा हो कि वे अब कभी वापस नहीं लौट पाएंगी! उन्हें अचानक ऐसा महसूस हुआ जैसे घर के अंदर की चीजें उनकी अपनी नहीं हैं, मानो उन्हें बस फेंक दिया जाना है। उन्होंने सोचा कि शायद उन्हें ऐसा इसलिए लग रहा है क्योंकि वे किसी सदमे से गुज़र रही हैं। उन्होंने सामने का दरवाजा बंद किया और जाने से पहले घर की तरफ मुड़कर देखा।
कोकिला को चाबियां सौंपते हुए उसने कहा, "मुझे नहीं पता कि मैं कब लौट पाऊंगी; कृपया यदि आप कर सकें तो घर में कुछ अगरबत्ती और दीपक जला दें।"
“चिंता मत करो। और अगर तुम्हें किसी और चीज की जरूरत हो तो मुझे बता देना। तुम्हारी बड़ी बहन यहीं है!”
सरगम ने उसे गले लगाया; समय बीतता है लेकिन शब्द बने

रहते हैं!

वह अपनी बेटियों के साथ अस्पताल पहुंची और काउंटर पर रकम जमा कर दी, जिसके बाद ऑपरेशन शुरू हुआ।

उसने बार-बार सबको फोन किया लेकिन किसी ने फोन नहीं उठाया—क्यों? आखिरकार, आठवीं बार में उसकी भाभी ने फोन उठाया।

“आप सरगम को तो जानती ही होंगी; आपके जीजाजी का कारोबार आजकल थोड़ा डगमगा रहा है। हम किराए के मकान में रहते हैं। हमारा मोक्ष शिक्षा ऋण लेकर पढ़ाई कर रहा है। हम जैसे-तैसे गुजारा करते हैं और कभी-कभी वंश भैया से मदद की उम्मीद करते हैं। आपको पैसों का इंतजाम खुद ही करना होगा। बार-बार यहाँ मत आना।”

“कृपया मुझे भाई साहब से बात करने दीजिए।”

“वह और अम्मा आज सुबह चार धाम के लिए रवाना हो गए हैं,” यह कहकर उनकी भाभी ने फोन काट दिया।

इसके बाद सरगम ने अपने माता-पिता को फोन किया। उसके माता-पिता, जो उम्रदराज थे और पांच बेटियों के पिता थे, अपनी सबसे बड़ी बेटी की दयनीय स्थिति देखकर रो पड़े और उसे यथासंभव सांत्वना देने की कोशिश की।

सरगम ने सारी उम्मीदें त्याग दीं और आकाश की ओर टकटकी लगाए खड़ी रही। उसने अपने पति के जीवन के लिए प्रार्थना की, बदले में उसने जो भी अच्छे काम किए थे, उनका फल उसे

मिल जाए... और आकाश मौन रहा!

ऑपरेशन जारी रहा। उसे अचानक कुछ दिन पहले ऑफिस पिकनिक की याद आ गई—कि कैसे वंश बाल-बाल सांप के काटने से बचा था। उसने उस रात उससे वादा करवाया था,

“अगर मुझे अचानक कुछ हो जाए, तो महाकालेश्वर मंदिर में मेरी अंतिम संस्कार की रस्में पूरी कर देना। ऐसा कहा जाता है कि असमय मृत्यु से पीड़ित आत्माओं को महाकालेश्वर में शांति मिलती है। मुझे वहाँ ले जाना—तुम्हें मुझसे वादा करना होगा!”

वह इस तरह क्यों बोल रहा था? क्या भाग्य उसके मुख से बोल रहा था? और जो भाग्य में लिखा था उसे बदला नहीं जा सकता था? नहीं, नहीं! हमने कभी किसी को नुकसान नहीं पहुँचाया—तो हमें इस तरह क्यों भुगतना पड़ रहा है? वह ठीक हो जाएगा और घर लौट आएगा। उसका मन उसे दिलासा देने की कोशिश कर रहा था। वह दुविधा में थी—एक तरफ उसका मन था जो केवल शुभकामनाओं के बारे में सोचना चाहता था और दूसरी तरफ उसका मन उसे सबसे बुरे के लिए तैयार कर रहा था।

अगर इस दुर्घटना के कारण उसकी नौकरी चली गई तो क्या होगा? तब क्या होगा? उसके मन ने दृढ़ता से जवाब दिया—तब वह अपना शेष जीवन उसकी देखभाल में बिताएगी।

लेकिन अगर उसकी जान चली गई तो? ...उसका दिल ऐसे कांप रहा था मानो उसके हाथ किसी पहाड़ी से फिसल रहे हों। इस बार उसके भीतर से कोई स्पष्ट जवाब नहीं मिला। उसने उन

आंसुओं को रोकने की कोशिश की जो उसे पूरी तरह से घेरने वाले थे।

उसके पति के सहकर्मियों ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की और अगले दिन वापस आने का वादा करके वे एक-एक करके चले गए। उसकी दोनों बेटियाँ ऑपरेशन थिएटर के बाहर खेल रही थीं। उसने अस्पताल के गलियारे से शाम के आकाश में अंधेरा छाते देखा। उसने सूरज को ढलते हुए देखा।

डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर से बाहर आए। सरगम उम्मीद से भरी हुई दौड़कर उनके पास गई।

मुझे खेद है। मरीज को पहले ही बहुत खून बह चुका था!

"आपका क्या मतलब है?"

नहीं! ऐसा नहीं हो सकता! कैसे? कैसे? —जब उसने ऑपरेशन थिएटर से शव को बाहर लाते देखा तो वह बार-बार यही दोहराती रही।

सरगम कब तक रोती रह सकती थी? उसकी दोनों बेटियाँ रो रही थीं। अस्पताल के कर्मचारियों ने उससे कहा था कि वह शव को वहाँ से जल्द से जल्द ले जाए। उसके पास अपने चेहरे से बहते आँसू पोंछने का भी समय नहीं था।

समय! यह कितना क्रूर था!

जब उन्हें उनके पति का मृत्यु प्रमाण पत्र सौंपा गया, तो वह अपने पिता को फोन कर रही थीं।

“पापा, उसने मुझसे वादा करवाया है कि मैं उसे उज्जैन के

महाकालेश्वर स्थित श्मशान घाट ले जाऊंगी।”
"तुम उस जगह के लिए निकल पड़ो; हम किसी न किसी तरह वहां पहुंच जाएंगे।"
उसकी मां ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “बेटा, उसका शुगर लेवल बहुत ज्यादा है, वो उठ नहीं पा रहा है। तुम कुहू को क्यों नहीं बुलाती? कुहू और प्रदीप जरूर वहां पहुंच जाएंगे।”
उसने केरल में रहने वाली अपनी बहन और बहनोई को फोन करने के बारे में नहीं सोचा। वह बाहर आई और अस्पताल परिसर में शव वाहन की तलाश करने लगी, उस व्यक्ति की तलाश में जो कभी उसे शादी की गाड़ी में उसके घर से लेकर आया था।
उज्जैन के महाकालेश्वर श्मशान घाट तक पहुंचने में कितना खर्च आएगा?
"बीस हजार।"
नहीं, इसे छोड़ दो।
जब वह दूसरी वैन की ओर बढ़ी, तो पहली वैन उसके पीछे-पीछे चली गई।
आप मुझे पंद्रह दे सकते हैं।
मुझे दो कारों की जरूरत है। एक शव वाहन और एक छोटी वैन।
आप कितना दे सकते हैं?
“बारह—बारह हजार।”
“तुम दोनों को जोड़कर मुझे पच्चीस हजार दे दो। आओ।”

“पच्चीस हज़ार!” उसने एक पल सोचा। उसके पर्स में केवल सत्ताईस हज़ार थे। क्या उसे फिलहाल के लिए एक शव वाहन किराए पर ले लेना चाहिए? उसने अपनी दोनों बेटियों पर नज़र डाली। वे दबी हुई थीं, अपने आस-पास के माहौल से थोड़ी डरी हुई थीं, एक-दूसरे से चिपकी हुई थीं।

“ठीक है, पच्चीस हजार। चलिए चलते हैं।”

“लाश कहाँ है?”

दोनों ड्राइवर आ गए। उसने अपनी दोनों बेटियों को वैन में बिठा दिया। वह अपनी बेटियों को अपने पिता के मृत शरीर के साथ पूरी रात का सफर बिताने के सदमे से बचाना चाहती थी।

“तनु... तुम दोनों सोने की कोशिश करो। मैं वहीं कार में हूँ। तुम सामने वाली मेरी कार को कभी भी देख सकती हो। अकेले डरना मत... तुम्हारी मम्मी तुम्हारे साथ हैं... पापा भी!”

दोनों लड़कियां किसी भी कीमत पर उसे छोड़ना नहीं चाहती थीं। उसने किसी तरह उन्हें छोटी वैन की पिछली सीट पर लिटाया, उन्हें फुसलाया, डांटा और चादर ओढ़ा दी। वे जल्द ही सो गईं; फिर, खुद को संभालते हुए, वह किसी तरह शव के साथ शव वाहन में बैठ गई और दोनों गाड़ियां अपनी यात्रा पर निकल पड़ीं।

ठीक पीछे वह वैन थी जिसमें उसकी दो बेटियाँ बैठी थीं, वे बच्चियाँ जिन्हें उसने कभी अकेले पास की दुकान तक भी नहीं भेजा था। वे पूरी रात उस गाड़ी में अकेली रहेंगी—और उनकी

रक्षक, उनकी माँ? वह भी अकेली थी! निहत्थी! असहाय! सरगम ने शव का हाथ थाम लिया।

उसके हाथ कितने ठंडे थे! उसके हाथों में जीवन की गर्माहट थी! उसने अपना चेहरा उन ठंडे हाथों में छिपा लिया और रोने लगी।

अचानक, उनके पीछे आ रही कार ने उन्हें ओवरटेक किया और रुकने का इशारा किया। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह क्यों रुका?

आपकी बेटियां बहुत जोर-जोर से रो रही हैं।

अब वह युवती क्या कर सकती थी? उसने एक बार अपनी दोनों बेटियों को शव वाहन में अपने साथ ले जाने का सोचा था। उसे जल्द फैसला लेना होगा; दोनों ड्राइवर उसे घूर रहे थे। विकट समय में भी एक माँ को कमजोर नहीं पड़ना चाहिए। इस भयानक रात का असर उसकी बेटियों के जीवन पर नहीं पड़ना चाहिए!

“ठीक है। मैं इन दोनों के साथ ही रहूंगा। शव वाहन हमारे पीछे-पीछे आएगा।”

अब मां और उसकी बेटियां एक वैन में थीं, जबकि शव वाहन उनके पीछे-पीछे चल रहा था। यह उसके जीवन में पहली बार था जब उसने अपने पति का चेहरा देखे बिना कोई निर्णय लिया था और अपने संकल्प पर अडिग रही थी... भला समय कब किसी को सच्चाई के सामने ला खड़ा करे!

एक घंटा बीत गया। तनु सो गई थी। मनु अपनी मां की गोद से

चिपकी रही।
“मम्मी, मुझे टॉयलेट जाना है।”
"अब?"
“मैं भी जाना चाहती हूँ।” तनु जाग उठी और बैठ गई।
उसे भी जाना पड़ा। जब उसकी दोनों बेटियों ने अनिच्छा से विनती की, तो उसने बीच की छोटी खिड़की को सरकाया और ड्राइवर से बात की।
"यदि आपको कोई सार्वजनिक शौचालय दिखाई दे तो कृपया वहां रुकें।"
"महोदया, इस सुनसान इलाके में आपको सार्वजनिक शौचालय कहां मिलेगा? आपको झाड़ियों में ही जाना पड़ेगा।"
ड्राइवर ने कार रोक दी। उनके पीछे आ रही शवयात्रा भी रुक गई। उसका पति उसके साथ भी था और नहीं भी... वही पति जो पेट्रोल पंप पर पेट्रोल भरवाते समय भी अपनी पत्नी और बेटियों से सुरक्षित दूरी बनाए रखता था।
वह अपनी बेटियों को पास की झाड़ियों में ले गई। क्या इस घने, सुनसान जंगल में जंगली जानवर होंगे? उसे कहीं पास ही रोने की आवाज़ सुनाई दी।
“मम्मा!” उसकी छोटी बेटी डर के मारे उसके करीब आ गई।
“कुछ नहीं। चलो, चलते हैं।” —वह औरत जो कभी छिपकली से भी डरती थी, अब ज़रूरत पड़ने पर शेर को भी मार सकती थी... शेर की सवारी करने वाली माँ! इस दुनिया की देखभाल

करने वाली देवी! वह हर माँ के भीतर बसने वाली माँ थी!
उसने शव वाहन में रखे शव को गौर से देखा—ओह मेरे साथी!
दोनों ड्राइवरों ने सड़क के उस पार खुले में पेशाब किया था और अब वे बीड़ी पी रहे थे।
उस समय रोना खतरनाक हो सकता था। युवा माँ ने खुद को संभालने की कोशिश की और अपनी दोनों बेटियों के साथ कार में आकर बैठ गई और दरवाज़ा बंद कर लिया। उसने ड्राइवरों को बुलाना उचित नहीं समझा और धैर्यपूर्वक इंतज़ार किया। उसकी बेटियाँ उसकी गोद में सिर रखे बैठी रहीं।
अब तुम दोनों सो जाओ।
“मम्मी, मुझे भूख लगी है।”
"मैं भी।"
जब उसकी बेटियों ने खाना मांगा, तो उसने अपना पर्स खोजना शुरू किया। उसके पास बिस्कुट का एक पैकेट, ग्लूकोज का एक पैकेट और एक लीटर पानी की बोतल थी जो अब आधी खाली हो चुकी थी।
इस यात्रा में उसने पानी की एक बूंद भी नहीं पी थी क्योंकि वह इसे अपनी बेटियों के लिए बचा रही थी। उसने अपने जीवन में कई बार अपने पति के लिए बिना पानी के उपवास किया था, तो इस बार अपनी बेटियों के लिए!
बिस्किट खाने के बाद लड़कियाँ लेट गईं। बीड़ी पीने के बाद दोनों ड्राइवर लौट आए और गाड़ियाँ फिर से चलने लगीं—माँ और

बेटियाँ आगे-आगे चल रही थीं, और उनके पति का शव उनके पीछे घिसटता हुआ जा रहा था।

...और वह आत्मा कहाँ थी, वह अंश जिसके बारे में कहा जाता था कि वह शव और उसके ईश्वर के बीच निवास करती है? जीवित और मृत सब कुछ... यह विशाल, घना जंगल... यह पूरी दुनिया—क्या सब कुछ किसी अदृश्य हाथ का खिलौना था?

गाड़ी अपनी रफ्तार से चल रही थी। उसकी बेटियाँ उसकी गोद में गहरी नींद में सो रही थीं। वह अपनी कार के पीछे आ रही शवयात्रा को देखती रही। उसे हल्की सुस्ती महसूस होने लगी। क्या यह सपना था या उसकी कल्पना? वंश आया और टिमटिमाती रोशनी में उसके बगल में बैठ गया, जिसकी झलक उसकी आँखों में दिखाई दे रही थी।

"आप?"

उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया, लेकिन...

गाड़ी झटके से रुक गई।

गाड़ियाँ क्यों रुक गईं? उसने सतर्कता से चारों ओर देखा।

यह सड़क किनारे का एक ढाबा था। ड्राइवर खाना खाने के लिए बाहर जाते थे।

“महोदया, आइए कुछ खा लीजिए।”

नहीं, मैं खाना नहीं खाना चाहता।

दूसरा ड्राइवर आगे आया और बोला, “बहनो, अभी तो पूरी रात का सफर बाकी है। आपने अस्पताल में कुछ खाया नहीं होगा;

आपकी बेटियाँ भी भूखी होंगी?”
“नहीं, हमारे पास खाना है। कृपया जाइए और खा लीजिए।”
उसने दृढ़ स्वर में बात की और वे दोनों चले गए।
ढाबे पर दो-तीन ट्रक खड़े थे। एक व्यक्ति चारपाई पर बिना शर्ट के लेटा हुआ था। चार-पाँच लोग, जो ट्रक ड्राइवरों जैसे दिखते और व्यवहार करते थे, खाना खा रहे थे। तीन लोग ढाबे का प्रबंधन कर रहे थे—खाना बनाना और परोसना, और इसके साथ वे और क्या परोसते थे? शराब?
उनमें से एक ने दोनों ड्राइवरों को बड़े ही सहज अंदाज़ में गिलास पकड़ा दिया। सरगम अपनी जगह से ठीक से सुन नहीं पाई, लेकिन दोनों ड्राइवरों ने पेय लेने से इनकार कर दिया— “आज नहीं पिएंगे। यह कोई रोज़ का काम नहीं है, यह एक धार्मिक कर्तव्य है जिसे हमने आज निभाया है।”
वह कौन सा कर्तव्य था?
क्यों? क्या मानवता ही एक धर्म नहीं थी?
वह अपनी खिड़की से उन्हें देख रही थी - इस बात को कि ड्राइवर शराब नहीं पी सकते थे।
उसने शव वाहन की ओर देखा जिसमें उसका पति सो रहा था।
शव वाहन को शांति की गाड़ी क्यों कहा जाता था?
श्मशान घाट को शांतिपूर्ण स्थल क्यों कहा जाता था?
क्या मृत्यु शांति के समान थी?
और क्या वह शांति इस बात पर निर्भर करती थी कि मृत व्यक्ति

उस अंतिम शांति को कैसे परिभाषित करता है? क्या अंत ही हर चीज का उत्तर था?

ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें; ईश्वर उनकी इच्छा के अनुसार उनके अंतिम संस्कार करें।

उसने पर्स से अपना फोन निकाला और एक नंबर डायल किया। उसके ससुराल में किसी ने भी उसका फोन नहीं उठाया।

रात के ग्यारह बज रहे थे। वे इतनी जल्दी नहीं सोए थे। उसने बार-बार फोन किया लेकिन किसी ने नहीं उठाया। उसने आखिरी बार फिर कोशिश की।

"हैलो," उसकी भाभी की आवाज में नींद झलक रही थी।

“दीदी, वह अब इस दुनिया में नहीं रहे।”

"क्या??"

“मैंने दो गाड़ियों का इंतजाम कर लिया है। मैं उन्हें उज्जैन के महाकालेश्वर ले जा रहा हूँ। आप और मोक्ष सीधे वहाँ पहुँचें। मोक्ष उनकी चिता को अग्नि देगा। यह मेरी आपसे विनम्र विनती है।”

दूसरी तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था, कोई आवाज नहीं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि कॉल दोबारा क्यों कट गई। उसके पास मोक्ष का एक और नंबर था, उनके भतीजे का। उसने उसे कॉल करने की कोशिश की, लेकिन कॉल नहीं लग पाई। उसने फोन वापस अपने पर्स में रख लिया।

“क्या तुम्हें मुक्ति तभी मिलेगी जब मोक्ष तुम्हारी चिता को

प्रज्वलित करेगा? यदि वह नहीं आता है, तो तनु को ही अपना मोक्ष समझो।”

भोजनालय से एक मनमोहक खुशबू आ रही थी। क्या इसी वजह से मनु की नींद खुली?

“मम्मी, मुझे भूख लगी है।”

उसने अपने पर्स में रखे दो बचे हुए बिस्कुट निकाले और पानी में थोड़ा ग्लूकोज मिलाकर मनु को दे दिया।

मैं इसे नहीं खाना चाहता!

"फिलहाल हमारे पास बस यही है।"

एक मां की सख्ती उसकी बेटी को भूख पर काबू पाना सिखा रही थी।

ड्राइवर वापस लौटे। उनके हाथों में एक नया पैकेट था।

“बहनो, हमने आपके लिए कुछ खाना पैक कर दिया है। कृपया मना मत करना। आपके साथ छोटे बच्चे हैं,” यह कहकर दोनों ड्राइवर झट से चले गए। क्या वे एक महिला की गरिमा, सम्मान, आदर और भय को समझते थे?

...समय और समाज कभी इतने घृणित नहीं हुए कि कोई वहां टिक न सके!

गाड़ियाँ फिर से चलने लगीं।

उसे एक अज्ञात नंबर से कॉल आया, संभवतः किसी दूसरे राज्य से। सरगम ने अनिच्छा से कॉल उठाया। उसने दूसरी तरफ अपने देवर की धीमी आवाज सुनी।

“मैंने अभी-अभी सुना! ...कृपया अंतिम संस्कार कर दीजिए! अगर हम अभी शुरू भी कर दें, तो भी समय पर नहीं पहुँच पाएँगे। मुझे मेरे छोटे भाई की अस्थियाँ दे दीजिए! ...मैंने अभी तक अम्मा को नहीं बताया है... मैं उन्हें कैसे बताऊँ? ...कि मेरा छोटा भाई गुजर गया है और फिर भी मैं ज़िंदा हूँ। ...आप देखेंगे, मैं ज़्यादा दिन तक ज़िंदा नहीं रहूँगी!”

अंतिम संस्कार का जुलूस एक अंतहीन रात की तरह चलता रहा और भोर होने से ठीक पहले महाकाल नामक छोटे से कस्बे में पहुँचा। क्या यही वह घड़ी थी जब भटकती आत्माएँ अपने घर लौटती थीं? लेकिन उसे यकीन था कि वंश ने अभी तक उसका साथ नहीं छोड़ा था। वे शांति घाट पहुँचने ही वाले थे... यह आखिरी बार था जब उसने अपने साथी के लिए खुद को संवारने का प्रयास किया। उसने अपनी साड़ी के किनारे से अपना चेहरा पोंछा।

उसकी शादी की साड़ी उसके मृत पति के खून, उसके आँसुओं और उसकी परिस्थितियों की धूल से सनी हुई थी। कल जब उसने प्यार से यह साड़ी ओढ़ी, क्या उसे पता था कि एक और दुल्हन उसके पति के लिए तैयार हो रही थी? मौत खुद—खून, आँसू और धूल के आभूषणों से सजी हुई!

दोनों कारें रुकती हैं। शांति घाट नदी के किनारे स्थित था, वह स्थान जहाँ सभी यात्राएँ आकर समाप्त होती हैं, इस संसार का अंतिम विश्राम स्थल। लेकिन उन लोगों का क्या जिन्हें ये यात्री

पीछे छोड़ जाते हैं? वे लोग जो हर मृत्यु को देखकर थोड़ा-थोड़ा मरते जाते हैं—उनके प्रियजन।

ड्राइवरों ने शव को बाहर निकाला।

“मेरे साथी! तुमने मुझे इतनी अचानक क्यों छोड़ दिया?” उसके दिल ने खामोश होकर पुकारा, लेकिन वह बिल्कुल चुपचाप देखती रही।

दोनों ड्राइवरों ने शव को चबूतरे पर रखा, वह स्थान जहाँ मृतक के साथ उसके मित्र और परिवार के सदस्य होते हैं और अंतिम संस्कार करते हैं। लेकिन इस मामले में वे कहाँ थे? फूल चढ़ाने के लिए? मिठाई फेंकने के लिए? अनाज दान करने के लिए? पत्नी ने तो बस अपने दिवंगत पति के पैर छुए—उसकी भावना ही उसकी भेंट थी!

उसने दोनों ड्राइवरों को पच्चीस हजार रुपये दिए।

“आपने हमें सुरक्षित रूप से इस स्थान तक पहुँचा दिया; मैं आप दोनों की सदा आभारी रहूँगी।” उन्होंने हाथ जोड़कर आभार व्यक्त किया।

एक ड्राइवर ने हाथ जोड़कर जवाब दिया; दूसरे ने उन्हें मिले पैसों में से एक हजार रुपये निकालकर उसे वापस दे दिए।

"हमारी सेवाओं के लिए बस इतना ही काफी है।"

दोनों ड्राइवर चले गए। युवती अपनी बेटियों को शव के पास छोड़कर श्मशान घाट पर चौकीदार की तलाश में निकल गई।

“इसके लिए आपको तीन हजार रुपये देने होंगे।” चौकीदार ने

उसे कीमत बताई।

“तीन हज़ार?” उसके पास बस इतनी ही रकम जमा थी। “ठीक है।” उसे खुद नहीं पता था कि वह क्यों मान गई। ...शायद इसलिए कि कभी-कभी ज़िंदगी चलाने के लिए सिर्फ़ पैसा ही नहीं, हिम्मत भी ज़रूरी होती है!

शव को अंतिम संस्कार के लिए सजाया गया था।

“मम्मी, मुझे बहुत भूख लगी है!”

"हां हां।"

वह अपनी बेटियों के साथ श्मशान घाट से बाहर निकली। आसपास कुछ भी नहीं था। उसने दूर एक छोटी सी अस्थायी चाय की दुकान देखी। उसे अब एक कप चाय की सख्त जरूरत थी।

दुकान पहुँचकर उसने अपनी दोनों बेटियों के लिए बिस्कुट के एक-एक पैकेट खरीदे और पानी की एक बोतल ली। उसने अपने पर्स में सिक्के ढूँढे। वह चाय नहीं पी सकती थी। उसके पर्स में सारे पैसे खत्म हो गए थे और अब उसे चिंता सता रही थी कि आगे क्या होगा, लेकिन उसने अपनी बेटियों को कुछ नहीं बताया।

वे श्मशान घाट लौट आए।

शव तैयार था। वह सोच रही थी कि वह अपने जीवनसाथी को अंतिम संस्कार की अग्नि कैसे अर्पित करेगी, उस पवित्र अग्नि को कैसे अर्पित करेगी जिसकी वह साक्षी थी। जलती हुई लकड़ी

लेकर शव के चारों ओर घूमते समय उसके कदम लड़खड़ा गए। खुद को संभालना उसके लिए मुश्किल हो रहा था। उसे लग रहा था कि वह किसी भी क्षण चीखते हुए जमीन पर गिर पड़ेगी!

...नहीं!

दो बच्चों की मां इस नाजुक घड़ी में भी हिम्मत नहीं हारी। उसकी आंखों से लगातार आंसू बह रहे थे। उसकी दोनों बेटियां थोड़ी दूरी पर खेल रही थीं। उसने उन्हें पुकारा। अपनी बेटियों को जलती हुई लकड़ी को एक बार छूने के लिए कहकर, उसने अंत में शव को अग्नि अर्पित करते हुए कहा, "अपने पिता को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करो।"

“मम्मी! पापा जल रहे हैं! कृपया उन्हें बचा लीजिए!”

तनु चीख पड़ी और रोने लगी। अपनी बहन को रोते देख मनु भी सिसकने लगी। युवा मां खुद भी रोने लगी और साथ ही अपनी बेटियों को शांत करने की कोशिश भी करने लगी।

“नहीं बेटा, तुम्हारे पापा तुम्हारे दिल में ही हैं। हमेशा वहीं रहेंगे।”

अपनी बेटियों को बहलाते-फुसलाते, दिलासा देते हुए वह एक टिन की झोपड़ी पर झुककर बैठ गई। आंसू बहाते-बहाते दोनों बेटियां उसकी गोद में सो गईं। वह जलते हुए शव को देख रही थी। उसकी आंखों में बहते आंसुओं के बीच से शव चमक रहा था।

उसे जलते हुए शव की गर्मी अपनी त्वचा पर महसूस हो रही थी। यह एक सुकून देने वाली गर्माहट थी। उसने अपनी आँखें बंद कर

लीं—उसे ऐसा लगा जैसे बर्फ के बीच किसी कोमल आग की गर्माहट ने उसे छू लिया हो। उसने अपने पति को दूसरी तरफ खड़े देखा। वह एक कोमल, चमकती लौ के रूप में उसके पास आया और उसके हाथों को अपने हाथों में ले लिया।

"उठो, देखो, यह एक उज्ज्वल, नया दिन है।"

वह स्तब्ध होकर उठ बैठी। उसका पति कहीं नहीं था। लेकिन वह जाग रही थी।

जलता हुआ शव धीरे-धीरे राख में बदल रहा था। उसने मुट्ठी भर राख उठाई और उसे अपनी साड़ी के किनारे पर बाँध लिया। यही इस दुनिया की हर चीज़ का सार था... राख।

अपने आंसू पोंछते हुए उसने अपनी बेटियों को जगाया।

“जाग जाओ! हमें बस पकड़नी है!”

“हम कहाँ जा रहे हैं, माँ?”

"अभी के लिए अपने नाना के घर चलो।"

उसने चौकीदार से कहा, "मैं कल अंतिम अवशेष ले आऊंगी।"

...और दूर, उसने अपने बूढ़े माता-पिता को उस जगह की ओर दौड़ते हुए देखा जहाँ वह खड़ी थी।

ऋतुपर्णा मुखर्जी द्वारा अनुवादित

दाहिनी आंख

उस दिन मेरी दाहिनी आँख फड़कने लगी, लेकिन मैंने इसे महज़ एक संयोग समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया। मैं कुछ भोले-भाले ग्रामीण भारतीयों के अंधविश्वासों में कभी विश्वास नहीं करती,

जिनके अनुसार स्त्री के बाएँ अंग का फड़कना शुभ होता है जबकि दाएँ अंग का फड़कना अशुभ। इसी प्रकार, पुरुषों के लिए भी यही मान्यता है कि दायाँ अंग शुभ और बायाँ अंग अशुभ। मुझे ये सब बातें बेतुकी लगीं और मैंने अपने आस-पास के लोगों के सामने अपना अविश्वास ज़ाहिर किया।

जब से मैंने अपने माता-पिता की शिक्षाओं से परे दुनिया की विशालता को जाना है, तब से मैं आत्मनिर्भर जीवन जी रही हूँ, जो मेरी माँ के पारंपरिक स्वभाव के विपरीत है, जो सांस्कृतिक रीति-रिवाजों में गहराई से रची-बसी हैं। मैंने किसी भी परंपरा, रीति-रिवाज, विश्वास या अंधविश्वास को मानने से इनकार कर दिया है। अनगिनत तीखी बहसों के बावजूद, मैं अडिग रही और निराधार मान्यताओं और अंधविश्वासों के आगे झुकने से इनकार कर दिया। यहाँ तक कि कॉलेज के दिनों में, प्रश्नोत्तर के क्रांतिकारी युग में भी, मैंने ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती दी और अपरंपरागत परिभाषाएँ प्रस्तुत कीं।

जब मेरी शादी हुई, तो सबने अनिच्छा से मुझे एक आधुनिक गृहिणी के रूप में स्वीकार किया, या शायद उनके पास मुझे स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प ही नहीं था। मेरे पति के स्वास्थ्य को लेकर अनगिनत मान्यताएं और अंधविश्वास थे, जैसे कि उनकी लंबी उम्र का संबंध कांच की चूड़ियों से, उनकी सुरक्षा का संबंध चांदी के सिक्कों की चमक से, और एक समर्पित पत्नी होने के प्रतीक के रूप में बिंदी-सिंदूर लगाना। यहां तक कि

कुछ अंधविश्वास यह भी कहते थे कि केवल सजी-धजी दुल्हन का ही वैवाहिक जीवन सुखमय होता है। मैंने इन रीति-रिवाजों का पालन, अगर कभी किया भी, तो केवल अनावश्यक झगड़ों से बचने के लिए या कभी-कभार फैशन के चलते किया। यहां तक कि गर्भावस्था के दौरान भी, मैंने अदृश्य सुरक्षा उपायों को नजरअंदाज किया और पूरी तरह से अपने स्त्री रोग विशेषज्ञ की सलाह पर भरोसा किया। मैंने कलाई पर काले कपड़े में हींग बांधने, यात्रा के दौरान चाकू और माचिस की तीलियां साथ रखने, और सुगंध और मेहंदी से परहेज करने जैसे अंधविश्वासों पर ध्यान नहीं दिया। मेरा दृढ़ विश्वास था कि अगर मैं अपना अच्छे से ख्याल रखूंगी, तो मेरा बच्चा स्वस्थ और खुशहाल रहेगा। और सचमुच, वह स्वस्थ और खुशहाल रहा!

हालांकि, मेरे खुले नास्तिक रवैये से मेरी बुजुर्ग विधवा सास बहुत दुखी हुईं। अंततः उन्होंने अपने पैतृक गांव में स्थायी रूप से बसने का फैसला किया, जहां हर कदम देवी-देवताओं, पूर्वजों और रीति-रिवाजों द्वारा निर्देशित होता है, जिससे उन्हें एक ऐसा वातावरण मिलता है जो उन्हें सुकून और सुंदरता प्रदान करता है, मानो किसी हार में जड़ा हुआ रत्न हो।

उस दिन मेरी दाहिनी आँख फड़कने लगी, पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। मेरे पति एक हफ्ते के व्यापारिक दौरे पर गए हुए थे और उसी शाम लौटने वाले थे। बारिश के मौसम के कारण मेरे पाँच साल के बेटे नैवेद्य की स्कूल की छुट्टी थी, और हम सब घर

पर साथ थे। हम सब अपनी-अपनी गतिविधियों में मग्न थे। नैवेद्य टीवी पर रामायण पर आधारित एक एनिमेटेड फिल्म देख रहा था, जबकि मैं शाम के खाने की तैयारी में चने पानी में भिगो रही थी। दिनभर की थकान के कारण मैं अपने पति के लौटने का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी, और मैंने उनका गर्मजोशी और खुशी से स्वागत करने की लगभग सारी तैयारियाँ पूरी कर ली थीं। मैंने बिस्तर पर सुंदर चित्रों से सजी एक नई रेशमी चादर बिछाई थी, और मैंने वैक्सिंग और नाखून काटने जैसे अपने निजी काम भी कर लिए थे। मैंने रात के खाने में चने बनाने की भी योजना बनाई थी।

जब मैं रसोई में खिड़की से बादलों को निहार रही थी, तभी अनायास ही मेरे होंठों से एक ग़ज़ल निकल गई:

तेरे आने की जब खबर महके,

तेरी खुशबू से सारा घर महके...

(आपके आगमन की खबर के साथ)

पूरे घर में तुम्हारी खुशबू फैली हुई है।

अचानक, मेरे मोबाइल फोन की पसंदीदा पश्चिमी रिंगटोन ने उस क्षण को भंग कर दिया।

तुम और मैं। इस खूबसूरत दुनिया में

दूसरी तरफ से मेरे पति का फोन था। हमने एक-दूसरे का हालचाल पूछा, और थोड़ी सी आत्मीयता भी व्यक्त की। उन्होंने बताया कि उनके बॉस गलती से एक ज़रूरी फाइल घर पर भूल

गए हैं, और उन्हें मुझसे उसे तुरंत उनके ऑफिस पहुंचाने की ज़रूरत है। हालांकि मुझे तुरंत हां कह देना चाहिए था, लेकिन एक पल के लिए हिचकिचाने के बाद आखिरकार मैं मान गई। मैं घर के सारे काम अकेले ही संभाल रही थी, किराने का सामान खरीदने से लेकर बिल भरने, गेहूं पीसने और लॉकर से गहने निकालने तक। मेरे पास एक चमकीली दोपहिया गाड़ी थी और एक अनुशासित ड्राइवर के रूप में मेरी अच्छी-खासी पहचान बन चुकी थी।

फोन रखते ही मैं निकलने की तैयारी में जुट गई। मैंने टाइट जींस और एक चुस्त-दुरुस्त कुर्ती पहनी और देखते ही देखते मैं तैयार हो गई। मेरे बेटे नानू को कोई आपत्ति नहीं थी। ऐसे मौकों पर हमारी पड़ोसी श्रीमती सिंह बहुत मददगार और सहयोगात्मक साबित होती थीं।

श्रीमती सिंह के बेटे और बहू इंजीनियर थे और दक्षिण के एक शहर में काम करते थे। वे संपन्न थे और उन्हें चूड़ियों, बिंदी और साड़ियों से सजी रहने वाली एक बुजुर्ग माँ की कोई ज़रूरत नहीं थी। श्रीमती सिंह की एक वयस्क बेटी भी थी जो अपने पति, बच्चों और माता-पिता के साथ विदेश में रहती थी। अब इंटरनेट पर श्रीमती सिंह की बेटी की केवल पुरानी तस्वीरें, एक मोबाइल फोन और एक वेबकैम ही मिलते थे। उनके पति श्री सिंह सेवानिवृत्त थे। जब वे सुबह-शाम लंबी सैर या हंसी-मजाक के दौरों में व्यस्त नहीं होते थे, तो वे जीवन का अर्थ खोजने के लिए

वृद्धाश्रम, अनाथालय, मंदिर या रेलवे स्टेशन जैसी जगहों पर घंटों घूमते रहते थे। वहीं, श्रीमती सिंह घर पर ही रहती थीं। उनकी थायरॉइड की समस्या उतनी गंभीर नहीं थी जितनी कि सामाजिक मेलजोल की उनकी ज़रूरत। वे अपना दिन बरामदे में अपनी नियमित कुर्सी पर बैठकर पड़ोस में होने वाली सभी गतिविधियों पर नज़र रखते हुए बिताती थीं। वे घंटों पड़ोसियों के घरों में जाती थीं, लेकिन लोग उनकी लगातार मौजूदगी से ऊब गए और उनसे बचने के बहाने ढूंढने लगे। आखिरकार, श्रीमती सिंह ने कहीं और बैठना छोड़ दिया और बालकनी में ही सिमट गईं। दोपहर से लेकर देर शाम तक, और कभी-कभी तो आधी रात तक भी, आप इस अकेली बूढ़ी औरत को गली के सुनसान अंधेरे में टकटकी लगाए देख सकते थे। सिंह परिवार न केवल खुद से बल्कि एक-दूसरे से भी ऊब चुका था, और उनकी आंतरिक उदासी ने उन्हें असाधारण रूप से मिलनसार बना दिया था। हर दिन, वे पड़ोस के सभी परिवारों के लिए खुशी का स्रोत बन जाते थे। जब भी श्रीमती सिंह किसी नदी या पहाड़ की तीर्थयात्रा पर जातीं, तो वे सभी पड़ोसियों के लिए सिंदूर, चूड़ियाँ और लोहे-तांबे की अंगूठियाँ लाना कभी नहीं भूलती थीं (उन्हें सभी के नाप याद रहते थे!)। पड़ोस के बच्चों की कलाई पर सजे चमकीले पीले, तांबे या काले मोती के कंगन किसी न किसी रूप में हरिद्वार, काशी, वैष्णो देवी और निस्संदेह, श्रीमती सिंह की ओर से उपहार थे। होली, दिवाली और करवा चौथ जैसे

अवसरों पर, मैं भी सम्मान के प्रतीक के रूप में उनके पैर छूता था। मैं उन्हें "आंटी जी" कहकर पुकारता था, और मैंने अपने बच्चे को उन्हें दादी कहने के लिए प्रोत्साहित किया। बदले में, श्रीमती सिंह ने अत्यंत कृतज्ञता के साथ मेरे बच्चे की देखभाल करने की पेशकश की, और उसे वह कोमल प्रेम और स्नेह प्रदान किया जो केवल एक दादी ही अपने बच्चों को दे सकती है। हालांकि, जब मैं नैवेद्य तैयार करके उसे श्रीमती सिंह के घर ले जाने ही वाली थी, तभी एक अप्रिय घटना ने मेरे काम में बाधा डाल दी। मेरी दाहिनी पलक अनियंत्रित रूप से कांपने लगी, जो मेरी माँ के उस अंधविश्वास का संकेत था कि ऐसी घटना अशुभ होती है, खासकर बच्चों की सुरक्षा के संबंध में।

"शायद मुझे उसे भी साथ ले जाना चाहिए, सुरक्षा के लिहाज से," मेरे भीतर से एक आवाज ने सुझाव दिया।

“बकवास! इन अंधविश्वासों में कोई शक्ति नहीं है!” एक और आवाज ने जवाब दिया।

मैंने अपने बच्चे के बालों में कंघी करना फिर से शुरू किया और उसके माथे पर एक चुंबन दिया, उसके प्यारे चेहरे को गले लगाने के लिए तैयार थी। लेकिन, एक बार फिर, मेरी पलक में धड़कन महसूस होने लगी।

धप, धप, धप!

“क्यों न मैं उसे अपने साथ ले जाऊं? इससे क्या नुकसान होगा?” आवाज में एक सूक्ष्म प्रलोभन झलक रहा था, और मैंने

नैवेद्य को साथ ले जाने का फैसला कर लिया।

बाहर, पिछली बारिश पूरी तरह से रुक चुकी थी और बादल छंट गए थे, जिससे चमकीला सूरज दिखाई दे रहा था। जैसे ही मैं अपने घर की चारदीवारी से बाहर निकला, मैंने स्कूटर स्टार्ट करने की कोशिश की, लेकिन नैवेद्य मेरी ओर दौड़ता हुआ आया और स्कूटर के ठीक सामने रुक गया। मेरी दाहिनी आंख लगातार फड़क रही थी, जिससे मन में एक चिंताजनक विचार आया—अगर स्कूटर टकरा जाए, फिसल जाए या गिर जाए तो क्या होगा? नैवेद्य, स्कूटर के रास्ते में होने के कारण, मुझसे कहीं ज़्यादा खतरे में होगा! इस कल्पना की क्रूरता ने मेरे शरीर को जकड़ लिया, जिससे मेरी पिंडलियां और कलाइयां कमजोर पड़ गईं। मैंने स्कूटर को स्टैंड पर खड़ा किया और चुपचाप अपने बच्चे को देखता रहा। मेरा मन विचारों के एक भूलभुलैया में भटक रहा था, ठीक वैसे ही जैसे कोई टेढ़ा-मेढ़ा तिल अपने सुरंगों में घूमता है। मैंने आश्चर्य से खुद से पूछा, आज मैं बच्चे को पड़ोसियों की देखभाल में क्यों नहीं छोड़ना चाहता था? इसका जवाब तुरंत मेरे भीतर से निकला, चिंताजनक विचारों में लिपटा हुआ... श्रीमती सिंह का बूढ़ा शरीर कितना भरोसेमंद था? अगर मेरा बच्चा किसी व्यस्त सड़क पर भटक जाए तो क्या होगा? ...अगर उससे गलती से कोई भारी चीज़ गिर जाए तो क्या होगा? ...अगर वह अकेले छत पर चला जाए तो क्या होगा? अनगिनत चिंताएँ मेरे मन में उमड़ने लगीं। पहली बार मुझे लगा

कि श्रीमती सिंह बच्चे को संभालने में असमर्थ हैं।
लेकिन क्या मेरे बेटे को स्कूटर के सामने खड़े होने देना वाकई सुरक्षित था?
“रुको!” मैंने महसूस किया कि उसकी पकड़ मुझ पर कस गई है, उसका चेहरा डर से भरा हुआ मेरी पीठ से सटा हुआ था। मैंने खुद को शांत और एकाग्र न रहने के लिए फटकारा। पिछले पांच से सात मिनटों में मेरी पलकें एक बार भी नहीं झपकी थीं। अपनी गति बढ़ाते हुए, मैंने खुद को संभाला और अपने बेटे से पूछा, “नानू, क्या आपको मज़ा आ रहा है?”
“हाँ, माँ! मुझे बहुत मज़ा आ रहा है!” उसने खुशी से कहा, उसकी खुशी साफ झलक रही थी।
राहत महसूस करते हुए, मैं आराम करने लगा। मोटरसाइकिलों और कारों से भरी भीड़भाड़ वाली सामान्य सड़क के बजाय, मैंने सुनसान वीआईपी सड़क को चुना, जो दोपहर के समय शांत रहती थी।
भोपाल का मौसम हमेशा की तरह सुहावना था, सूरज धुंधले बादलों के बीच डूब रहा था। युवा जोड़े झील के किनारे खड़े थे, जबकि छोटी बच्चियां अपने चेहरे दुपट्टों से ढके हुए थीं। छोटे लड़कों की आंखों में साहस, उत्साह और दृढ़ संकल्प झलक रहा था। एक-दूसरे का हाथ थामे वे सड़क के किनारे खिले हुए विभिन्न रंगों के फूलों के बीच घूम रहे थे, जो सफेद, चमकीले लाल, लाल सिंदूरी और हल्के नीले रंग के थे। झील में एक

फव्वारा आसमान को छूने की कोशिश कर रहा था, और हवा गिरती बूंदों को ऐसे बिखेर रही थी मानो कोई अदृश्य अप्सरा मोतियों से खेल रही हो। दूर से मैंने एक कयाक चालक को जलीय जीवों को पकड़ने के लिए जाल बिछाते देखा।

मेरा मन शांत था, और मैंने धीरे से अपनी कमर पर रखे अपने बेटे के हाथों को थपथपाया। उसे मेरे व्यवहार में आए बदलाव का एहसास हुआ और वह लगातार बड़बड़ाने लगा।

“मम्मी, पापा का काम कब खत्म होगा?”

"जल्द ही, मेरी जान।"

“तब हम क्या करेंगे?”

हम घर चलेंगे।

“नहीं, मम्मी, चलो भारत भवन चलते हैं,” उसने सुझाव मात्र नहीं दिया, बल्कि जोर देकर कहा।

वीआईपी रोड पर सपनों जैसी यात्रा समाप्त हुई और हम एक व्यस्त चौराहे पर पहुँच गए। उसी क्षण, मेरी दाहिनी पलक फड़कने लगी, जिससे माथे पर शिकन आ गई। मैंने अपने सामने से गुजर रही मोटरसाइकिलों और कारों को ध्यान से देखा। स्कूटर की रफ्तार बढ़ाने की तैयारी करते ही मेरा आत्मविश्वास डगमगा गया, मुझे डर था कि कहीं कोई बड़ा ट्रक अचानक आकर हमें कुचल न दे। मेरे पैर ज़मीन पर टिके रहे और मुझे एहसास हुआ कि मैं वही बन गया हूँ जिसकी मैं पहले आलोचना करता था—एक अनुभवहीन चालक जो स्कूटर चलाते समय

बार-बार अपने पैर ज़मीन पर रखता है। उन डरे हुए पलों में, मेरा व्यवहार एक नौसिखिया स्कूटर चालक से भी बदतर था। मैं कई बार आगे बढ़ा, लेकिन डर और बेचैनी के मारे पीछे हट गया। मैं वहाँ खड़ा रहा, यह सोचकर कि इस परिचित मोड़ पर, जिसे मैं अनगिनत बार पार कर चुका था, मैं कब तक तमाशा बना रहूँगा। सौभाग्य से, एक समझदार कार चालक पीछे से आया और हमें सड़क पार करने का इशारा किया। मैंने तेज़ी से स्कूटर को कार के चारों ओर घुमाया और कुछ देर तक उसके समानांतर चलने के बाद आखिरकार सड़क पार की।

घने बादलों को चीरते हुए सूरज की चिलचिलाती किरणें निकलने लगीं। कमला पार्क के पास व्यस्त सड़क पर गाड़ी चलाते हुए, चल रहे सड़क चौड़ीकरण के काम, हाल की बारिश से जमी कीचड़ और वाहनों की अराजक टक्करों के बीच ड्राइविंग की चुनौतियाँ स्पष्ट हो गईं। शनि मंदिर के पास से गुजरते हुए, मेरे मन में श्रद्धा का भाव उमड़ आया और मैंने प्रार्थना में हाथ जोड़ लिए।

“हे भगवान, हमारी रक्षा करो,” मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

हमारी स्कूटी की धीमी गति को देखकर मुझे झुंझलाहट हुई जब साइकिलों पर सवार स्कूली बच्चों का एक समूह तेज़ी से पीछे से हमें ओवरटेक कर गया। तनाव में आकर मैंने अपने बेटे को बिना किसी वाजिब कारण के दो-तीन बार डांट दिया। शायद मेरी घबराहट मेरे शब्दों में झलक रही थी, जब मैंने उसे चेतावनी देते

हुए कहा, "चुपचाप बैठ जाओ, वरना अगली बार मैं तुम्हें साथ नहीं लाऊँगी।"

बच्चे अक्सर अपनी माँ की डांट से डरते हैं, और नैवेद्य मुझसे कसकर लिपट गया। उसकी साँसें काँप रही थीं, और मुझे एहसास हुआ कि मैं अनमने ढंग से गाड़ी चला रही थी, मेरी आँखें बेचैनी से इधर-उधर घूम रही थीं, भौंहें सिकुड़ी हुई थीं, और मेरा दिमाग पूरी तरह सतर्क था।

आखिरकार हम दफ्तर पहुँच गए, और एक थकी हुई जीत जैसी राहत की अनुभूति मुझ पर छा गई। स्कूटी पार्क करने के बाद, मेरा बेटा इमारत की ओर चलने लगा, लेकिन फिर अचानक दौड़ने लगा।

“नैवेद्य!” मैंने चिल्लाकर कहा।

मेरी चीख इतनी तेज़ थी कि आस-पास के लोगों की स्वाभाविक हरकतें रुक गईं। अपनी गलती का एहसास होने पर मैं थोड़ी देर झिझकी, फिर दौड़कर अपने बेटे के पास गई और धीमी आवाज़ में उसे डांटा। उसकी सुरक्षा को लेकर गहरी चिंता से घिरी हुई, मैंने उसे अपनी बाहों में उठा लिया। सीढ़ियों पर हांफते हुए, अपने पांच साल के बेटे को कंधे से लगाए हुए, मैंने मन ही मन वादा किया कि उसके बाल का एक भी हिस्सा किसी भी तरह से सुरक्षित रहेगा। मेरा मन एक ऐसी माँ की तरह था जो अपने नवजात बछड़े की रक्षा के लिए भेड़ियों जैसे कुत्तों का भी सामना करने को तैयार हो।

हम साथ-साथ कार्यालय के सुनसान तीसरी मंजिल के गलियारे में पहुँचे। हवा एकदम शांत थी, धूल भरे वातावरण में केवल कबूतरों की गुटरगू की आवाज़ गूँज रही थी। सरकारी रंग के फीके पीले खंभे दूर-दूर तक फैले हुए थे, और अंदर जाने से पहले मैंने अपने धड़कते दिल को शांत करने, चेहरे के भावों को स्थिर करने और अपने बेटे की कलाई को मजबूती से पकड़ने के लिए कुछ पल लिए। अंदर, कार्यालय हमारे सरकारी कार्यालयों का एक विशिष्ट उदाहरण था—ग्यारह बजे तक, कुछ कर्मचारी आ चुके थे या अभी भी आ रहे थे। विशाल हॉल में अधिकांश डेस्क पुरानी फाइलों के ढेर से भरे हुए थे, जबकि घिसी-पिटी, मैली लकड़ी की कुर्सियाँ खाली पड़ी थीं। मोटी, पीली मधुमक्खियों जैसी आकृतियों से सजे छत के पंखे आलस से घूम रहे थे, जो एकरस सन्नाटे के वातावरण में योगदान दे रहे थे, जिसे केवल कार्यालय अनुशासन ही कहा जा सकता था।

अपना परिचय देते हुए मैंने फाइल एक अधिकारी जैसे दिखने वाले व्यक्ति को सौंप दी। जब वह फाइल पर काम कर रहा था, तो बीच में रुककर उसने सुझाव दिया कि मैं फाइल उसके पास ही छोड़ दूं, और मुझे आश्वासन दिया कि वह इसे स्वयं वरिष्ठ अधिकारी तक पहुंचा देगा। हालांकि, मैं वहां ऐसे खड़ी रही जैसे बहरी और गूंगी, जवाब देने में असमर्थ। क्लर्क ने मुझे अजीब तरह से देखा, अपना काम छोड़ दिया, फाइल उठाई और अपने वरिष्ठ अधिकारी के केबिन की ओर चल पड़ा। जब मैंने उसे

फाइल लेकर केबिन में प्रवेश करते देखा, तभी मुझे यकीन हुआ कि फाइल उसके वरिष्ठ अधिकारी तक सुरक्षित पहुंच जाएगी। सीढ़ियों से उतरते समय मैंने अपने बेटे की कलाई कसकर पकड़ रखी थी और पलक झपकाते हुए मैंने अपनी पलक से एक आवारा बाल निकाला और उसे दूर फेंक दिया। मैंने सुना था कि ऐसा करने से दुर्भाग्य दूर हो जाता है।

मेरा मन पहले से कहीं अधिक हल्का महसूस कर रहा था। सबसे पहले, मैंने आधा काम सुचारू रूप से पूरा कर लिया था, जिससे मुझे उपलब्धि का अहसास हुआ। दूसरे, कठिन परिस्थितियों में समय लंबा लगने लगता है, जिससे हमें उनसे निपटने के लिए स्वाभाविक रूप से तैयार होने का समय मिल जाता है। मुझे घाट की फिसलन भरी सीढ़ियों पर चढ़ते समय आवश्यक सतर्कता याद आ गई, जब हमारे पैर नदी में गीले थे। उस क्षण, मेरा मन एकाग्रता की अवस्था में था, विचलित नहीं हो रहा था। सब कुछ सावधानीपूर्वक और बारीकी से हुआ।

मैंने अपने बेटे को पीछे बैठाया, स्कूटर स्टार्ट किया और आसपास का जायजा लेते हुए सावधानी से गति बढ़ाई। ऑफिस परिसर से बाहर निकलते ही मैंने धैर्यपूर्वक एक जीप के गुजरने का इंतजार किया और फिर दूसरी सड़क पर चल दिया। वहां से हम तेजी से बाएं किनारे पर आगे बढ़े। मन में चाहे जो भी चिंता हो, मैंने खुद को आश्वस्त किया कि सब कुछ सामान्य है।

“मम्मी, पापा ने जो काम करने को कहा था, क्या वो पूरा हो

गया?” मेरे बेटे ने पूछा।

“जी हां, मेरे बेटे,” मैंने उसे आश्वस्त करते हुए उत्तर दिया।

“तो चलिए भारत भवन चलते हैं,” उन्होंने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा।

नैवेद्य को भारत भवन से गहरा लगाव था और वह अक्सर वहाँ जाने की ज़िद करता था। विशाल परिसर किसी लंबे कैनवास जैसा दिखता था, जो अलंकृत पत्थर की मूर्तियों और मिट्टी के बर्तनों की कार्यशाला की मनमोहक कलाकृतियों से सजा हुआ था। जंगली फूलों और असंख्य तितलियों से भरा शांत झील का किनारा उसकी कल्पना को मोह लेता था। वह अक्सर अपनी ड्राइंग नोटबुक और क्रेयॉन लेकर जाता था और झील, फूलों, मनमोहक तितलियों और शाम के आकाश में उड़ने वाले चमगादड़ों से प्रेरित होकर रंगीन कलाकृतियाँ बनाता था। एक मध्यमवर्गीय माँ होने के नाते, मैं अपने बेटे की इस असाधारण प्रतिभा की बहुत सराहना करती थी और उसे वहाँ ले जाने का कोई अवसर नहीं छोड़ती थी।

“नहीं नानू, आज नहीं!” मैंने विरोध किया.

“क्यों नहीं?” उसका प्रहार इतना ज़ोरदार था कि स्कूटर डगमगा गया।

भय से भर कर मैं अचानक रुक गई। वह दृढ़ निश्चयी था और मैं उस स्थिति से बचने के लिए बेताब थी। फिर भी, वह लगा रहा, जिससे मेरे पास शर्मनाक झूठ बोलने के अलावा कोई विकल्प

नहीं बचा।

“बेटा, स्कूटर में बहुत कम पेट्रोल है, बस घर तक पहुँचने लायक। अगर हम भारत भवन गए, तो रास्ते में ही पेट्रोल खत्म हो सकता है, फिर घर कैसे लौटेंगे? पापा भी शहर से बाहर हैं, और हमारी मदद करने वाला कोई नहीं होगा!”

उसकी मासूम आँखों ने मेरे परेशान चेहरे को देखकर मेरी शंका दूर कर दी, और भारी मन से मैंने स्कूटर दोबारा स्टार्ट किया। मन ही मन मैंने अपनी दाहिनी आँख को कोसा, क्योंकि मेरी अपनी असुरक्षा ने ही मेरे बच्चे को धोखा दिया था।

अब हम घर वापस जा रहे थे। लगभग हमारी ही उम्र की एक महिला कार चलाती हुई गुजरी, उसके बगल में नैवेद्य की उम्र का एक बच्चा बैठा था और वे दोनों खुशी-खुशी बातें कर रहे थे। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि भय, विश्वास और अंधविश्वास किस प्रकार प्रतिष्ठा और शक्ति से गहराई से जुड़े हुए हैं। यदि उस समय मैं किसी आलीशान कार में होता और अपनी साधारण दोपहिया गाड़ी पर आवश्यक निरंतर निगरानी से मुक्त होता, तो शायद मुझे अपनी दाहिनी आंख से जुड़े अंधविश्वास से पीड़ा न होती। ईश्वर, धर्म और अंधविश्वास कमजोरों के लिए शरणस्थल थे, जो उनके भय को छिपाने के लिए गुफाओं की तरह बने थे।

जैसे-जैसे हम अपने घर के पास पहुँचे, मेरा आत्मविश्वास धीरे-धीरे वापस आने लगा। हैंडल को पकड़े हुए मेरी कलाइयों में

ताकत बढ़ने लगी, और मैंने आत्मविश्वास से चार लेन वाले राजमार्ग को पार किया और फिर अपने मोहल्ले में मुड़ते हुए आसानी से सिग्नल और हॉर्न बजाया।

जैसे ही रात ढलने लगी, मेरे मन में एक अनोखा ख्याल आया और मेरे होंठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। मैंने अपनी स्कूटी को धीरे से रोकते हुए अपने छोटे से घर के सामने बड़े सलीके से पार्क कर दिया। बालकनी से मैंने श्रीमती सिंह को उत्सुकता से इंतज़ार करते देखा, उनके हाथों में रंग-बिरंगे गुब्बारे भरे हुए थे।

“नानू, देखो! हमने तुम्हारे लिए इतने सारे गुब्बारे फुलाए हैं! चलें चलें?” उसकी खुशी साफ झलक रही थी, और मैं भी उसकी तरह मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी।

मेरे बेटे ने जिज्ञासा से भरी आँखों से मेरी ओर देखा। उस क्षणिक पल में, उसके भीतर एक चिंगारी सी जल उठी। खुशी से भरे उसके नन्हे-मुन्ने पैर दौड़ने लगे, और उसकी हंसी पीछे-पीछे गूंज रही थी।

उनकी हंसी हवा में गूंज उठी और मैं भी अपनी हंसी रोक नहीं पाया। हालांकि मेरी दाहिनी आंख अनजाने में फड़क उठी, लेकिन यह एक मामूली सी बात थी, जो इस अनमोल पल की अपार खुशी को कम नहीं कर पाई।

अनुराधा दोसाद द्वारा अनुवादित

नायक

उस दिन जिला पंचायत में एक नए कार्यकारी अधिकारी का

आगमन हो रहा था।

कार्यालय परिसर में हर कर्मचारी अपने नए बॉस का स्वागत करने के लिए तैयार खड़ा था, हाथों में गेंदे के फूलों की मालाएँ और चेहरे पर विनम्रता भरी मुस्कान लिए। और बॉस के पहुँचने से पहले ही उनका नाम सुनाई दे गया—देवराज सिंह! एक बड़े आदमी के बेटे, उनका नाम सुनकर लगता था कि उनका परिवार बहुत समृद्ध है, और सुना था कि उनका जन्म और पालन-पोषण दिल्ली में हुआ है। इस पद पर उनका अनुभव केवल ढाई से तीन साल का था, और इस दौरान उन्होंने अपने पिछले पद पर चार अधिकारियों को निलंबित किया था। लोग कहते थे कि उन्होंने चपरासी को सिर्फ इसलिए निलंबित कर दिया था क्योंकि वह कार्यालय में सो रहा था। इसलिए, यहाँ का स्टाफ सतर्क था, अपनी नौकरी बचाने की कोशिश कर रहा था।

“नौकरी से पूरे परिवार का पेट भरता है, लेकिन इन बड़े अधिकारियों को इस बात की क्या जानकारी है!”

चपरासी रामचरित ने क्लर्क मनोहर से कहा। दूसरे दफ्तर में बेचारे चपरासी की हालत सुनकर मनोहर काफी निराश हो गया था। उसके तीन बच्चे थे और दफ्तर के बाद वह बीड़ी बनाने की फैक्ट्री में काफी देर तक काम करता था। उसकी आँखों में हमेशा थकान झलकती थी और उस दिन उसे याद आया कि उस महीने ड्यूटी के दौरान कितनी बार उसे नींद आने लगी थी। स्वाभाविक रूप से वह थोड़ा डरा हुआ था।

बाकी लोग भी घबराए हुए थे, और नए जोश के साथ इस दफ्तर में अपना काम करने की योजना बना रहे थे। इसी बीच, बॉस की जीप दफ्तर परिसर में दाखिल हुई और सबकी धड़कनें तेज़ हो गईं। जीप रुकी और बॉस, जो अपने नाम से भी कहीं अधिक प्रभावशाली थे, ने पहली बार दफ्तर परिसर में कदम रखा। लंबा, सुगठित शरीर, गोरा, शहरी चेहरा, उनके चेहरे से शेर जैसा आत्मविश्वास झलक रहा था। कर्मचारियों ने बारी-बारी से सलाम और मालाओं से उनका उचित अभिवादन किया। रामचरित आगे बढ़े और उनके पैर भी छुए, यह सोचते हुए कि कैसे इस नौकरी से उनके बड़े परिवार का गुजारा चलता है।

"खैर, यह सब ठीक है।"

औपचारिक परिचय के बाद बॉस ने बोलना शुरू किया और उन्नीस-बीस जोड़ी निगाहें, धड़कते दिलों के साथ, अपने नए शासक के दरबार में दाखिल हो गईं।

“मैं एक बात बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ, लापरवाही... अनुशासनहीनता...” इधर-उधर घूमते हुए, उन्होंने कतार में खड़े हर चेहरे को देखा। ऐसा लग रहा था मानो स्कूल से भागे हुए विद्यार्थियों की एक कतार को उनके शिक्षक के सामने घुमाया जा रहा हो।

"मानहानि... भ्रष्टाचार... राजनीति, मैं अपने कार्यालय में इनमें से कुछ भी नहीं चाहता।"

अधीनस्थ कर्मचारियों ने सहमति में सिर हिलाया, ठीक उसी तरह

जैसे बच्चे अनुभवी कहानीकारों की बुद्धिमत्ता से सहमत होते हैं। इसके अलावा, आप सभी ने मेरे काम करने के तरीके के बारे में सुना ही होगा और अगर नहीं सुना है तो..."

मुख्य अधिकारी ने अधिकारपूर्ण मुस्कान के साथ जवाब दिया।

“...अब से हम साथ मिलकर काम करेंगे।”

स्टेनोग्राफर शिल्पा ने अपने गले में पड़े दुपट्टे को नीचे खींचा। चपरासी रामचरित ने अपनी टोपी को छूकर देखा कि वह ठीक से रखी है या नहीं। मुख्य क्लर्क ने अपना रुमाल निकाला और अपने सूखे होंठ पोंछे। कंप्यूटर ऑपरेटर मुरारी सतर्क खड़ा था और क्लर्क मनोहर ने अपनी जेब में रखा मोबाइल फोन बंद कर दिया।

"यह ऑफिस का समय है और हम सभी को ऑफिस के अंदर होना चाहिए, क्या मैं सही कह रहा हूँ?"

कर्मचारी अपने युवा बॉस की रफ्तार से तालमेल बिठाने के लिए तेजी से जुट गए।

अपने टेबल पर पहुँचते ही बॉस फाइलों को पलटने लगे, उनके हाथ एक फाइल पर कुछ पल के लिए रुके और फिर काम में लग गए। अचानक घंटी बजी। कर्मचारियों के दिल ज़ोर से धड़कने लगे, चपरासी भागा; क्लर्क मनोहर को बुलाया गया था। क्या वह पहला आदेश था, पहली बार अनुपालन किया गया था?

“मनोहर, ये जिला पंचायत की इन्वेंट्री फाइलें हैं जिनमें प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के बजट का विवरण है।”

"जी श्रीमान।"
"हमारा कार्यालय इन स्कूलों को शत प्रतिशत उपस्थिति के आधार पर धनराशि आवंटित करता है।"
"हाँ।"
“हम्म” — बॉस के चेहरे पर शिकन थी — “लेकिन लगभग सभी स्कूलों में उपस्थिति लगभग सत्तर प्रतिशत के आसपास है।”
"हाँ।"
“ठीक है। जोशी जी को भेज दीजिए। मैं आपको बाद में फोन करूंगा।”
"लेकिन महोदय, कनिष्ठ महोदय चिकित्सा अवकाश पर हैं।"
“ठीक है! ठीक है, एक नोटिस तैयार कीजिए जिसमें यह लिखा हो कि स्कूलों के लिए आवंटित धनराशि अब 70% तक कम कर दी जाएगी। आदेशानुसार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला पंचायत; और मेरे हस्ताक्षर करवाने के बाद, इसे सभी संबंधित पक्षों को भेज दीजिए।”
“नहीं, महाराज!”, मनोहर ने हांफते हुए जोर से कहा।
वरिष्ठ अधिकारी ने फाइल से नज़रें उठाकर उसकी ओर देखा। उसकी पिंडलियों में दौड़ता खून एक पल के लिए जम गया, फिर दुबले-पतले, कद में छोटे, सांवले क्लर्क ने अपने सूखे होंठों को चाटा और कहा, “महोदय, इस इलाके के गाँव गरीब हैं। यहाँ कई सालों से अकाल पड़ा हुआ है। इसके अलावा, बुंदेलखंड में

भला क्या उगता है! जब से इन स्कूलों में दोपहर का भोजन शुरू हुआ है, तब से कई बच्चों की जान बच गई है, वरना वे भूख से मर जाते।"

"मैं इस योजना की खूबियों की आपकी प्रशंसा नहीं सुनना चाहता; कृपया वही करें जो आपसे करने को कहा गया है।"

"सर, मैं आपसे बस एक निवेदन कर रहा हूँ कि..." वह परिणामों के बारे में सोचते हुए बीच में ही रुक गया। खिड़की के बाहर, दोपहर की तेज़ धूप में एक अकेला पक्षी चीख रहा था।

"अपनी बात पूरी करो।"

"महोदय, निर्णय लेने से पहले, क्या आप कृपया स्कूलों का दौरा करेंगे..."

"ओह, मैं समझ गया! तो अब आप मुझे निर्णय लेना सिखाएंगे!" वरिष्ठ अधिकारी ने अपनी कोमल उंगलियों को आपस में फंसाते हुए कहा।

मनोहर चुप हो गया।

"तो, आपका तर्क यह है कि स्कूलों को 70% उपस्थिति पर 100% बजट दिया जाना चाहिए! क्या हमें शेष 30% से भ्रष्ट लोगों की विलासिता को वित्त पोषित करना जारी रखना चाहिए?"

"यह किस तरह का भ्रष्टाचार है जिसकी आप बात कर रहे हैं, महोदय?" क्लर्क ने अपने वरिष्ठ अधिकारी की आँखों में सीधे देखते हुए कहा। "माध्यमिक विद्यालयों को प्रति छात्र चार रुपये

मिलते हैं, जबकि सरकार प्राथमिक विद्यालय के प्रत्येक छात्र को केवल ढाई रुपये देती है। ज़रा सोचिए, ढाई रुपये में एक बच्चे का पेट कैसे भर सकता है? महोदय, इन विद्यालयों में 70% उपस्थिति होने के कारण 100% बजट भी अक्सर अपर्याप्त होता है। कई स्वयं सहायता समूह, शिक्षक संघ के सदस्य और प्रधानाध्यापक अपनी शिकायतें लेकर यहाँ आते हैं। जब से यह योजना हमारे जिले में शुरू हुई है, मैं इस फाइल का ध्यान रख रहा हूँ। ...महोदय, यदि आप इस बजट में कटौती करते हैं, तो यह इन बच्चों के मुँह से खाना छीनने के समान होगा। मेरा आपसे निवेदन है, कृपया ऐसा नोटिस जारी न करें, महोदय! आपने इन गरीब बच्चों की भूख नहीं देखी है!"

"और तुमने वो देखा है?" बॉस की आंखें धीरे-धीरे लाल हो रही थीं।

"जी हाँ, मैंने देखा है!" उसने सिर झुकाते हुए कहा।

एक क्लर्क अपने आईएएस वरिष्ठ अधिकारी के सामने धड़कते दिल, लड़खड़ाते पैरों और पहाड़ जैसे दृढ़ संकल्प के अलावा कुछ भी नहीं लेकर खड़ा था। ...कमजोर लोगों के लिए एक बेबस आवाज़!

"तो, आप यह कहना चाह रहे हैं कि मेरा निर्णय गलत है!"

मैं आपसे बस यही आग्रह कर रहा हूँ कि आप इस बात पर विचार करें कि कई बच्चों की भूख सीधे तौर पर आपके एक फैसले से जुड़ी है और वह कदम उठाने से पहले, आप कम से

कम स्कूलों का दौरा तो कर ही सकते हैं...!”
“बस बहुत हो गया!” बॉस खड़ा हो गया; मनोहर अपने परिवार के बारे में सोचने लगा।
या तो आप अपने व्यवहार के लिए माफी मांगें और यह नोटिस तैयार करें, या फिर...!”
बॉस एक पल के लिए रुक गया; मनोहर का दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
हम इस बारे में कल बात करेंगे।
"महोदय..."
अब आप जा सकते हैं।
मनोहर का चेहरा केबिन से निकलते ही उतर गया। वह अपनी सीट पर रोबोट की तरह बैठ गया। शिल्पा, हेड क्लर्क, मुरारी और रामचरित: सबकी आँखों में सवालों का इंद्रधनुष सा था।
“बॉस ने आपको क्यों बुलाया?”
“उसने क्या कहा?”
“तुम्हारा चेहरा क्यों उतरा हुआ है? क्या उसने तुम्हें डांटा?”
“उनका स्वभाव कैसा है?”
उन्होंने हर सवाल का अस्पष्ट जवाब दिया। क्या मनोहर को यह पहले से ही नहीं पता था कि सहकर्मी कभी दोस्त नहीं होते!
कभी-कभी वह सोचता है कि कैसे एक ही दफ्तर में दिनों, महीनों, सालों तक साथ काम करने वाले लोग सहकर्मी, प्रतिद्वंद्वी, आलोचक... कभी-कभी दुश्मन बन जाते हैं; लेकिन

सच्चे दोस्त कभी नहीं! एक बार जब ऑपरेटर मुरारी लगातार तीन दिन आधा घंटा देर से आया, तो हेड क्लर्क ने उसके खिलाफ शिकायत दर्ज करा दी। बेचारे की तनख्वाह काट ली गई, जबकि उसने अनौपचारिक रूप से मौखिक अनुमति ले रखी थी। मुरारी की पत्नी ने अभी-अभी बच्चे को जन्म दिया था और अस्पताल, घर और दफ्तर के चक्कर में वह अक्सर अपना लंच बॉक्स भूल जाता था। और यहाँ दफ्तर में लोग अपनी छुपी-छुपी बातें छुपाते थे। मुरारी ने शिकायत की कि शिल्पा अपने काम में सबसे कुशल होने के बावजूद लंबे समय तक मोबाइल फोन पर बात करती रहती है। कनिष्ठ अधिकारी ने सबसे मेहनती कर्मचारी शिल्पा को पूरे दफ्तर के सामने डांट दिया। और वही शिल्पा, जिसकी आँखों में अपनी बेइज्जती पर आँसू भर आए थे, ने वरिष्ठ अधिकारी से रामचरित के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई कि उसने पिछले दिन छत का पंखा खुला छोड़ दिया था, जो एक छोटी सी गलती थी। रामचरित उस दिन दफ्तर बंद करते समय बिजली कट जाने पर भी विरोध नहीं कर सका... और वरिष्ठ अधिकारी ने उसे बुरी तरह डांटा, उसकी आवाज उसके केबिन के बाहर तक सुनाई दे रही थी। उसके बाद दो दिनों तक रामचरित को अपना रोज़ का तंबाकू चबाते और लगातार चाय पीते नहीं देखा गया, बल्कि यही व्यक्ति दफ्तर में चुगलखोर बन गया था, कभी वरिष्ठ अधिकारी के केबिन में, कभी कनिष्ठ अधिकारी की मेज पर और कभी ठीक उसके सामने क्लर्क की

मेज पर कहानियां सुनाता था! ...फिर भी, मनोहर को दो साल पहले जिस दफ्तर में उसकी पोस्टिंग हुई थी, उससे यह दफ्तर बेहतर लगा। वहां, वरिष्ठ और कनिष्ठ अधिकारियों के बीच की राजनीति में दफ्तर के कर्मचारियों का इस तरह इस्तेमाल किया जाता था कि उसे दुष्यंत कुमार की कविता की पंक्तियाँ याद आ जाती थीं।

इस तालाब में रोहू मछली पकड़ने के लिए,
आपने छोटे-मोटे जीवों को शिकार के रूप में तितर-बितर कर दिया है।

अन्य कई लोगों की तरह, मनोहर का तबादला इसलिए हुआ था क्योंकि वरिष्ठ अधिकारी और प्रभावशाली कनिष्ठ अधिकारी के बीच चल रही इस खींचतान में वह किसी का पक्ष नहीं ले सकता था। और यद्यपि वह वरिष्ठ अधिकारी का सम्मान करता था, लेकिन उसके तबादले का प्रबंध वरिष्ठ अधिकारी ने ही किया था।

“आइए मनोहर जी, बताइए बॉस के केबिन में क्या हुआ?”

जब मनोहर ने धूर्त और खूबसूरत शिल्पा की मिन्नतों का जवाब देने से इनकार कर दिया, तो उनके सहयोगियों के दिलों में गहरी निराशा छा गई; उन्हें लगा कि वे गपशप के एक मनोरंजक अंश से वंचित रह गए हैं।

उस पूरे दिन मनोहर दुविधा में डूबा रहा, मानो उसका मन दो हिस्सों में बँट गया हो, उसकी अंतरात्मा की आवाज़ लगातार गूंज रही थी। जब भी वह बॉस के केबिन की घंटी सुनता या

रामचरित को काम में व्यस्त देखता, उसे लगता कि उसे बुलाया जा रहा है। उसके दिल की गहराइयों में एक मनोहर चिंता से कांप रहा था, और दूसरा मनोहर बरगद के पेड़ की तरह विशाल, दृढ़ और शांत था।

“सर को इतनी सारी बातें बताने का क्या फायदा? क्या आप भूल गए कि किसी वरिष्ठ अधिकारी से आगे निकलने की कोशिश में घोड़े का पीछा नहीं करना चाहिए? अब आपको नौकरी से निकाल दिया जाएगा!” उनके कमजोर दिल ने उन कामों की सूची बनाई जो उन्हें करने थे: अपने बूढ़े माता-पिता के लिए दवाइयाँ खरीदना, सोनू और मोनू की स्कूल फीस, ... अपनी पत्नी रेवती का ख्याल रखना, घर में आने वाले हर पैसे का हिसाब रखना, रोज़मर्रा के राशन का सामान!

उसका कमजोर दिल नम आँखों के साथ शांत पड़ा था। तभी, उसके मन में उसके दूसरे स्वरूप की आवाज़ गूंज उठी।

“ऐसा जीवन व्यर्थ है; अगर मैं अपना पूरा जीवन खुद को और दूसरों को खिलाने की चिंता में बिता दूं, तो इंसान और जानवर में क्या फर्क रह जाता है? अगर तुम्हारे दखल से हजारों बच्चों का पेट भरता है, तो मनोहर, तुम्हें पीछे नहीं हटना चाहिए! इस जीवन में तुम कब तक कुकर्मों को देखते और उनका समर्थन करते रहोगे?”

उसका मन उसे कई छवियों की याद दिलाता रहा:

राशन की दुकानों में घटिया चावल और मिलावटी तेल!

उसकी झुग्गी बस्ती टूटी नालियों, खस्ताहाल सड़कों, आवारा जानवरों और कचरे की दुर्गंध से भरी हुई थी!

अधिकारियों का मामूली बहाने पर भी असंवेदनशील व्यवहार!

बालक मनोहर, युवा मनोहर, वयस्क मनोहर—सभी पछतावे से ग्रस्त, अपनी आत्मा को वंचित करते हुए! क्या वृद्ध मनोहर भी वैसा ही दिखेगा?

“नहीं,” उसके होंठों से निकला। उसके सहकर्मी काम के बीच में ही उसकी ओर देखने लगे और किसी ने गौर किया कि उसका चेहरा कभी दीपक की तरह चमक उठता था तो कभी उदास। वह मानो अपने आप में खोया हुआ सा लग रहा था और अंत में किसी ने कहा,

“क्या तुम आज घर नहीं जाना चाहते? उठो, ऑफिस का समय खत्म हो गया है।”

“ओह हाँ!” वह अचंभित होकर बोला और बाहर आ गया।

शहर की बस से घर लौटते समय मनोहर ने अपनी नींद से भरी आँखें बंद कर लीं और खिड़की पर सिर टिका दिया। दिन भर की गर्मी से भरी हवा अब ठंडी हो गई थी। ठंडी हवा से मनोहर को थोड़ी राहत मिली। मनोहर को याद आया कि उसने दोपहर का भोजन नहीं किया था; उसे भूख लग रही थी; असहनीय भूख! अचानक, उसे उन अनगिनत बच्चों का ख्याल आया जो खाली पेट दोपहर के भोजन का इंतज़ार कर रहे थे। ऐसा ही एक सरकारी स्कूल उसके घर के पास था और उसने बच्चों को

भोजन के लिए कतार में खड़े देखा था—बेबसी में उनके हाथ-पैर बेचैनी से काँप रहे थे, भूख से तड़पते हुए, और भोजन करते समय उनके चेहरों पर जो आनंद था, वह बाल कृष्ण के मक्खन खाने की याद दिलाता था।

बेहद खुशी!

बाल कृष्ण!

पेट भरने वाला भोजन!

घर पहुँचते ही उसने अपने पिता को बरामदे में पलंग पर लेटे हुए पाया। वे अक्सर बीमार रहते थे। वे लगभग हर रात जागते रहते थे और जब वे सो जाते थे, तो पूरा परिवार राहत की साँस लेता था। मनोहर पलंग के पास ज़मीन पर बैठ गया। सोते हुए उसके पिता का चेहरा कितना शांत लग रहा था! अगर उसने अगले दिन अपने बॉस से माफ़ी नहीं माँगी और उसे निलंबित कर दिया गया, तो उसके पिता शायद कुछ महीनों तक सो नहीं पाएँगे। कौन जाने उनका कमज़ोर, बीमार शरीर इस चौंकाने वाली खबर को सह पाएगा या नहीं! वह घबरा गया और चुपचाप अपने पिता को देखता रहा; उसके पिता कितने संतुष्ट दिख रहे थे!

किसी को भी नहीं!

वह भारी मन से उठा। दहलीज पार करते ही उसने अपनी माँ को देखा। उसके अभ्यस्त हाथ पुराने चिथड़ों और कपड़ों से रस्सियाँ बना रहे थे, उसके चेहरे पर इस संसार के रचयिता का भाव था। उससे दूर रहना ही बेहतर था। ये सब चीजें—ऐसी रस्सियों से

बुनी हुई चटाईयाँ, बेंत के पंखे, पुराने पतलून से बने बोरे... हाँ, हर चीज इतनी सुंदर इसलिए थी क्योंकि उसकी माँ ने उसमें अपना दिल लगा दिया था।

जब मनोहर छोटा था और पढ़ाई कर रहा था, तभी से उसकी माँ के चेहरे पर थकान साफ झलकने लगी थी। उसके पिता डाकिया थे और माँ को दूसरे घरों में खाना बनाना पड़ता था, क्योंकि पढ़ाई, तीन बड़ी बहनों की शादी और इस छोटे से अपार्टमेंट के लिए लिए गए कर्ज को चुकाने की चिंता भी उन्हें सताती रहती थी। लेकिन जब मनोहर सरकारी दफ्तर में क्लर्क बन गया, तो उसकी सांसारिक माँ ने समाज से पूरी तरह किनारा कर लिया। अब वह अपना सारा समय अपने पोते-पोतियों के साथ खेलने, पति की देखभाल करने और घर को साफ-सुथरा रखने में बिताती थी, मानो किसी साध्वी की तरह शांत दिखती हो।

...क्या नौकरी छूट जाने पर भी उसकी माँ इतनी शांत रहेगी?

माँ!

उसका दिल टूट गया, और उसकी माँ, अपनी रचना में मग्न, आश्चर्य से दरवाजे की ओर देखने लगी।

“मनु! तुम कब आए? मैं तो इसमें इतना मग्न था... रुको, मैं तुम्हारे लिए थोड़ा पानी लाता हूँ।”

उनकी मां कमर पर हाथ रखकर उठने ही वाली थीं कि उनकी पत्नी रेवती ने उनके सामने एक गिलास और पानी का बर्तन रख दिया। मनोहर ने जाते हुए अपनी पत्नी पर एक नजर डाली।

रेवती के मेहनती हाथ कभी खाली नहीं रहते थे, उनके सिर पर लिपटी साड़ी का हिस्सा कभी नीचे नहीं सरकता था। उनका जीवन इस दो कमरों वाले अपार्टमेंट में इस तरह घुलमिल गया था जैसे सुगंध फूल का हिस्सा बन जाती है। और सिर्फ घर ही नहीं, वह पास के शेड में बंधी काली गाय, मुंडेर पर बैठे पक्षियों, गली के कुत्तों, मानो अन्नपूर्णा का सहारा थीं। मनोहर अक्सर सोचते थे कि वह उनकी कम तनख्वाह में सब कुछ कैसे संभालती हैं। और अगर उन्हें निलंबित कर दिया जाता, तो इस अन्नपूर्णा के हाथ खाली हो जाते।

Revati!

मनोहर ने अपनी कल्पना में रेवती के सिर पर लिपटे कपड़े के टुकड़े को फिसलते हुए देखा।

“मनु, तुम कहाँ खो गए हो? तुम्हारा चेहरा ऐसा क्यों दिख रहा है? क्या ऑफिस में कुछ हुआ है?”

"बिल्कुल नहीं!" वह बिना किसी कारण के मुस्कुराया।

फिर रेवती चाय की थाली लेकर आई। कप लेते समय जब उनकी नज़रें मिलीं तो उसने रेवती को आँख मारी। उसकी पत्नी शर्माते हुए मुस्कुराई और आगे बढ़ गई, और उसने सोचा कि अगले दिन दफ्तर में जो भी हो, फिलहाल उसके परिवार को खुश रहना चाहिए।

“पापा आ गए! पापा आ गए!”

सोनू और मोनू मोहल्ले में खेलने के बाद घर लौटे। चहचहाते हुए

उन्होंने उसे गले लगाया। सात साल का सोनू और पाँच साल का मोनू उसके बचपन की जुड़वां यादें थे। उसके जीवन के दो लक्ष्य हैं! जीने के दो मकसद!

दोनों बच्चे उनकी गोद में चढ़ गए। उनके स्पर्श से मनोहर बहुत भावुक हो गए।

सोनू!

मोनू!

"कल बॉस से माफी मांग लेना!" उसके दिल की आवाज ने कहा और उसके दूसरे रूप ने प्रतिक्रिया में बच्चों को गोद से दूर कर दिया।

वह उठा और बस्ती में घूमने निकल गया। इस इलाके में कुछ ही घरों में पक्के मकान थे और उसी की तरह वेतनभोगी आय थी। यहाँ के अधिकांश निवासी छोटे कारीगर, स्थानीय दुकानदार या मेहनती मजदूर थे। स्वाभाविक रूप से, बस्ती के आसपास के लोग उसका सम्मान करते थे, रास्ते में विनम्रतापूर्वक अभिवादन करते थे और उसे 'मनोहर बाबू' कहकर पुकारते थे। सभी का मानना था कि उसका जीवन सुखमय था।

जूतों को कसकर सिलते हुए, मोची राधेश्याम ने चौराहे पर स्थित अपनी दुकान से उसे सलाम किया और उसने बदले में केवल मुस्कुरा दिया।

अगर कल वह सरकारी कर्मचारी न रहे, तो क्या मोची राधेश्याम, धोबी मोहन, कारीगर रमेश जैसे लोग अब भी उसका इतनी

सौहार्दपूर्ण ढंग से अभिवादन करेंगे?

वह बस्ती से निकलकर मुख्य सड़क पर आ गया। उसका पड़ोसी हरिराम कुशवाहा यहाँ अपनी सब्जी की ठेली लगाता था और शाम को उसका सात वर्षीय बेटा विभोर अपने पिता के पास खड़ा होकर उनकी मदद करता था।

मनोहर पास ही की बेंच पर बैठ गया—कमजोर! थका हुआ!

“नमस्ते मनोहर बाबू! सब कैसा चल रहा है?”

हरिराम हमेशा की तरह हंसमुख लग रहा था। वह थोड़ा बेफिक्र था और अपनी ताजी हरी, पीली और बैंगनी सब्जियों पर पानी छिड़क रहा था ताकि वे और भी ताज़ी दिखें, जबकि छोटा विभोर खनकते सिक्कों से खेल रहा था।

उसी समय एक ग्राहक आ गया, जिससे मनोहर को जवाब देने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उसने विभोर को अपने पास बुलाया।

"विभोर, क्या तुम हर दिन स्कूल जाते हो?"

"हाँ।"

“आपका स्कूल आपको खाना देता है, है ना?”

“हाँ।” इस सकारात्मक उत्तर में अधिक उत्साह था।

"आज क्या खाया?"

“आज मंगलवार है, इसलिए आज हमें खीर, हलवा और पूरी मिली। और आपको पता है अंकल, मैं अम्मा से हर दिन पूछती हूँ कि मंगलवार कब आएगा क्योंकि हमारे स्कूल में हर मंगलवार को इतना स्वादिष्ट खाना मिलता है।”

बाकी के दिनों के बारे में क्या?
और बाकी दिनों में भी मैं पेट भरकर खाती हूँ—चावल, दाल, चपाती। और एक दिन तो थाली में रसगुल्ला भी था, एक बड़ा सा रसगुल्ला!
उसकी उंगलियों में काल्पनिक मिठाई थी और उसके चेहरे पर खुशी फैल गई।
"अगर स्कूल आपको भरपेट खाना देना बंद कर दे तो क्या होगा?"
बच्चे ने उसके सवाल पर डर का भाव दिखाया और दौड़कर अपने पिता को गले लगा लिया - मनोहर का संघर्ष समाप्त हो गया।
अगली सुबह, ऐसा लग रहा था मानो दफ्तर उनका इंतजार कर रहा हो। वे ठीक से बैठे भी नहीं थे कि रामचरित आकर बॉस का निर्देश सुनाने लगा।
“बॉस ने आपको बुलाया है।”
मनोहर कुछ मिनटों तक स्थिर खड़ा रहा, मानो वह अपने सामान को इकट्ठा कर रहा हो, और फिर एक-एक कदम करके आगे बढ़ा।
“मनोहर बाबू, क्या आपको कोई दिक्कत है?” रामचरित ने उनके कंधे को छूते हुए पूछा।
“अब और नहीं,” उसने ऐसी आवाज में कहा जो रामचरित ने पहले कभी नहीं सुनी थी।

उसे देखते ही बॉस की कलम फाइल पर चलना बंद हो गई।
“तो मनोहर, तुमने क्या फैसला किया है? क्या तुम कल के व्यवहार के लिए माफी मांगोगे और यह दस्तावेज तैयार करोगे या नहीं?” बॉस ने अपनी जीत के प्रति आश्वस्त स्वर में ऊँची आवाज में पूछा।
“सर, मेरी भी यही गुजारिश है, इस फैसले को लेने से पहले एक मुलाकात का मौका दीजिए...”
“क्या?” वरिष्ठ अधिकारी एक पल के लिए ऐसे चौंक गए मानो उन्होंने रात में सूरज देख लिया हो; लेकिन अगले ही पल उनके चेहरे पर दृढ़ संकल्प झलक उठा और उनकी आँखों में प्रशंसा, दया और कठोरता की चमक दिखाई दी।
"ठीक है, हम दोनों उनसे मिलने जाएंगे; लेकिन सोचिए, अगर आप सरकारी आदेश में बाधा डालते हुए पाए जाते हैं, तो आपके कार्यों की जांच की जाएगी।"
महोदय, अगर मैं दोषी नहीं पाया गया तो क्या होगा? मनोहर ने सोचा लेकिन कुछ कहा नहीं।
जब मनोहर बॉस की जीप में चला गया, तो दफ्तर में अटकलों, अनुमानों और अटकलों की बाढ़ आ गई।
“सर मनोहर को अपने साथ यात्रा पर क्यों ले गए? और अगर उन्हें किसी को साथ ले जाना था, तो मनोहर को ही क्यों?”
“मनोहर ने बॉस पर कौन सा जादू किया है कि बॉस के आने के दूसरे ही दिन वह उनका इतना चहेता बन गया है?”

“मनोहर काफी उदास है!”

“तुम्हें पता नहीं है कि बॉस कैसे काम करता है—वो तुम्हें दूध पिलाता है और फिर तुम्हें नीचे गिरा देता है। बस देखते रहो, मनोहर को ही सबसे पहले सज़ा मिलेगी। वो बहुत ज़्यादा होशियारी दिखा रहा है, है ना? हह!”

हंसी-मजाक और गपशप के घेरे से बाहर खड़े रामचरित ने चुपचाप जाती हुई जीप को देखा।

“भगवान आपका भला करे, मनोहर बाबू; मेरे बच्चे भी सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं!”

जीप चमकदार, काली सड़क पर तेज़ी से आगे बढ़ी, जिसके किनारे पेड़ों की सुरक्षा के लिए करीने से सजाए गए फूल और पौधे लगे थे। जल्द ही वे उस आकर्षक शहरी इलाके को पीछे छोड़कर कच्ची सड़क पर आ गए।

“हम किस गाँव जाएँगे मनोहर?” ड्राइवर के बगल वाली सीट से बॉस ने पीछे मुड़े बिना पूछा।

“आप जहां चाहें, महोदय!”

मनोहर की आवाज़ में मासूमियत थी और चेहरे पर गहरा भरोसा झलक रहा था, जिसे देखकर बॉस थोड़ा चिढ़ गया—वह साधारण क्लर्क! उसका सिर शेर के जबड़े में था और फिर भी...!

लेकिन वह चुप था। उसका दिल भारी था। पिछली रात उसे देर से नींद आई, वह अपने अधीनस्थ के अपमान, क्षमा और अपनी

महानता के बारे में सोचता रहा। और अब जो कुछ भी हुआ वह न केवल अप्रत्याशित था बल्कि बेहद परेशान करने वाला भी था!

‘मैंने इस क्लर्क को अभी तक निलंबित क्यों नहीं किया?’

'मैंने एक साधारण क्लर्क की बातों पर घूमने का जोखिम क्यों उठाया?'

मैं उसे क्यों बर्दाश्त कर रही हूँ? क्यों? क्यों?

वरिष्ठ अधिकारी नाराज़ नहीं लग रहे थे, बल्कि कुछ खोए-खोए से दिख रहे थे। मुड़कर उन्होंने क्लर्क का शांत चेहरा देखा।

‘क्या उसे मुझसे ज़रा भी डर नहीं लगता? ...मैं उसे सबक सिखाऊंगा!’

वरिष्ठ अधिकारी के पद से जुड़ी प्रतिष्ठा, शक्ति और गौरव के कारण देवराज का चेहरा सूर्य की किरणों में चमकती झील की तरह दमक रहा था।

कच्ची सड़क कंटीली झाड़ियों, नुकीले पत्थरों, गड्ढों और धूल के गुबार से भरी हुई थी। जीप आखिरकार एक गाँव में रुकी। एक पत्थर पर 'सनातनपुर' लिखा हुआ था। ऊंचे चबूतरे पर बैठे लोगों ने सरकारी जीप को वहाँ रुकते देख ऊपर देखा, काम कर रहे लोग उठ खड़े हुए और शहरी प्रमुख सरपंच के इतनी जल्दी पहुँचने पर आश्चर्यचकित रह गए।

शहरी लोग गाँव के तौर-तरीकों से पूरी तरह वाकिफ नहीं थे; उन्हें यह पता नहीं था कि गाँव तो बस एक विशाल, पारिवारिक बस्ती

है। विकास के मामले में गाँव भले ही शहरों से पीछे हों, लेकिन सामाजिक शिष्टाचार में वे कहीं आगे थे। ये ऐसी जगहें थीं जहाँ हर कोई एक-दूसरे को जानता था, सामाजिक और सांस्कृतिक नियमों का पालन करता था और दुश्मनों के साथ भी अच्छा व्यवहार करता था। लेकिन मनुष्य द्वारा बनाई गई सभी चीजों—मोती, रत्न, माला—में सबसे उत्तम है निर्मल, पवित्र भारतीय गाँव का जीवन!

सरपंच कुछ युवा, मध्यम आयु वर्ग और वृद्ध ग्रामीणों के साथ आगे चल रहे थे। संभ्रांत, वरिष्ठ सरकारी अधिकारी बीच में चल रहे थे और उनके पीछे सांवले, कद में छोटे और दुबले-पतले क्लर्क मनोहर चल रहे थे। गांव में स्कूल जाने वाले बच्चे कहीं नजर नहीं आ रहे थे। सनातनपुर के सबसे कुशल राजनीतिज्ञ, सरपंच के पास इस सरकारी अधिकारी को प्रभावित करने का अवसर था।

“महोदय, जब से सरकार ने दोपहर के भोजन की योजना शुरू की है, गाँव में एक भी गैरहाज़िर बच्चा नहीं दिखता! जो लड़के पढ़ाई से कतराते थे, अब नियमित रूप से स्कूल जाते हैं। इतना ही नहीं, महाराज...” अनुभवी सरपंच के चेहरे पर सुनहरे भविष्य की एक चमक थी— “जिन लड़कियों को पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी थी, उनके माता-पिता दोपहर के भोजन की उम्मीद में उन्हें फिर से स्कूल भेज रहे हैं!”

हालांकि, अधिकारी इन तथ्यों पर ध्यान नहीं दे रहा था, उसका

ध्यान अपने अनोखे अनुभव पर था। टाइलों से बने मकानों, कंक्रीट के मचानों और बरामदों के बीच, पतली सी पत्थर की सड़क आकाश में सफेद बादल की एक पतली सी पट्टी की तरह फैली हुई थी, जिसे आम तौर पर ईरावत, दिव्य हाथी का मार्ग माना जाता है। धूल भरे पेड़ों, सुलगते चूल्हों के धुएं, मवेशियों की गंध और मिट्टी की झोपड़ियों के बीच, वातावरण के हर कण में ऐसी शांति थी जो माँ की गोद की खुशबू जितनी सुकून देने वाली थी! ऐसा लग रहा था मानो यहाँ जीवन की गति ही धीमी हो गई हो।

और जो जल्दी में था, वरिष्ठ सरकारी अधिकारी, वह गाँव से होते हुए विद्यालय पहुँचा। विद्यालय के दो-तीन सरकारी कर्मचारी सरकारी रंगों से रंगे दो कमरों वाले भवन के बरामदे में स्वागत के लिए तैयार खड़े थे। इस बार वरिष्ठ अधिकारी अचंभित नहीं हुआ।

स्कूल के बाहर नीम के पेड़ की छाँव में एक युवा, संविदा पर कार्यरत महिला शिक्षिका ने ब्लैकबोर्ड पर हिंदी के अक्षर लिखे थे। उनके नन्हे विद्यार्थी स्लेट पर तरह-तरह के आकार बनाकर हिंदी वर्णमाला को समझने की कोशिश कर रहे थे।

सिंह साहब आए और युवा शिक्षक के बगल में खड़े होकर पहली कक्षा के नन्हे-मुन्ने बच्चों के ज्ञान की परीक्षा लेने लगे। फटी हुई निकर और फीकी कमीज पहने एक युवा, सांवले, गोल-मटोल लड़के ने अक्षरों का अपना ज्ञान साझा किया, जो ऋषियों के

ज्ञान से कम नहीं था।

“छोटा अ, लंबा अ, छोटा इ, लंबा इ...”

मनोहर कक्षा के पीछे खड़ा होकर जूट की चटाइयों पर कतारों में बैठे बच्चों को देख रहा था। उनके स्कूल बैग सस्ते थे, स्टेशनरी का सामान साधारण था, उनमें से ज़्यादातर ने वर्दी भी नहीं पहनी थी, और जिन्होंने पहनी भी थी, उनके कपड़े फीके, फटे-पुराने और घिसे-पिटे थे। लेकिन ये बच्चे... मनोहर सोच रहा था — “इस गरीब गाँव के ये नौजवान अपनी कठिनाइयों के बावजूद अपना भविष्य संवार रहे हैं। कौन जाने, इनमें से कोई एक छात्र डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक या देवराज सिंह जैसा आईएएस अधिकारी बन जाए। लेकिन क्या वह भी स्कूल के भोजन के बजट में कटौती का आदेश देगा? दिल्ली और सनातनपुर के आईएएस अधिकारियों में कहीं न कहीं तो अंतर होगा ही? काश सनातनपुर से भी कोई आईएएस अधिकारी हो!”

यह सोचकर मनोहर मुस्कुराया और उसी क्षण किसी ने उसे छू लिया। उसकी पैंट को पेट तक खींचते हुए, आखिरी पंक्ति में बैठे एक छात्र ने धीमी आवाज़ में कहा,

"कृपया मुझे बोतल दे दीजिए।"

मनोहर के हाथों में पानी से भरी एक पारदर्शी प्लास्टिक की बोतल थी, जिसे उन्होंने ट्रेन यात्रा के दौरान खरीदा था और जिसे उनकी समझदार पत्नी ने इस्तेमाल के बाद फेंका नहीं था।

दरअसल, वे पीने का पानी ऐसी ही बोतलों में भरकर दफ्तर लाते थे। वे अच्छी गुणवत्ता वाले थर्मस सिर्फ अपने बच्चों के लिए ही खरीदते थे।

“क्यों?” उसने धीमी आवाज में पूछा।

मेरे पास पानी की बोतल नहीं है। अम्मा मुझे कांच की बोतल में पानी देती हैं।

बच्चे की नन्ही उंगलियां उसके स्कूल बैग के बगल में रखी छोटी कांच की बोतल पर थीं।

“आह!” मनोहर के चेहरे पर क्षणिक आश्चर्य झलक रहा था, जिसके बाद वह बच्चे के बगल में कमर पर हाथ रखकर बैठ गया, उसके सिर पर हाथ फेरा, अपनी बोतल छोटी बोतल के पास रखी और सीधा खड़ा हो गया, मानो वह बच्चे को जानता ही न हो। हालांकि, छात्रों के सामने खड़े वरिष्ठ अधिकारी ने उन एक-दो पलों में जो कुछ हुआ था, वह सब देख लिया था, जबकि स्कूल के अन्य सदस्य विनम्रता से अपनी समस्याएं या व्यवस्थाएं बता रहे थे। तभी मध्यांतर की घंटी बजी। बच्चे ऐसे शोर मचाने लगे मानो वे स्तब्ध पक्षियों का झुंड हों।

इसी बीच, अधिकारी विद्यालय के पीछे गए और उस स्वयं सहायता समूह के सदस्यों से मिले जो विद्यालय के लिए दोपहर का भोजन तैयार करने का ज़िम्मा संभाल रहा था। इस समूह में तीन-चार आदिवासी महिलाएं थीं, जिनकी सस्ती साड़ियों के किनारों पर कांटे लगे हुए थे। उनमें से एक ने बताया कि जब से

उसे यह काम मिला है, उसके परिवार ने एक भी दिन भुखमरी का सामना नहीं किया है। सिंह साहब ने जोश से उनके शब्दों को याद किया... स्वयं सहायता समूहों के बारे में उनकी राय को!

उदास चेहरे के साथ वह विद्यालय लौटे और दिल्ली से आए उस सज्जन ने बुंदेलखंड में भूख के अनुशासन को देखा। सभी बच्चे चुपचाप कतार में खड़े थे, हाथों में खाली थालियाँ थीं, उनकी आँखें काउंटर पर रखे सुगंधित, ताज़े भोजन से भरी हुई थीं। एकदम सन्नाटा! इतने सारे बच्चे बिना किसी डर या डांट-फटकार के सीधे खड़े थे। जिला पंचायत के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, आईएएस अधिकारी देवराज ने इस छोटे से गाँव के विद्यालय में अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण सबक सीखा था।

कतार आगे बढ़ने लगी और यही वह उचित क्षण था जब अधिकारी अपनी अहमियत साबित कर सकता था। उसने अपने क्लर्क के निडर चेहरे को देखा और अगले ही पल, उसके ऊंचे माथे पर चिंता की लकीरें उभर आईं।

आदेश जारी किया गया कि इन बच्चों में से एक को अलग बैठाकर भोजन कराया जाए। तुरंत ही एक बच्चे को वरिष्ठ अधिकारी की कुर्सी के सामने जमीन पर बैठा दिया गया।

वह आठ साल का एक लड़का था, जिसकी आँखें धँसी हुई और गहरी थीं, छाती की हड्डियाँ मुश्किल से गिनी जा सकती थीं और सांवले रंग के कारण वह और भी गहरा दिख रहा था। उसके कपड़े गंदे नहीं थे, बल्कि अलग-अलग रंगों के धागों से जगह-

जगह सिले हुए थे। डर के मारे बच्चे की बड़ी-बड़ी आँखें और भी बड़ी लग रही थीं। उसके दुबले-पतले हाथों ने थाली के किनारों को कसकर पकड़ रखा था।

“डरिए मत। रोज़ की तरह खाना खाइए।” साहब ने कहा।

बच्चे ने खाना शुरू कर दिया। अधिकारी और क्लर्क दोनों उसकी थाली पर नज़र रखे हुए थे, जबकि बच्चा अपनी थाली छीन लिए जाने के डर से सहमा हुआ था—यह डर हर पल बढ़ता जा रहा था। तुअर दाल के पतले शोरबे में रोटी का एक छोटा टुकड़ा डुबोकर वह इतनी तेज़ी से खा रहा था कि उसका मुंह हर समय भरा रहता था और खाना जल्दी से जल्दी निगलने की कोशिश में उसकी आंखों से पानी आ रहा था।

अधिकारी ने गिनती की—

एक दो तीन चार पांच छह सात...

बच्चा अपनी सातवीं चपाती खा रहा था।

निर्णय लेने में महज एक मिनट लगा। क्लर्क को वहीं खड़ा छोड़कर वरिष्ठ अधिकारी जल्दी से चले गए; लेकिन बाहर निकलते ही उनके कदम कमजोर लगने लगे, वे पीछे मुड़कर देखने से खुद को रोक नहीं पाए।

बच्चा बची हुई डेढ़ चपाती को अपने स्कूल बैग में छिपा रहा था।

ऋतुपर्णा मुखर्जी द्वारा अनुवादित

नई कॉलोनी

जैसे पुरानी शराब को नई बोतल में बंद कर दिया गया हो, वैसे

ही भव्य प्रवेश द्वार बुरी नज़र से बचाने वाले आकर्षण से परिपूर्ण है। भारी-भरकम बैग लिए बच्चे एसी स्कूल बसों में चढ़ रहे हैं। उनकी फैशनेबल गृहिणियां, कैप्री शर्ट पहने, बच्चों को उनकी बसों तक ले जाते हुए अपने दुपट्टे संभाल रही हैं। गाड़ियां दफ्तरों और व्यवसायों की ओर जा रही हैं। पीछे की सीटों पर व्यस्त सज्जन, अपने फोन में मग्न, सलामी देते गार्डों को अनदेखा कर रहे हैं। ग्यारह, तेरह और पंद्रह साल की नौकरानियां काम पर जा रही हैं, और कॉलोनी के सुरक्षा गार्ड उन्हें छेड़ रहे हैं। आलीशान कॉलोनी के सामने, राजमार्ग के किनारे झाड़ियों पर, गुजरती गाड़ियों से उड़ती धूल के बादलों के बीच कोमल धूप खिल रही है, मानो नरम फूल हों। दूसरी ओर, उपनिवेशवादियों की मशीनें बचे हुए जंगल को एक बंजर और बंजर ज़मीन में बदल रही हैं। राजमार्ग के उस पार, दो ऊंचे बोर्ड लगे हैं: ...निर्माणाधीन ब्लू जंगल सिटी, ...नवनिर्मित ब्लू फाउंटेन सिटी।

कॉलोनी के गेट पर लगे हरे-भरे ताड़ के पेड़ों में पक्षियों की चहचाहट अचानक शांत हो गई है; बाकी सब कुछ ठीक-ठाक लग रहा है। दूसरी पंक्ति के तीसरे बंगले में, गृहिणी ने अपने दोनों बच्चों को स्कूल बस में और पति को कार में विदा करने के बाद, ऊपरी शयनकक्ष की खिड़की की चौखट पर रखे क्रिस्टल के जग में पानी भर दिया है। अब वह दो जर्मन शेफर्ड कुत्तों को उबला हुआ मांस खिला रही है। वह शांत और उदास दिखती है। भारतीय पुरुष ऐसी महिलाओं को पसंद करते हैं जो केवल देती

हैं और बदले में चुप रहती हैं। सुबह सबके चले जाने के बाद, वह बर्तन समेटती है, बिस्तर पर पड़े गीले तौलिए उठाती है, बिखरे हुए कपड़े छांटती है, सबके लौटने पर उनका स्वागत करती है और उनकी अनुपस्थिति में घर का सारा काम संभालती है... उसे जानने वाला हर कोई—पड़ोसी, रिश्तेदार या दोस्त—उसे एक आदर्श गृहिणी के रूप में याद करता है!

कैंपस कॉलोनी के बीचोंबीच, कतारों के बीच बने बगीचे और नीले-काले रास्तों के किनारे खिले छोटे-छोटे फूलों से लदे पेड़ों के बीच, प्रकृति की आवाज़ अचानक किसी अज्ञात कारण से शांत हो गई है; बाकी सब ठीक है। पहली कतार के पहले बंगले में, एक बुज़ुर्ग दंपत्ति अपने बरामदे में बैठे हैं। वे अपने बेटों से अपने नए स्मार्टफ़ोन पर इतनी ज़ोर से बात कर रहे हैं कि फ़ोन न होने पर भी, चाहे वे ऑस्ट्रेलिया में हों, नॉर्वे में हों या लंदन में, उनकी आवाज़ सुनी जा सकती है!

फ़ारसी बिल्ली रहस्यमय तरीके से रोने लगती है, जबकि उसकी बूढ़ी, अकेली, सेवानिवृत्त मालकिन, जो पार्क में पलाश के पेड़ों के नीचे जॉगिंग कर रही थी, ठीक उसके बगल में खड़ी थी। इन पेड़ों को उनकी विचित्र संरचनात्मक अनियमितताओं के कारण बचा लिया गया था। अपनी शर्तों पर पूरा जीवन बिताने के बाद, अब इस सफल महिला के पास बात करने के लिए केवल उसकी फ़ारसी बिल्ली ही बची है। अपने मोटापे से थकी हुई वह योगासन करने बैठ जाती है और आज बिल्ली को डॉक्टर के

पास ले जाने के बारे में सोच रही है।

एक युगल मकान के बाहर से कोई हवा के झोंके की तरह चुपचाप गुज़र जाता है, किसी का ध्यान उस पर नहीं जाता। इस घर में बहुत चहल-पहल है। परसों शादी करने वाली दुल्हन आज शादी के बाद की रस्मों के लिए अपने मायके लौट रही है। दामाद के स्वागत की तैयारियां बेटी की तैयारियों से कहीं ज़्यादा सख़्त हैं। पिता सुबह-सुबह फूल खरीदने निकल गए। मां ढेरों पकवान बनाने के बावजूद थकी नहीं हैं, और छोटा भाई पटाखों का डिब्बा लेकर आ रहा है... उसने अपनी बहन से कभी यह नहीं कहा कि वह उससे उतना ही प्यार करता है जितना अपनी मां से।

हवा मानो रुक गई है, मानो किसी अदृश्य शक्ति की सांसें उसमें विलीन हो गई हों, जिससे वह भारी हो गई हो; बाकी सब कुछ हमेशा की तरह ठीक-ठाक लग रहा है—सामान्य सा।

दूसरी पंक्ति के दूसरे बंगले में रहने वाली युवा माँ आज फिर देर से सोई है और ऑफिस जाने में देरी हो रही है; उसकी नौकरानी भी आज देर से आ रही है। जल्दी-जल्दी टिफिन, लैपटॉप और फाइलों को संभालते हुए, वह किसी कुशल सर्कस कलाकार की तरह कार की ओर दौड़ती है। अपनी व्यस्त दिनचर्या में वह अपनी दस महीने की बेटी को अलविदा कहना भूल गई है, जो अपनी देखभाल करने वाली की गोद में बैठी उसे देख रही है। लिव-इन रिलेशनशिप से जन्मी इस बच्ची के बेहतर पालन-पोषण

के लिए, इस युवा माँ ने कभी शादी न करने का फैसला किया है और मानती है कि एकल पालन-पोषण एक नेक रास्ता है जिसे उसने चुना है।

मानो कोई है; एक परछाई जो मानवीय शक्तियों से बेखौफ है! कुछ घटित होने वाला है, गूँजें खामोशी से चीख रही हैं; बाकी सब कुछ बस्ती में हमेशा की तरह ठीक चल रहा है। आस-पड़ोस के घरों के लड़के, अपनी वार्षिक स्कूल की छुट्टियों का आनंद लेते हुए, अपने फोन पर ऑनलाइन गेम खेल रहे हैं; उन्होंने अपनी स्नेही माँ द्वारा उनके कमरे में लाया गया नाश्ता लौटा दिया है... निजता को लेकर इतना ज़ोर है कि माता-पिता भी अपने बच्चों के पास अत्यंत सावधानी से जाते हैं।

यहां का जीवन तात्कालिकताओं में इतना डूबा हुआ है कि प्रकृति की छठी इंद्री कुंद हो गई है। सहज ज्ञान से कुछ भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता। सुरक्षा के भ्रम में जी रहे लोग लापरवाही से अपने दैनिक कार्य कर रहे हैं।

कॉलोनी के मुख्य द्वार पर तैनात गार्ड, एक परिचित मेहमान को आती हुई लंबी कार में दबी हुई मुस्कान के साथ अभिवादन कर रहे हैं। हर दिन की तरह, आलीशान कॉलोनी अपनी समृद्धि में व्यस्त प्रतीत होती है।

अब...

एक सजे-धजे डुप्लेक्स के ड्राइंग रूम में, एक ग्यारह साल की नौकरानी वैक्यूम क्लीनर चला रही है। सोफे के कोने पर एक

भरा हुआ हिरण सजा है; उसके पीछे एक तेंदुआ है। सफाई जारी रखने से पहले, एक पल के लिए लड़की तेंदुए को छूने के बारे में सोचती है—क्या यह नया सजावटी सामान सचमुच एक खिलौना है या एक लाश या लाश से बना खिलौना? छोटी लड़की उस सजीव दिखने वाले खिलौने से खेलना चाहती है, लेकिन उसकी माँ उसे समझाती है कि मालिक के घर में ऐसी चीजों से आकर्षित न हो!

“अरे! ये तो बिल्कुल असली जैसा लग रहा है!” जैसे ही वो वैक्यूम क्लीनर लेकर खिलौने की तरफ बढ़ी, उसे वो और भी असली लगने लगा... और देखते ही देखते खिलौना ऐसे झुक गया मानो हमला करने की तैयारी कर रहा हो, और तभी उसे एहसास हुआ कि ये खिलौना असल में एक जंगली तेंदुआ है! एक पल के लिए डर से लड़की का खून जम गया और फिर, अपनी जान बचाने की सहज प्रवृत्ति के चलते, वो बाहर भाग गई।

“तेंदुआ!! एक तेंदुआ!! मदद करो! घर में एक तेंदुआ है!”... उसकी माँ ने उसे सिखाया था कि अगर मुसीबत में पड़ जाओ तो भागने की कोशिश करो; चीखने की कोशिश करो। लड़की की चीखें शांत और संभ्रांत बस्ती में गूंज उठीं।

“अंदर तेंदुआ है! अंदर तेंदुआ है!! तेंदुआ है!!” चौंककर लोग ज़मीन पर गिर पड़े। सबके हाथ में फ़ोन था, लेकिन किसी को भी यह एहसास नहीं था कि उन्हें इसका इस्तेमाल करना है। सब

चीखने की आवाज़ की दिशा में दौड़ पड़े।
लड़की भागने लगती है। डुप्लेक्स के बाहर भीड़ जमा हो रही है, और बुजुर्ग दंपति ऊपरी मंजिल पर फंसे हुए हैं; तेंदुआ नीचे की मंजिल पर ही होगा। दूर खड़े लोग इस समस्या से निपटने के तरीकों पर चर्चा कर रहे हैं।
"कोई 100 नंबर डायल करो।"
नहीं, पुलिस को नहीं; वन विभाग को बुलाइए।
"कोई उनके बच्चों को फोन करे।"
“लंदन, है ना?”
नहीं, नॉर्वे!
तीन सफल बेटों के माता-पिता, बुजुर्ग दंपति, यह तय नहीं कर पा रहे थे कि किसे फोन करें, इसलिए घबराहट में उन्होंने अपना नया फोन आपस में एक-दूसरे को दे दिया और फोन उनके हाथ से छूट गया, जो बालकनी से गिरकर जोर से चकनाचूर हो गया।
नहीं, सबसे बड़ा वाला ऑस्ट्रेलिया में रहता है!
“न लंदन! न नॉर्वे! न ऑस्ट्रेलिया! भूतल पर बैठा तेंदुआ और पहली मंजिल की बालकनी पर बैठा बुजुर्ग दंपत्ति ही इस समय एकमात्र सत्य हैं।”
अलार्म बजे से लगभग पाँच से दस मिनट बीत चुके हैं और अभी तक किसी ने भी तेंदुए को नहीं देखा है, इसलिए हर पल अलार्म झूठा लगता जा रहा है। कोई कह रहा है कि ये बेचारे लोग ध्यान आकर्षित करने के लिए हत्या तक कर सकते हैं!

खैर, पहरेदारों को आगे भेजा जाता है। तीनों हिम्मत जुटाकर दरवाजे से झांकते हैं। तेंदुआ कहीं दिखाई नहीं देता।

हम अंदर नहीं जाएंगे।

"तब तुम यहां क्यों हो?"

“बिल्डर साहब ने हमें आपको सलाम करने, भिखारियों और विक्रेताओं को रोकने और खतरनाक जानवरों को न पकड़ने के लिए कहा था।” —पिछले महीने शहर में आया अनुभवहीन युवा गार्ड पीछे हट जाता है।

"क्या आपको पता है कि आपको काम पर रखने के लिए हमें समाज के भरण-पोषण के लिए कितना पैसा देना पड़ेगा?"

“सर, हमारी बंदूकें असली नहीं हैं—ये तो एयरगन हैं!”

"क्या???"

लोग चौंक गए हैं। अब तक तो उनकी जान और माल इन अप्रशिक्षित, चिड़ियों का शिकार करने वाले बंदूकधारियों के हाथों में सुरक्षित थे!

"हे हे हे!"

दुल्हन के भाई ने ड्राइंग रूम में एक जलता हुआ पटाखा फेंक दिया। भीड़ में दहशत दौड़ गई... तभी अंदर से तेंदुआ निकला!

“पूरा एक तेंदुआ!!”

उनके बीच एक बेकाबू, जंगली तेंदुए को देखकर लोग दंग रह जाते हैं। घर से बाहर निकलकर वह भीड़ की ओर छलांग लगाता है... भयभीत लोग अफरा-तफरी में एक-दूसरे से टकराते हैं,

लड़खड़ाते और गिरते हैं।

एक आदमी ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके सिर पर जानवर का एक पंजा था और जब पंजा उठा, तो उसने उसके गंजे सिर पर खरोंचें छोड़ दीं, मानो खून से कोई भविष्यवाणी लिखी हो... जब वह जानवर दूसरी दिशा में भागा, तो उसने एक मोटे पेट वाले अस्थमा के मरीज़ को ठोकर मार दी, जिससे उसे अस्थमा का दौरा पड़ गया। उसका हमेशा साथ रहने वाला नेबुलाइज़र कहाँ है? उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसकी साँस उसके शरीर से निकल रही हो! इससे पहले कि तेंदुआ उसे मार डाले, जानवर की मौजूदगी ही दिल का दौरा पड़ने के लिए काफी थी! फिर भी, एक महिला तेंदुए से बचने की अपनी बेताब कोशिश में उससे उलझ गई और इतनी ज़ोर से चीखी कि आसमान काँप जाए, इससे तेंदुआ और भी आक्रामक हो गया... किसी ने कहीं से एक बर्तन फेंका, और तेंदुआ, जो उस बूढ़ी, ढीली गर्दन को फाड़ने ही वाला था, अपना जबड़ा छुड़ा लिया। वह बस्ती, जहाँ पहले कभी किसी को ज़ोर से बोलते नहीं सुना गया था, अब निवासियों की चीखों से गूँज रही थी। घायल और स्वस्थ लोग भाग-दौड़ कर रहे थे, लेकिन ठीक से बच नहीं पा रहे थे। उन सभी सुव्यवस्थित, एक साथ कई काम करने वाले लोगों ने कभी मौत से सीधे सामना करने के बारे में सोचा ही नहीं! ...जब मौत मंडरा रही होती है, तब दुर्भाग्यवश अकेली पालतू जानवर की मालकिन अपनी फ़ारसी बिल्ली को बेसब्री से ढूंढ रही होती है, लेकिन वह

कहीं नहीं मिलती।

अब, फूलों के छोटे गमलों, गलियों या छोटी घास के मैदानों से घिरा हुआ तेंदुआ पूरी तरह से दिशाहीन हो गया है - न तो उसे अपना जंगल मिल रहा है और न ही अपनी गुफा!

...गुफ़ा??

वह एक बिना ताले वाले डुप्लेक्स में प्रवेश करता है।

“बच्चा अंदर है! बच्चा अंदर है!!”

घर में काम करने वाली नौकरानी चीख रही है। शोर सुनकर वह दरवाजा बंद किए बिना ही बाहर आ गई। तीन महीने की बच्ची अपने पालने में शांति से सो रही है।

पूरी तरह से घबराई हुई वह अपने मालिक को फोन करने की कोशिश करती रहती है। अकेली माँ अपने महत्वपूर्ण विदेशी ग्राहकों के सामने एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति देने में व्यस्त है, और सही प्रभाव डालने के लिए उसने अपने सभी कौशल का भरपूर इस्तेमाल किया है। पानी पीने के बहाने वह अपने फोन पर नजर डालती है और सीसीटीवी फुटेज में देखती है कि उसका बच्चा पालने में शांति से सो रहा है, और फिर से अपनी नौकरानी का फोन काट देती है।

एक तेरह वर्षीय लड़का अपने दोस्त को स्मार्टफोन देकर अपार्टमेंट में भागा, सोशल मीडिया पर लाइव-स्ट्रीम के ज़रिए बहादुरी दिखाकर हीरो बनने की चाहत में। तीन मिनट बाद, बच्चे को गोद में उठाकर वह बाहर आया। लोग तालियाँ बजाने लगे।

दोस्त उससे पूछता है, "क्या तुम्हें वहां तेंदुआ देखने को मिला?"
“तेंदुआ?? क्या अंदर तेंदुआ था? मुझे लगा बच्चा आग में फंस गया है।” दोस्त ने लाइव वीडियो बंद कर दिया।
जब सब लोग जानवर की तरफ ध्यान दे रहे थे, तभी अकेली पालतू बिल्ली की मालकिन को अपनी पर्शियन बिल्ली छोटे गमलों के पीछे मिली। बिल्ली कितनी डरी हुई थी! मालकिन, अपने भारी शरीर को संभाल न पाने के कारण, ज़मीन पर गिर पड़ी और बिल्ली को कसकर अपनी छाती से लगा लिया। बिल्ली की गर्माहट दिल तक पहुँच गई... उस दिल तक जो धड़कना बंद कर चुका था? ...जबकि दूर से कोई एम्बुलेंस को बुला रहा था; मालकिन, बिल्ली को गले लगाए हुए, बेहोश हो गई।
किसी ने अपार्टमेंट का दरवाजा जल्दी से बंद कर दिया। थोड़ी देर बाद, तेंदुआ ऊपर की बालकनी से पास की दूसरी बालकनी पर कूद गया।
अब तेंदुआ प्रेमी जोड़े के सामने आ गया है। एक पल के लिए ऐसा लगता है मानो गृहिणी का पति उनके सामने खड़ा हो। तेंदुए के डर से ज़्यादा, नीचे से आ रही सामूहिक आवाज़ें इस जोड़े को परेशान कर रही हैं; ऐसा लग रहा है मानो लोग उनके घर के सामने जमा हो रहे हों!
बालकनी में जानवर के अचानक आने से ठीक पहले, अपने प्रेमी की बाहों में सुरक्षित महसूस कर रही प्रेमिका अचानक असुरक्षित

महसूस करने लगती है और उसे अपने गुप्त प्रेमी की बजाय तेंदुआ ज़्यादा अच्छा साथी लगता है। अब न तो वे भाग सकते हैं, न ही कपड़े पहनने का समय! ...और इससे पहले कि तेंदुआ कुछ कर पाता, गृहिणी इधर-उधर देखती है और पानी से भरा एक कांच का जग उठाकर फेंक देती है।

बेचारा घुसपैठिया घबराकर बालकनी से कूद जाता है या गिर जाता है; बाड़ के अंदर दो बिना जंजीर वाले जर्मन शेफर्ड कुत्तों के बीच जा गिरता है। लंबे, मजबूत, भेड़ियों जैसे दिखने वाले ये कुत्ते, जो अपनी पूरी जिंदगी में कभी किसी से नहीं डरे, घुसपैठियों पर हमला करने के लिए प्रशिक्षित थे और सिर्फ मांस खाकर पाले गए थे। ...और दूसरी तरफ, जंगल से आया एक जंगली तेंदुआ उनके सामने खड़ा है! शिकारी कुत्तों की दोनों जोड़ियाँ मिलकर जंगल के उस शानदार शिकारी पर हमला कर देती हैं, जो इस समय लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं है। एक तरफ सबसे अच्छी तरह से प्रशिक्षित जोड़ी है, और दूसरी तरफ प्रकृति माँ द्वारा जंगल में पाला-पोसा गया प्रतिभाशाली तेंदुआ—एक क्रूर पिता से कम नहीं! जब तीनों खूनी संघर्ष में उलझे हुए थे, दूर खड़ी भीड़ में से कई लोगों ने डब्ल्यूडब्ल्यूई और एनिमल चैनलों के बाहर पहली बार असली हिंसा देखी। कुछ लोग अत्यधिक उत्तेजना में अग्निशमन विभाग, पुलिस, वन विभाग, टीवी चैनलों—जिससे भी वे संपर्क कर सकते थे, को फोन कर देते हैं। लोग मदद के लिए बेताब होकर चिल्ला रहे थे।

परिसर के बच्चे, जो इस तमाशे को देखने के लिए दौड़कर आए थे, अब उनकी माताओं द्वारा उन्हें वहां से हटाया जा रहा है।

पांचवें डुप्लेक्स के मालिक के आते ही, कुछ लोगों का ध्यान तेंदुए से हट जाता है। कॉलोनी में सबसे आकर्षक और फैशनेबल चेहरे वाली, ओह, बिना मेकअप और घरेलू कपड़ों में वह कितनी साधारण और कुछ उम्रदराज दिखती है! ...दूरियां जादू पैदा करती हैं; नज़दीकी अक्सर इतनी खूबसूरत साबित नहीं होती। यहां तक कि सबसे बुजुर्ग निवासी भी आ गए हैं। लोगों ने उन्हें महीनों बाद देखा है। जीवन एक ऐसे अखाड़े जैसा लगता है जहां सवारी कर चुके लोग बस नीचे गिरने का इंतजार कर रहे हैं! ...कॉलोनी का चेहरा वहां रहने वाले सभी लोगों के लिए समान रूप से आकर्षक और उदासीन है।

भयंकर संघर्ष के बाद, खून से लथपथ तेंदुआ एक विश्व चैंपियन पहलवान की तरह खड़ा हो जाता है! शिकार करने वाले कुत्तों को अधमरा छोड़कर वह सीमा पार कर जाता है। छोटे-छोटे गमलों के बीच से गुजरते हुए, तेंदुआ परिसर के बीचोंबीच हरी-भरी अमेरिकी घास पर बैठ जाता है। तेंदुए को पकड़ने के लिए बचाव दल को फोन करने वाले लोग फोन पर जोर-जोर से रोते हैं, जिससे अधिकारी तुरंत मौके पर पहुँच जाते हैं और लगातार फोन करते रहते हैं।

राजमार्ग की धूल और धुएं से गुज़रते हुए, हरे-भरे ताड़ के पेड़ों के पक्षियों को डराते हुए, अपनी उपस्थिति से फ़ारसी बिल्ली को

व्याकुल करते हुए, प्रकृति में रोमांच भरते हुए, हवा की तरह दौड़ते हुए और गूंज में अपनी उपस्थिति का एहसास कराते हुए, इतनी दूर आ चुका तेंदुआ अब शांति से बैठा है। उसके शरीर के नीचे की ज़मीन ज़ख्मों से बहते खून को सोख रही है; वही ज़मीन जिस पर कभी एक पतली नदी, 'नील झरना', बहती थी। अब, उस समय के केवल दो पलाश के पेड़ ही निशानी के रूप में बचे हैं।

और...

तेंदुआ अपने घर लौटने का रास्ता याद करता है, नदी से पानी पीना, इन पेड़ों के नीचे से गुज़रना, जंगल की ओर वापस जाने का रास्ता! तेंदुआ दौड़ता है। उछलता-कूदता, कॉलोनी पार करता है, भव्य द्वार, उस पर बनी भव्यता, राजमार्ग पार करता है, नील जंगल के पेड़ों को काटती मशीनों को अपनी छलांगों से पार करता है, और जंगल के शेष भाग में विलीन हो जाता है। कॉलोनी में हलचल शांत हो जाती है, और कौन जाने जंगल में आगे क्या होता है!

प्रितेश चक्रवर्ती द्वारा अनुवादित

लेखक

इंदिरा डांगी (जन्म 1980) हिंदी साहित्य की एक प्रसिद्ध उपन्यासकार, कथाकार और नाटककार हैं। उन्होंने अपने लेखन करियर के मात्र 10 वर्षों में चार उपन्यास और 50 से अधिक लघु कथाएँ हिंदी में प्रकाशित की हैं। उन्हें अपनी कहानी संग्रह

—150 प्रेमिकाएं और अन्य कहानियां—के लिए भारत का प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार-2015 प्राप्त हुआ। उन्होंने भारत में नौ अन्य प्रतिष्ठित राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक पुरस्कार भी जीते हैं। उनके नाटकों का मंचन अमेरिका, नेपाल और अन्य देशों में किया जाता है। उनकी उपन्यास रचनाओं का नेपाली, अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। वे एक सक्रिय प्रोफेसर और शोधकर्ता भी हैं, जो लोकप्रिय व्याख्यानों और सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में साहित्य और मानवता के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित हैं। वे मध्य प्रदेश राज्य के भोपाल में रहती और काम करती हैं।

अनुवादकों

रितुपर्णा मुखर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के अंतर्गत जोगमाया देवी कॉलेज में अंग्रेजी और संचार अध्ययन पढ़ाती हैं। वर्तमान में वे IIIT भुवनेश्वर से पश्चिम अफ्रीकी और अफ्रीकी-प्रवासी साहित्य में लैंगिक गतिशीलता विषय में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर रही हैं। वे एक प्रकाशित कवयित्री, लघु कथा लेखिका और एक उत्साही अनुवादक हैं। उनकी रचनाएँ कई प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। वे बंगाली और हिंदी कथाओं का अंग्रेजी में अनुवाद करती हैं और 'द एंटोनिम मैगज़ीन' में संपादक हैं। अपने कार्य और शोध के अतिरिक्त, वे एक ईएलटी प्रशिक्षक, सलाहकार, ईएसएल लेखिका और

अकादमिक संपादक भी हैं।

अनुराधा दोसाद कोलकाता के आदमस विश्वविद्यालय में एक कुशल शोधार्थी हैं, जहाँ वे अंग्रेजी विभाग में कॉमिक पुस्तकों में समलैंगिक विषयों के चित्रण का अध्ययन कर रही हैं। अंग्रेजी और शिक्षा में दोहरी स्नातकोत्तर डिग्री के साथ, वे अपने शोध में बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाती हैं। अकादमिक जगत से परे भी उनका विद्वतापूर्ण योगदान है; उन्होंने रूटलेज जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में अध्याय लिखे हैं, साथ ही विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी योगदान दिया है।

डॉ. प्रितेश चक्रवर्ती, पश्चिम बंगाल, भारत के आचार्य सुकुमार सेन महाविद्यालय में अंग्रेजी के सहायक प्रोफेसर हैं। वे स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, बारासात में पीएचडी के पर्यवेक्षक हैं। वे 2018 से 2019 तक न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में फुलब्राइट स्कॉलरशिप के तहत विदेशी भाषा शिक्षण सहायक (हिंदी) रह चुके हैं। उन्होंने पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल, भारत से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एमफिल की डिग्री हासिल की है। वे बैटमैन और भारतीय कॉमिक्स पर शोध कर रहे हैं। उन्हें रचनात्मक लेखन में रुचि है और उन्होंने किंडल डायरेक्ट पब्लिशिंग में एक लंबी कहानी प्रकाशित की है। उन्होंने कॉमिक पुस्तकों के लिए कुछ स्क्रिप्ट भी लिखी हैं (प्रकाशन की प्रतीक्षा में)। उन्होंने

जर्नल ऑफ ग्राफिक नॉवेल्स एंड कॉमिक्स (टेलर एंड फ्रांसिस) सहित कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित किए हैं, पुस्तकों में अध्याय लिखे हैं और भारत और विदेश में कई सेमिनारों और सम्मेलनों में भाग लिया है।

प्रेरक शब्द
विलोम संग्रहों का एक प्रकाशन
अमेरिका | भारत

द एंटोनिम कलेक्शंस द्वारा प्रकाशित
151, डी.एच. रोड, कोलकाता - 700104, भारत
theantonymmag.com
मूविंग वर्ड्स द्वारा प्रकाशित, विलोम शब्द संग्रह 2023
कॉपीराइट © इंदिरा डांगी 2023
अनुवाद © ऋतुपर्णा मुखर्जी, अनुराधा दोसाद, डॉ. प्रीतेश चक्रवर्ती 2023
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जा सकता है।
ईआईएसबीएन: 978-81-981886-0-1
यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, संगठन, स्थान, घटनाएँ और प्रसंग या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त किए गए हैं। अन्यथा, किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से कोई भी समानता केवल संयोगवश है।
सोहम गुहा द्वारा टाइपसेट किया गया
कवर © Canva.com